जेम्स एलेन की डायरी

अथवा

दैनिक ध्यान

लेखक

जेम्स एलेन

अनुवादक

केदारनाथ गुप्त, एम० ए०

प्रिंसिपल, अग्रवाल विद्यालय कालेज, प्रयाग

प्रकाशक

छात्रहितकारी पुस्तकमाला

दारागंज, प्रयाग।

प्रथम संस्करण] १९५३ [मूल्य २)

प्रकाशक
श्री केदारनाथ गुप्त, एम० ए०
छात्रहितकारी पुस्तकमाला,
दारागंज, प्रयाग

मुद्रक
सरयू प्रसाद पांडेय 'विशारद'
नागरी प्रेस, दारागंज
प्रयाग।

निवेदन

जेम्स एलेन एक पहुँचे हुए योरोपीय महात्मा थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखकर नवयुवकों के नैतिक उत्थान में बहुत बड़ा भाग लिया है। उनकी पुस्तकों में से 'डायरी' का एक विशिष्ट स्थान है। उनकी धर्मपत्नी का कहना है कि एलेन महोदय प्रातःकाल कई घंटे ईश्वर का ध्यान करके जब पूजा गृह से बाहर निकलते थे तो वह अपने दैनिक विचार नित्य लिख लिया करते थे। ३६६ दिन तक उन्होंने अपने विचारों को नियम से लिखा। इस प्रकार यह डायरी तैयार हुई जिसे 'दैनिक ध्यान' भी कहते हैं। उसमें निम्नलिखित विचारों की प्रधानता है :—

१—ईश्वर अमर है, शाश्वत है, अनादि है और अनन्त है।

२—वह सम्पूर्ण जगत् के प्रत्येक कण में व्याप्त है।

३—सारे जगत् का काम एक ईश्वरीय विधान से चल रहा है जिसमें कभी परिवर्तन नहीं होता।

४—मनुष्य की आत्मा ईश्वर का ही अंश है। जिस प्रकार समुद्र के एक बूँद पानी में, जो उससे अलग हो जाता है, समुद्र के ही गुण होते हैं, उसी प्रकार आत्मा में भी ईश्वर से अलग होकर भी उसी के गुण हैं। जिस प्रकार प्राकृतिक नियम द्वारा पानी की बूँद समुद्र में विलीन हो जाती है उसी प्रकार मनुष्य की आत्मा भी घूम फिर कर, प्राकृतिक नियम द्वारा, उसी ईश्वर में विलीन हो जाती है।

५—जब मनुष्य इस शरीर को ही सब कुछ नहीं समझता, जब वह भूख और प्यास को अपने वश में कर लेता है, जब वह अपनी इच्छाओं को शुद्ध कर लेता है और जब उसका मन

चंचलता को छोड़कर शान्त हो जाता है तब उसको ईश्वर के दर्शन होते हैं।

६—जो प्रेममय जीवन व्यतीत करता है उसी को सुख और शान्ति मिलती है।

७—जहाँ प्रेम है वहाँ धर्म है और वहीं ईश्वर है।

८—जिसे प्रेम का ज्ञान हो जाता है उसे संसार की कोई भी शक्ति हानि नहीं पहुँचा सकती।

९—पहले अपना सुधार करो और तब दूसरों का।

१०—स्वार्थ छोड़कर पहले अपने भाइयों के स्वार्थ की परवाह करो।

११—मनुष्य जब विषयों से ऊब जाता है तब ऊँची चीजों की इच्छा करता है।

१२—अपने मन को ऊँचे स्तर पर ले जाकर मनुष्य ईश्वर हो सकता है।

✓१३—दुख और सुख कहीं बाहर से नहीं आते। ये तो हमारे हृदय और मन में ही रहते हैं।

✓१४—जिसको अपने हृदय में शान्ति नहीं मिलती उसे कहीं भी शान्ति नहीं मिल सकती।

✓१५—पराजय से मनुष्य को घबड़ाना नहीं चाहिये। उससे बड़प्पन आता है।

१६—सच्चा सुख प्राप्त करने के लिये यह जरूरी है कि हम बुरे विचारों को मन में न आने दें।

✓१७—तुमको केवल काम करने का अधिकार है, फल का नहीं

१८—वह पुरुष धन्य है जो न तो दूसरों का जी दुखाता है और न उनको हानि पहुँचाता है।

१९—सुख मन के भीतर है, वह धन अथवा संसार की अन्य वस्तुओं में नहीं है।

२०—संसार के जितने कार्य हैं, सब धैर्य से होते हैं।

२१—हमें निराश कभी नहीं होना चाहिए। यदि आज हमारे खराब दिन हैं तो कल अच्छे दिन अवश्य आवेंगे।

२२—सचाई से चरित्र की जाँच करो और तुम में जो बुराइयाँ हैं उन्हें दूर करो। ये तुम्हारी पैदा की हुई हैं।

२३—मनुष्य जैसा विचार करता है, वैसा ही बन जाता है।

२४—दुख के कारणों को हम अच्छी तरह समझें और उन्हें दूर करें।

२५—संसार के सारे कुकर्म हमारे अज्ञान से उत्पन्न होते हैं।

२६—जो अपने को जीत लेता है वह संसार को जीत लेता है।

२७—यदि तुम विजयिनी शक्ति प्राप्त करना चाहते हो तो एकान्त में रहने का अभ्यास करो।

२८—सबसे प्रेम करना ईश्वर की आज्ञा है। जिसके हृदय में प्रेम है वह सब पर शासन करता है।

२९—छोटी-छोटी चीजों की ओर ध्यान न देने से बड़ी-बड़ी चीजों में गड़बड़ी हो जाती है।

३०—किसी काम में जल्दबाजी न करनी चाहिए।

३१—जगत् की असली चीज 'सत्य' है।

३२—प्रलोभनों में मनुष्य को कभी न पड़ना चाहिए।

३३—एक बार जब तुम 'विश्व प्रेम' रस को चख लोगे तो तुम्हारी सारी कमजोरियाँ दूर हो जायँगी।

३४—जिस प्रकार शरीर के हित के लिये सोने की जरूरत है उसी प्रकार मनुष्य की आत्मिक उन्नति के लिए एकान्त की जरूरत है।

३५—ऊँचे विचार, ऊँची वाणी और ऊँचे कामों के द्वारा ही मनुष्य अपने जीवन को ऊँचा बना सकता है।

३६—मनुष्य अपने विचारों और कामों से अपने भाग्य का निर्माण करता है।

३७ मनुष्य जब दूसरा जन्म लेता है तो वह अपने कामों के मीठे और कड़वे फलों को साथ ले आता है।

३८—मनुष्य अपना उद्धार अपने आप करता है।

३९—जो अपनी जीभ पर अधिकार रखता है वह मँजे हुए बुद्धिमान वकील से कहीं बढ़ा है। जो मन को जीत लेता है वह कई राष्ट्रों के राष्ट्रपति से कहीं अधिक शक्तिशाली है।

४०—अपने ऊपर ईश्वर की महान् कृपा समझनी चाहिए कि वह हमें बुरे कामों के लिए दण्ड देता है और अच्छे कामों के लिये इनाम। यदि हमें बुरे कामों का दण्ड न मिले तो हम आये दिन भगवान् का न तो स्मरण करें और न उनकी शरण में जायें। वास्तव में ईश्वरीय नियम न्याय और दया से पूर्ण है।

४१—अपने ऊपर पूर्ण विजय प्राप्त करने से ही वास्तविक शान्ति मिल सकती है।

४२—मनुष्य का सच्चा धर्म प्रेम है। उसे किसी सम्प्रदाय का दास बनकर नहीं रहना चाहिए।

४३—वर्तमान में काम करो। भूत और भविष्य की परवाह न करो।

४४—केवल 'सत्य' बोलो। विषैले साँप की तरह चुगली से दूर रहो। जो दूसरों की चुगली करता है उसे कभी शान्ति नहीं मिलती।

४५—न कभी क्रोध करो और न किसी को बुरा भला कहो। क्रोध को शान्ति से, तिरस्कार को धैर्य से और घृणा को प्रेम से जीतो।

४६—तुम्हारे बन्धन और मोक्ष का कारण तुम्हारा मन ही है।

४७—संसार को 'त्याग' का पाठ पढ़ना चाहिए। इस पाठ

को सन्तों, सिद्धों और और उद्धारकों ने पढ़ा है और उसी के अनुसार उन्होंने जीवन भर काम किया है

४८—जो शान्ति हमें इन्द्रियों के भोग से मिलती है वह क्षण स्थायी है। मन की शान्ति ही वास्तविक शान्ति है।

४९—मनुष्य यदि सच्चा सुख और सच्ची शान्ति चाहता है तो वह इन्द्रियों को अपने वश में करे। प्रत्येक विचार, प्रत्येक भावना और प्रत्येक इच्छा पर उसका अधिकार होना चाहिये। इससे बढ़कर शान्ति प्राप्त करने का कोई दूसरा उपाय नहीं है।

५०—इन्द्रियों के वश में रहना ही गुलामी है और उनको वश में रखना ही स्वतंत्रता है।

५१—सुशील और सुशिक्षित मनुष्य साधारण वस्त्र पहनते हैं और गहनों तथा कपड़ों का रुपया बचाकर अपने पढ़ने-लिखने और धर्म के कामों में लगाते हैं। वे शिक्षा और आत्मोन्नति को गहने और कपड़ों से अधिक आवश्यक समझते हैं।

५२—मनुष्य को प्रातःकाल उठकर भगवान् का ध्यान करना चाहिये।

५३—जिस प्रकार पानी का बुलबुला देर तक नहीं ठहरता उसी प्रकार छल भी बहुत समय तक नहीं चल सकता।

५४—ईमानदार मनुष्य को हमेशा सफलता मिलती है। उसे पछताने और दुख उठाने की कभी नौबत नहीं आती।

५५—जो अपनी स्त्री को गाली देता है, बच्चों को मारता-पीटता है, नौकर को बुरा भला कहता है और पड़ोसियों को हानि पहुँचाता है वह दीन और दुखी मनुष्यों से किस प्रकार प्रेम कर सकता है जो कि उसके प्रभाव के बाहर होते हैं।

५६—प्रत्येक मनुष्य को नम्र होना चाहिये। नम्रता दैवी गुण है।

५७—वास्तव में हम जो कुछ हैं उसी रूप में हमें रहना चाहिये।

५८—यदि तुम्हें स्थायी पूर्ण शान्ति प्राप्त करने की इच्छा है तो 'ध्यान' की शरण लो। ध्यान करने के लिये सब से उत्तम समय प्रातःकाल का है।

५९—ध्यान करने से तुम्हें आध्यात्मिक शक्ति मिलती है।

६०—हमारा वर्तमान हमारे विचारों से ही बना है।

६१—विचारों की शक्ति से अनभिज्ञ होने के कारण तुम अपने को परिस्थितियों का दास मानते हो।

६२ मनुष्य कार्य करने के लिये स्वतंत्र है। अच्छा और बुरा काम करना उसके हाथ में है किन्तु एक बार जब उसने कोई काम शुरू कर दिया तो उसके परिणाम को वह बदल नहीं सकता, वह उसके हाथ में नहीं है।

६३—अपनी इच्छा शक्ति को अभ्यास द्वारा प्रबल बनाओ।

६४—आपत्तियों के बीच जो हमेशा प्रसन्न रहता है वह वास्तव में महात्मा है। वही बुद्धिमान् और सच्चा पुरुष है।

६५—जो संसार की नश्वर चीजों से अपना नाता तोड़ चुका है और जागरूक अवस्था को प्राप्त कर चुका है जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होता, वही मनुष्य अमर है।

६६—ईमानदार मनुष्य के हृदय में चुगली और निन्दा का कोई असर नहीं पड़ता। वह न तो कभी बदला लेने का विचार करता है और न अपनी सफाई के लिये यहाँ वहाँ जाता है। उसका सरलता और ईमानदारी ही कवच बनकर उसकी रक्षा करती है।

६७—'विश्वास' एक अमूल्य गुण है। उससे चरित्र का निर्माण होता है।

६८—तुम स्वयं मन में अपने विचार लाते हो अतएव अपने

जीवन को बनाने वाले तुम स्वय हो। वास्तव में विचार ही मनुष्य को बनाता और वही उसको बिगाड़ता है।

६९—अपने अहंकार को दूर करो।

७०—ईश्वरीय विधान को जानना ही ज्ञान है। यदि मनुष्य उत्सुक हो तो वह इस विधान को जान सकता है।

७१—सच्चा शूरवीर वह है जो गृहस्थी में रहता हुआ भी मन को वश में रखता है।

७२—संसार में रह कर भी न रहना सब से बड़ा ज्ञान है।

दुःख अज्ञान जनित है। उस अज्ञान का नाश करना ही सुख है। इसी को ही मोक्ष कहते हैं। अज्ञान का नाश ज्ञान से होता है और ज्ञान यही है कि हम यह जानें कि संसार क्या है और हम कौन हैं? एलेन महोदय ने अपनी डायरी में इस विषय का प्रतिपादन बहुत ही गम्भीरता पूर्वक किया है। अतएव इस डायरी को मोक्षशास्त्र कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी।

इस डायरी की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। विलायत में लोग इस पुस्तक का उसी प्रकार मान करते हैं जिस प्रकार हिन्दू गीता का, मुसलमान कुरान शरीफ का और ईसाई इंजील का।

एलेन महोदय ने अपनी डायरी में जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डाला है। इस ससार में मनुष्य को सुख और शान्ति से साथ किस प्रकार रहना चाहिए, इसका बहुत ही अच्छा विवेचन उन्होंने किया है। आजकल संसार में चारों ओर अशान्ति ही अशान्ति दिखलाई पड़ रही है। ऐसे बहुत ही कम लोग मिलेंगे जो सुखी और शान्त हों। यदि मनुष्य वास्तव में सुख और शान्ति चाहता है तो वह उस डायरी को बार बार पढ़े और मनन करे तथा तदनुकूल बर्ताव करे।

हमने इस डायरी के आवश्यक अंश का अनुवाद करके प्रयाग के दैनिक पत्र 'भारत' के सुयोग्य सम्पादक के पास प्रका-

शनार्थ भेजा था। उस अंश को पढ़कर वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उत्तर में लिखा "हम थोड़ा अंश नहीं पूरी डायरी प्रति सप्ताह क्रमशः प्रकाशित करेंगे।" उन्होंने ऐसा किया भी। जब यह डायरी 'भारत' में प्रकाशित होने लगी तो पाठकों ने पत्र लिखकर भी भारत-सम्पादक की सूझ बूझ की बड़ी प्रशंसा की और मेरे पास भी कई पत्र प्रशंसा के आये।

मैंने अनुवाद स्वच्छन्दतापूर्वक किया है। प्रयत्न इस बात का भी किया गया है कि अंगरेजी पुस्तक के सब भाव हिन्दी में आजायें और भाषा में भी उतना ही ज़ोर रहे, जितना अँगरेज़ी में है।

मैं 'भारत' के यशस्वी सम्पादक श्री शङ्कर दयालु श्रीवास्तव का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने 'डायरी' को लगभग १ मास तक भारत में प्रति सप्ताह दो बार प्रकाशित करके एलेन महोदय के उत्कृष्ट विचारों को भारतवर्ष की हिन्दी भाषा-भाषी जनता के समक्ष पहुँचाया है। मैं हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक और 'बालसखा' के सुयोग्य सम्पादक पं० लक्ष्मी प्रसाद जी पाण्डेय का भी अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने डायरी को आद्योपान्त पढ़कर भाषा का परिमार्जन किया है।

छात्र-हितकारी पुस्तकमाला दारागंज प्रयाग ने जेम्स एलेन की कई पुस्तकें हिन्दी में प्रकाशित की हैं उनका हिन्दी संसार में काफ़ी प्रचार हो रहा है। आशा है, उनकी अन्य पुस्तकों की तरह इस 'डायरी' का भी काफ़ी प्रचार होगा और उसे पढ़कर लोग इस भौतिक युग में भी ईश्वरवादी बनकर पूर्ण सुख और शान्ति का अनुभव करेंगे।

अग्रवाल विद्यालय
इन्टर कालेज प्रयाग
ज्येष्ठ एकादशी सम्वत् २०१०

केदारनाथ गुप्त
प्रिन्सिपल

जेम्स एलेन की डायरी

अथवा

दैनिक ध्यान

जनवरी १

असंयमी पुरुष बड़ी उत्सुकता से दूसरों का सुधार करना चाहता है, किन्तु बुद्धिमान पुरुष पहले अपना सुधार करता है। यदि कोई संसार का सुधार करना चाहता है तो उसे सब से पहले अपना सुधार करना चाहिये। इन्द्रियों को वश में कर लेने से ही अपना सुधार नहीं हो जाता, यह तो सुधार की पहली सीढ़ी है। मनुष्य का पूर्ण सुधार उस समय होता है जब वह अपने कुत्सित विचारों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लेता है और अपने स्वार्थ को भुला देता है। सदाचार और बुद्धि के अभाव के कारण ही मनुष्य का सुधार नहीं हो पाता। इस कमी को उसे तुरन्त दूर करना चाहिये।

उत्सुकता के परों के सहारे मनुष्य पृथ्वी से उड़ कर आकाश में पहुँच सकता है और मूर्ख से बुद्धिमान हो सकता है। उत्सुकता के कारण ही वह अंधेरे से उजाले में आता है। बिना उत्सुकता के वह जीवन भर मूर्ख और अशांत बना रहता है।

जनवरी २

जो हमारे आवश्यक कर्तव्य हैं उन्हें हमें पहले करना चाहिए। यदि तुम्हारे सामने खेल और काम आवे तो पहले काम करो और पीछे खेलो। इसी प्रकार विलासिता को छोड़कर पहले अपना निश्चित काम करो और अपने स्वार्थ को छोड़कर अपने भाइयों के स्वार्थ का ध्यान पहले रक्खो। यह एक ऐसा नियम है जिसके अनुसार चलकर तुम अपने जीवन-पथ में कभी भटक नहीं सकते। जो पहलवान शुरू से ही दाँव पेंच के साथ कुश्ती नहीं लड़ता वह हार जाता है और जो व्यापारी ईमानदारी और परिश्रम के साथ पहले से ही अपना व्यापार शुरू नहीं करता वह आगे चलकर हानि उठाता है। इसी प्रकार जो साधक शुरू से ही सचाई के साथ ठीक-ठीक साधना नहीं करता उसे अपने भगवत-प्राप्ति के उद्देश्य में निराश होना पड़ता है। हमें उचित है कि हम जीवन के प्रारंभ से ही अच्छे-अच्छे विचार मन में लायें, खरी सचाई से काम लें, निःस्वार्थ भाव से सेवा करें, अपना उद्देश्य ऊँचा रक्खें और अपने अन्तःकरण को शुद्ध बनावें। यदि इस प्रकार हम अपने जीवन का आरंभ करेंगे तो संसार की सब चीजें हमको आप से आप मिलती रहेंगी और हमारा जीवन ऊँचा, सुन्दर, सफल और शांत होगा।

जनवरी ३

जब तक मनुष्य विषय-भोग में पड़ा रहता है तब तक वह ऊँचे जीवन की इच्छा नहीं करता। वह कुछ समय तक विषय और भोग को ही सुख मानता है और उन्हीं में आनन्द लेता रहता है। किन्तु जब उनसे उसका जी भर जाता है और उसे दुःख होने लगता है तब वह ऊँची चीजों की इच्छा करता है। कहने का तात्पर्य यह कि जब उस संसार के भोगों में आनन्द नहीं मिलता तब वह ईश्वर की ओर मन लगाता है और वहाँ उसे सच्चा सुख मिलता है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि

जब वह भोगों से ऊब जाता है तभी वह उन्हें छोड़कर अपने जीवन को पवित्र बनाने का प्रयत्न करता है। मनुष्य को जब विषय-वासना से घृणा हो जाती है और जब वह इस बात का पश्चात्ताप करता है कि अरे मैं अभी तक अपनी मूर्खता से कैसा बुरा काम कर रहा था तभी वह ईश्वर को पा सकता है, अन्यथा नहीं।

उत्सुक साधक को ही सच्ची शांति मिलती है और उसे ही ईश्वर के दर्शन होते हैं, बात यह है कि वह शांति के मार्ग में आगे ही बढ़ता जाय, पीछे न हटे और मन को लगातार ईश्वर के ध्यान से पवित्र करता रहे।

जनवरी ४

मनुष्य में जितनी अधिक उत्सुकता होती है उतनी ही अधिक सफलता उसे मिलती है। उसकी सफलता का मापदंड उसकी उत्सुकता ही है। किसी वस्तु में मन को दृढ़ता से लगाना उसको पहले से प्राप्त कर लेना ही है। जिस प्रकार मनुष्य खराब से खराब चीजों का अनुभव करता है और उन्हें फिर जान लेता है उसी प्रकार मनुष्य अच्छी से अच्छी बातों का भी अनुभव कर सकता है और फिर उन्हें जान सकता है। जिस प्रकार वह मनुष्य हुआ है उसी प्रकार वह देवता भी हो सकता है। जरूरत केवल इस बात की है कि वह अपने मन को ऊँचे स्तर पर ले जाकर ईश्वर की ओर लगा दे।

जिस प्रकार सोचने वाले के बुरे-बुरे विचारों का परिणाम अपवित्रता है, उसी प्रकार पवित्रता भी सोचने वाले के अच्छे-अच्छे विचारों का ही फल है। कोई किसी दूसरे के लिए नहीं सोचा करता। मनुष्य स्वयं अपने को अपने विचारों द्वारा ही पवित्र या अपवित्र बनाता है। जिसमें उन्नति करने की उत्सुकता है वह ईश्वरीय मार्ग को अपने सामने देखता है और उसका हृदय पहले से ही शान्ति का अनुभव करता है।

जनवरी ५

स्वर्ग का दरवाजा हमेशा सब के लिये खुला रहता है। यदि मनुष्य इसके भीतर नहीं घुस पाता तो केवल अपने ही कर्मों से। कोई भी उसके भीतर उस समय तक नहीं आ पाता जब तक वह नारकीय विषयों में फँसा रहता है और नाना प्रकार के पापाचार करता रहता है।

संसार के प्रायः सभी लोग नाना प्रकार के विषयों में फँसे हुए हैं और अनेक प्रकार के कष्ट भोग रहे हैं। किन्तु इस नारकीय जीवन के ऊपर भी एक विशाल स्वर्गीय जीवन है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी बुराइयों पर विजय प्राप्त कर सकता है। वह स्वर्गीय जीवन बहुत ही सुखद, ऊंचा उठाने वाला और शांति देने वाला होता है। उसे कोई भी प्राप्त कर सकता है और उसी के अनुसार वह अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। जो इस प्रकार का जीवन व्यतीत करता है वह किसी प्रलोभन में नहीं फंसता और संसार की चाहे जितनी मुसीबतें आ कर घेर लें किन्तु वह उनसे जरा भी नहीं घबड़ाता।

जनवरी ६

जिस प्रकार एक कुशल और तेज व्यापारी मुसीबतों से नहीं घबड़ाता, प्रत्युत अपनी सूझ-बूझ से उन्हें दूर कर देता है उसी प्रकार साधक भी प्रलोभनों के जाल में नहीं फंसता, प्रत्युत विवेक द्वारा वह उनसे बचने के लिये अपने मन को सुदृढ़ बनाता रहता है। प्रलोभन का शैतान कमजोरियों को ढूंढ-ढूंढ कर एकाएक आक्रमण करता है। मनुष्य गम्भीरता से प्रलोभन के उद्गम-स्थान को पहचान ले, उस पर विचार कर और फिर उसे दूर करे। प्रलोभन की जानकारी प्राप्त किये बिना मनुष्य उसे दूर नहीं कर सकता। स्मरण रक्खो, मनुष्य की दुर्बलता और उसकी भूल से प्रलोभन उसके पास आता है और जब वह ध्यान तथा आत्मज्ञान से उसको भलीभाँति समझ लेता है तब प्रलोभन दूर कर भाग जाता है।

मनुष्य यदि 'सत्य' को जानना चाहता है तो उसे अपने को जानना चाहिये; आत्मसंयम की कुञ्जी आत्मज्ञान है।

जनवरी ७

जब हम ऊपर चढ़ते हैं तो नीचे की चीजें पीछे छोड़ते जाते हैं। नीचे की चीजों का त्याग करने से ही हमें ऊपर की चीजें मिलती हैं। बुराई को छोड़ने से ही हमें भलाई मिलती है। अज्ञान को छोड़ने से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। प्रत्येक लाभ के लिये हमें एक एक पाई मूल्य चुकाना पड़ता है। प्रत्येक जीवधारी में कुछ न कुछ ईश्वरीय शक्ति होती ही है जिसे मनुष्य, ऊपर उठते समय, नीचे छोड़ता जाता है। उसके स्थान में उसे एक अधिक प्रभावशाली ईश्वरीय शक्ति मिलती है। इसलिये पुरानी गलत आदतों में पड़े रहने से मनुष्य को क्या लाभ हो सकता है? उससे तो उसको हानि ही होती है। जब हमारे मन में स्वार्थ की जगह त्याग की भावना उत्पन्न होती है तब देवदूत हमें ज्ञान और बुद्धि की पहाड़ी पर ले जाने के लिये तैयार खड़े रहते हैं।

जिसने अपनी आत्मिक उन्नति कर ली है उसे हमेशा चौकन्ना रहना चाहिए ताकि फिर नीचे न गिरने पावे। छोटी-छोटी बातों में भी उसे सावधान होने की जरूरत है किले की तरह उसे अपने को मजबूत बनाने की जरूरत है, जिससे कि फिर कोई पाप उसके भीतर न आ सके।

जनवरी ८

इस जीवन में काम करने की स्फूर्ति हमें अपने हृदय से मिलती है। दुख और सुख कहीं बाहर से नहीं आते। वे तो हमारे हृदय और मन में ही रहते हैं। जितने काम हम इस शरीर से करते हैं उन्हें हमारे हृदय और मन से ही शक्ति मिलती है।

जो मनुष्य अपनी भूलों और कमजोरियों को प्रकट नहीं करता, प्रत्युत उन्हें छिपाने की कोशिश करता है, वह 'सत्य' के दिव्य मार्ग पर नहीं चल सकता उसमें वह शक्ति नहीं रहती जिसके द्वारा वह प्रलोभनों का सामना करके उनको अपने वश में कर सके। जो अपनी ओछी प्रवृत्तियों का बहादुरी के साथ सामना नहीं कर सकता वह त्याग के खुरदरे टीले पर चढ़ नहीं सकता।

जनवरी ६

किसी काम में यदि तुम्हारी पराजय हो जाय तो निराश मत होना। पराजय से ही तुम में बड़प्पन आता है और तुम्हें एक निर्मल बुद्धि मिलती है। यह बड़प्पन और बुद्धि तुम्हें कोई दूसरा गुरू नहीं दे सकता। यदि तुम बुद्धिमानी से विचार करो तो तुम्हें मालूम होगा कि तुम्हारी हर एक भूल में, और तुम्हारी हर एक पराजय में तुम्हें एक बड़ा ही अमूल्य उपदेश मिलता है। जो अपनी हर पराजय में अपना लाभ देखता है वह कभी निराश नहीं होता और हरेक आपत्ति का सामना बहादुरी के साथ करता है। उसकी असफलताएँ ही उसे परदार घोड़े की तरह अपनी पीठ पर चढ़ाकर सफलता की अंतिम शानदार चोटी पर पहुँचा देती हैं।

मूर्ख लोग अपनी भूलों और अपने पापों का दोषारोपण दूसरों पर करते हैं किन्तु सच्चाई के रास्ते पर चलने वाला मनुष्य अपनी भूलों और अपने पापों के लिये अपने ही को दोषी ठहराता है। मनुष्य को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि उसके सारे कामों की जिम्मेदारी उसी पर है दूसरों पर नहीं।

जनवरी १०

पुरानी चीज के हटा लेने पर ही उसके स्थान में नई चीज रख सकोगे। पुराने मोपड़े को गिरा देने पर ही उसकी जगह नया महल बना सकोगे। पुरानी भूलों को दूर कर देने पर ही नये 'सत्य' का प्रकाश पा सकोगे। वर्तमान शरीर के नष्ट हो जाने पर ही दूसरा नया शरीर मिलेगा। उसी प्रकार जब तुम काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या और अहंकार को छोड़ दोगे तब इनके स्थान पर तुम में इनके विरुद्ध गुण आ जायँगे। अपने पापी और दुखी जीवन को नष्ट कर दो तो तुम्हें धार्मिक और सुखी जीवन मिलेगा। उस समय तुम्हारे आचरण में जो महापन और बुढ़ापा दिखलाई देता था उसके स्थान पर सुन्दरता और ताजगी दिखलाई पड़ेगी।

इस प्रकार के विचार उत्पन्न होने से ही तुम्हें स्वर्ग का राज्य मिलेगा जो आत्मा का चिरन्तन निवासस्थान है और जहाँ से मनुष्य को हर प्रकार का स्थायी सुख मिला करता है।

जनवरी ११

लोग इधर उधर के कुछ सुधारों को ही सब कुछ समझ कर उन्हीं के पीछे लगे रहते हैं। वे यह नहीं समझते कि ये सुधार तो जीवन को सफल बनाने के ऊपरी साधन हैं।

वास्तविक सुधार तो भीतर से होता है। इसमें हृदय और मन को बिल्कुल बदल देना पड़ता है। सुधार के लिये शुरू में कुछ भोजन छोड़ देना पड़ता है, कुछ पेय पदार्थों से परहेज करना पड़ता है और कुछ खराब पुरानी आदतों को तिलांजली देनी पड़ती है, किन्तु इतने ही से हमारा जीवन सुधर नहीं सकता। हमको इससे भी अधिक कड़ाई अपने ऊपर करनी पड़ती है। हम पहले अपने हृदय और मन को शुद्ध करें और फिर बुद्धि का सुधारें। जीवन के सुधार के लिये सब से अधिक आवश्यकता हृदय को शुद्ध करने की है; क्योंकि हृदय शुद्ध हो जाने से मन और बुद्धि अपने आप शुद्ध हो जाते हैं।

जनवरी १२

दिन बड़े होते जा रहे हैं। प्रतिदिन सूर्य कुछ ऊपर चढ़ रहा है और सायंकाल के समय रोशनी कुछ अधिक देर तक रुकने लगी है। इसी प्रकार प्रतिदिन हम भी अपने चरित्र को ऊँचा कर सकते हैं। हम अपने हृदय को प्रतिदिन 'सत्य' की रोशनी की ओर कुछ अधिक खोल सकते हैं और 'सत्य' के सूर्य की रोशनी को अपने मन में भर सकते हैं। वास्तव में सूर्य ज्यों का त्यों रहता है। पृथ्वी उसकी ओर घूमती है और उससे उत्तरोत्तर लाभ उठाती है। यही हाल 'सत्य' और 'नेकी' का है। 'सत्य' और 'नेकी' नहीं घटती। जब हम उनकी ओर खिंचते हैं तो उनसे हमको अधिक मात्रा में रोशनी और शक्ति मिलती है।

जिस प्रकार कोई कारीगर प्रतिदिन अपने यन्त्रों के अभ्यास से चीजों को तैयार करने का कौशल प्राप्त कर लेता है उसी प्रकार प्रतिदिन 'सत्य' का अभ्यास करते-करते तुम भी अच्छे-अच्छे काम करने का अभ्यास बढ़ा सकते हो।

जनवरी १३

समय के गर्भ से प्रतिदिन का एक नया जन्म होता है जिसमें नये काम शुरू होते हैं, नई घटनायें घटित होती हैं और नई सफलतायें मिलती हैं। समय ने नक्षत्रों को अपने मार्ग में घूमते हुए देखा है किंतु उसने आज का दिन नहीं देखा। इस दिन का तो नया-नया जन्म हुआ है। यह दिन एक नये जीवन की, एक नये संगठन की, एक नये समाज की ओर एक नये युग की घोषणा करता है। इससे लोगों को आशा का संदेश मिलता है और काम करने के लिए नये अवसर प्राप्त होते हैं। इस दिन तुम एक नये व्यक्ति हो सकते हो। इस दिन तुम्हारी पुरानी आदतें छूट सकती हैं और तुम्हारा एक प्रकार से नया जन्म हो सकता है। इस दिन तुम चाहो तो तुम्हारे सब दुख और दारिद्र्य दूर हो सकते हैं और तुम नये शक्तिशाली और आदर्शवादी पुरुष हो सकते हो।

मन और शरीर को शुद्ध रखो। इन्द्रियजन्य भोगों को त्याग दो। मन से स्वार्थ को निकाल दो और पवित्रता का जीवन व्यतीत करो।

जनवरी १४

लगातार बहुत दिनों तक तैयारी करने के अनन्तर इसको विजय-लक्ष्मी मिलती है। जैसे फूल और पहाड़ आप से आप नहीं पैदा होते उसी प्रकार विजय भी आपसे आप नहीं मिलती। जैसे फूल और पहाड़ की उत्पत्ति एक विशेष वैज्ञानिक नियम से होती है उसी प्रकार विजय प्राप्ति के लिए भी एक विशेष नियम की आवश्यकता होती है। फूल और पहाड़ एक नियम से धीरे-धीरे बढ़ते हैं। विजय भी एक नियम से धीरे-धीरे प्राप्त होती है। केवल इच्छा से या बाहु भरे शब्दों से विजय नहीं मिलती। लगातार ईमानदारी के साथ परिश्रम करने से विजय प्राप्त होती है। जो यह समझता है कि प्रलोभन के उपस्थित हो जाने पर हम उसे रोक लेंगे वह आध्यात्मिक विजय नहीं प्राप्त कर सकता। आध्यात्मिक विजय उसी समय मिलती है जब मनुष्य एकान्त

में बैठकर ध्यान लगाने का अभ्यास करता है और छोटे-छोटे प्रलोभनों से अपने को बचाता है। बहुत पहले से तैयारी रखने पर ही मनुष्य बड़े-बड़े प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर सकता है।

जनवरी १५

जिस प्रकार बरसता हुआ पानी भूमि को अन्न और फलों की फसल के लिये तैयार करता है, उसी प्रकार हृदय में बरसने वाले दुःख के आंसू उस ज्ञान के लिए मनुष्य को तैयार करते हैं जिससे हृदय को प्रसन्नता और मन को शान्ति मिलती है। आसमान में बादल छा जाने से भूमि ठंढी और उपजाऊ हो जाती है, उसी प्रकार दुःख के बादल छा जाने से हृदय में ओजपूर्ण विचार उत्पन्न होते हैं। दुःख की घड़ी को सौभाग्य की घड़ी समझना चाहिये। यह तिरस्कार, उपहास और निन्दा का नष्ट कर देती है और हृदय तथा मन को सहानुभूति एवं विवेक से परिपूर्ण कर देती है। दुःख से जो सबक सीखा जाता है विशेष कर उसी सबक की स्मृति ज्ञान है।

ऐसा मत समझो कि दुःख हमेशा रहेगा। वह बादल की तरह उड़ जायगा।

जनवरी १६

नेक काम अथवा नेक विचार में लगे रहने से जो सुख मिलता है वह अन्यत्र नहीं मिलता। भली चीजों में सुख रहता है। जिस हृदय में नेकी ही नेकी भरी हुई है उसमें कभी बदी रह ही नहीं सकती। जिस प्रकार कुशल संतरी का पहरा होने से फौज में शत्रु की दाल नहीं गल सकती, उसी प्रकार मन की भली भांति देख रेख करने उसमें दुःख प्रवेश नहीं कर सकता। जब हम बेपरवाह हो जाते हैं तभी दुःख हमारे मन में भरता है और वह अपना काम पूर्ण रूप से उसी समय करता है जब उसमें बदी पहले से भरी रहती है। महान् सुख प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि हम बुरे विचारों को मन में न आने दें, बुरे काम

न करें और हानिकारक और सन्देहात्मक व्यवसायों से बचे रहें। हमारे लिए यही उचित है कि हम अपने सभी व्यवहारों में हमेशा नेकी करें।

जनवरी १७

फल की अथवा भविष्य की चिंता न करो। चिंता करो अपनी चारित्रिक कमजोरियों की ओर उनको दूर करने की। इस ईश्वरीय नियम को याद रक्खो कि 'सचाई से कभी खराबी नहीं पैदा होती और सचाई के साथ काम करने वालों का भविष्य कभी खराब नहीं हो सकता।' तुमको केवल काम करने का अधिकार है, फल का नहीं। काम के क्रम से ही तुमको कष्ट सुख या दुख मिलेगा। इसलिए भविष्य को छोड़कर वर्तमान की चिंता करो और उसी में सचाई से जुट जाओ। जिसके काम अच्छे होते हैं वह फल की चिंता नहीं करता। उसे भविष्य में अनिष्ट होने का भय भी नहीं रहता।

जनवरी १८

यदि हमारे हृदय में शान्ति है तो बाहर उठने वाला तूफान हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। जिस प्रकार जहाँ आग जलती है वहाँ तूफान का भय नहीं रहता उसी प्रकार जिसका हृदय शान्त है और जिसके हृदय में सचाई है उस पर संसार के झंझटों का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता चाहे वह उनके बीच में ही क्यों न रहे। लोगों से यदि हम विरोध न करें और यदि हम संसार की अशान्ति में भाग न लें तो हमारी किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती। स्मरण रक्खो, यदि हमारे हृदय में सचमुच शान्ति है तो बाहरी झंझटों में वह और भी प्रगाढ़ हो जायगी और उससे हमारे सब काम अच्छाई के साथ हो सकेंगे तथा हम दूसरों को भी शान्ति दे सकेंगे।

वह पुरुष धन्य है जो न तो दूसरों का जी दुखाता है और न उनको हानि पहुँचाता है। वह पुरुष और भी धन्य है जो दूसरों से घृणा नहीं करता और अपने हृदय से घृणा के बीज हमेशा के लिए निकाल देता है।

जनवरी १९

तूफान के शान्त हो जाने पर प्रकृति में भी शान्ति आ जाती है और सभी प्राणी प्रसन्नता के मारे फूले नहीं समाते। यही हाल सब चीजों का होता है। निर्जीव पदार्थ तक सजीव हो जाते हैं। इसी प्रकार जब किसी विकार का तूफान उठ कर शान्त हो जाता है तो मन विचार में निमग्न हो जाता है और उसमें शान्ति आ जाती है तथा सब चीजें हमको अपने असली रूप में दिखलाई देने लगती हैं। इस प्रकार की शान्ति से लाभ उठाना चाहिये। हमें अपनी कमजोरियों का पता लगाना चाहिये और साथ ही दूसरों की टीका-टिप्पणी करने में दया से काम लेना चाहिये। शान्ति का समय उन्नति का समय होता है।

हृदय को जब हम विकारों से खाली कर देते हैं तब उसमें आनन्द भर जाता है। आनन्द शान्त हृदय को ही मिलता है। उसकी बागडोर पवित्र पुरुषों के ही हाथ में रहती है।

जनवरी २०

जब तुम्हारे आँसू बह रहे हों और तुम्हारा हृदय दुःखी हो तो संसार के दूसरे लोगों के दुःखों की ओर विचार करो। तुम्हारी ही तरह दुःख दूसरों को भी परेशान करता है। कोई ऐसा नहीं है जो इससे बचा हो। दुःख का निवारण करने के लिये ही हमारे यहाँ धर्म की बड़ी आवश्यकता है। ऐसा न सोचो कि दुःख तुम्हीं को दिया गया है। दुःख के चंगुल में दुनिया पड़ी हुई है। तुम्हारा दुःख तो उसका एक हिस्सा मात्र है। ऐसा सोच कर ही तुम्हारी रुचि धर्म की ओर और भी अधिक होनी चाहिये और संसार के सभी प्राणियों से तुम्हें दया भाव से काम लेना चाहिये। इस प्रकार के अभ्यास से तुममें प्रेम की भावना बढ़ेगी और तुम्हें अधिक शांति मिलेगी।

भली-भाँति स्मरण रक्खो, तुम्हारे लाभ की जितनी वस्तुएँ हैं वे सब तुम्हें मिल जायेंगी।

जनवरी २१

जिस प्रकार प्रकाश अंधेरे को दूर करता है और तूफान के बाद सभ्यता आती है उसी प्रकार सुख-दुख को दूर करता है और कष्ट के बाद शांति प्राप्त होती है। जो सुख दुख के बाद मिलता है वह उस सुख से कहीं पवित्र और स्थायी होता है जो दुख के पहिले हमें मिला करता है। इन्द्रिय सुख और स्वर्गीय सुख के बीच एक दुख की अंधेरी घाटी होती है जिसे संसार के सभी यात्रियों को पार करना पड़ता है। उसको पार करने के बाद उन्हें स्थायी स्वर्गीय सुख मिलता है। जो संसार की यात्रा समाप्त करके स्वर्गीय यात्रा में कदम रखते हैं वे सत्य के तेजस्वी मुह पर लगे हुए दम्भ के परदे को फाड़ कर फेंक देते हैं।

जनवरी २२

सुख और दुख में, आनन्द और शोक में, सफलता और विफलता में, विजय और पराजय में धर्म में तथा व्यापार में ही नहीं, प्रत्युत जीवन के हर एक पहलू में चरित्र ही हमारा भाग्य विधाता है। मनुष्य के भावी जीवन के बीज उसके मन में निहित रहते हैं।

मनुष्य का चरित्र ही उसके सुख और दुख का कारण भी उपस्थित करता है और उसका फल भी खिलाता है। उसके चरित्र में स्वर्ग, नरक और मोक्ष छिपे रहते हैं। जिनके चरित्र में गन्दगी होती है उनको कभी सुख नहीं मिलता वे चाहे जहाँ रहें किन्तु जिनका चरित्र ऊँचा और शुद्ध है उनको सुख अवश्य मिलता है। तुम जिस प्रकार का चरित्र बनाओगे उसी प्रकार का तुम्हारा जीवन हो जायगा।

जन

जब कठिनाइयों और आपत्तियों ने चारों ओर से तुमको घेर लिया हो, तब समझ लो कि हमें अपने जीवन पर गम्भीरता से विचार करना है और उनको दूर करने के लिये काफी प्रयत्न करना है। ऐसी कोई विपत्ति नहीं है जिसका निराकरण तुम नहीं कर सकते। कोई ऐसी समस्या नहीं जिसे तुम हल नहीं कर सकते। जितनी तुम्हारी परीक्षा होगी उतनी ही तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी और तुम्हारी जीत होगी। तुम्हारा रास्ता चाहे जितना पेचीदा क्यों न हो किन्तु उससे निकलने का उपाय तुम सोच सकोगे यद्यपि इस उपाय के सोचने में तुम्हें अपनी छिपी हुई शक्तियों से काम लेना पड़ेगा। जो विपत्तियाँ तुम पर अधिकार जमाना चाहती हैं उन पर जब तुम अधिकार जमा लोगे तो तुमको बड़ी प्रसन्नता होगी और तुम अपनी नवीन शक्तियों पर अभिमान करने लगोगे।

जनवरी २४

बार-बार उद्योग करने से हम उन्नति करते हैं। निर्दिष्ट आदेशों के अनुसार बार बार चलने से हमें मानसिक और शारीरिक शक्ति मिलती है। सतत् उद्योग से ही हमारा बल बढ़ता है। लगातार उद्योग करते करते पहलवान बड़े-बड़े विचित्र और साहस के खेल करता है।

इसी प्रकार बौद्धिक उन्नति का जब उद्योग किया जाता है तब हमारी बुद्धि का अद्भुत विकास होता है और जब आध्यात्मिक उन्नति का उद्योग किया जाता है तो हमारा ज्ञान या बड़प्पन बढ़ता है। परिस्थितियों से विवश होकर यदि अधिक उद्योग करना पड़े तो घबड़ा न जाना चाहिए। परिस्थितियाँ उनके लिये हानिकर होती हैं जो उन्हें हानिकर समझते हैं। उसी प्रकार परिस्थितियाँ उनके लिये लाभप्रद होती हैं जो उनको लाभप्रद समझते हैं।

जनवरी २१

जिस प्रकार प्रकाश अंधेरे को दूर करता है और तूफान के बाद सम्यता आती है उसी प्रकार सुख-दुख को दूर करता है और कष्ट के बाद शांति प्राप्त होती है। जो सुख दुख के बाद मिलता है वह उस सुख से कहीं पवित्र और स्थायी होता है जो दुख के पहिले हमें मिला करता है। इन्द्रिय सुख और स्वर्गीय सुख के बीच एक दुख की अंधेरी घाटी होती है जिसे संसार के सभी यात्रियों को पार करना पड़ता है। उसको पार करने के बाद उन्हें स्थायी स्वर्गिय सुख मिलता है। जो संसार की यात्रा समाप्त करके स्वर्गीय यात्रा में कदम रखते हैं वे सत्य के तेजस्वी मुह पर लगे हुए दुख के परदे को फाड़ कर फेंक देते हैं।

जनवरी २२

सुख और दुख में, आनन्द और शोक में, सफलता और विफलता में, विजय और पराजय में, धर्म में तथा व्यापार में ही नहीं, प्रत्युत जीवन के हर एक पहलू में चरित्र ही हमारा भाग्य विधाता है। मनुष्य के भावी जीवन के बीज उसके मन में निहित रहते हैं।

मनुष्य का चरित्र ही उसके सुख और दुख का कारण भी उपस्थित करता है और उसका फल भी दिखलाता है। उसके चरित्र में स्वर्ग, नरक और मोक्ष छिपे रहते हैं। जिनके चरित्र में गन्दगी होती है उनको कभी सुख नहीं मिलता वे चाहे जहाँ रहें किन्तु जिनका चरित्र ऊँचा और शुद्ध है उनको सुख अवश्य मिलता है। तुम जिस प्रकार का चरित्र बनाओगे उसी प्रकार का तुम्हारा जीवन हो जायगा।

जन

जब कठिनाइयों और आपत्तियों ने चारों ओर से तुमको घेर लिया हो, तब समझ लो कि हमें अपने जीवन पर गम्भीरता से विचार करना है और उनको दूर करने के लिये काफी प्रयत्न करना है। ऐसी कोई विपत्ति नहीं है जिसका निराकरण तुम नहीं कर सकते। कोई ऐसी समस्या नहीं जिसे तुम हल नहीं कर सकते। जितनी तुम्हारी परीक्षा होगी उतनी ही तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी और तुम्हारी जीत होगी। तुम्हारा रास्ता चाहे जितना पेचीदा क्यों न हो किन्तु उससे निकलने का उपाय तुम सोच सकोगे यद्यपि इस उपाय के सोचने में तुम्हें अपनी छिपी हुई शक्तियों से काम लेना पड़ेगा। जा विपत्तियाँ तुम पर अधिकार जमाना चाहती हैं उन पर जब तुम अधिकार जमा लोगे तो तुमको बड़ी प्रसन्नता होगी और तुम अपनी नवीन शक्तियों पर अभिमान करने लगोगे।

जनवरी २४

बार-बार उद्योग करने से हम उन्नति करते हैं। निर्दिष्ट आदेशों के अनुसार बार बार चलने से हमें मानसिक और शारीरिक शक्ति मिलती है। स्वत् उद्योग से ही हमारा बल बढ़ता है। लगातार उद्योग करते करते पहलवान बड़े-बड़े विचित्र और साहस के खेल करता है।

इसी प्रकार बौद्धिक उन्नति का जब उद्योग किया जाता है तब हमारी बुद्धि का अद्‌भुत विकास होता है और जब आध्यात्मिक उन्नति का उद्योग किया जाता है तो हमारा ज्ञान या बड़प्पन बढ़ता है। परिस्थितियों से विवश होकर यदि अधिक उद्योग करना पड़े तो घबड़ा न जाना चाहिए। परिस्थितियाँ उनके लिये हानिकर होती हैं जो उन्हें हानिकर समझते हैं। उसी प्रकार परिस्थितियाँ उनके लिये लाभप्रद होती हैं जो उनको लाभप्रद समझते हैं।

जनवरी २५

निराशा, चिन्ता, दुःख और चिड़चिड़ापन से हम अपने कष्टों को दूर नहीं कर सकते। उनसे हमारे कष्ट और भी अधिक बढ़ जाते हैं। यदि जीवन को सुखी और उपयोगी बनाना है तो हमें मन को सुदृढ़ और गम्भीर बनाना होगा। यदि हम स्थिर और दृढ़ मन से कष्टों का मुकाबिला करेंगे तो वे तुरन्त नष्ट हो जायेंगे। जब हम निजी स्वार्थों के लिये इच्छा करते हैं, जब हम निजी सुख चाहते हैं तो हमें दूसरों की गालियाँ सहनी पड़ती है और बहुत से रगड़े-झगड़े हमारे सामने आ खड़े होते हैं। इसलिये इन घोर आपत्तियों से बचने के लिये ही हम बहुत ही शांति और बुद्धिमत्ता के साथ अपने हृदय में स्थायी सुख खोज सकते हैं।

जनवरी २६

सुख का ठौर मन के भीतर है, यह धन में या संसार की अन्य वस्तुओं में नहीं रहता। जब ऐसी धारणा हो जाय तो समझ लो कि हम बड़े बुद्धिमान हैं। लोगों का यह सोचना ठीक नहीं कि यदि हमारे पास धन होता तो हम बड़े सुखी होते अथवा हमें खूब समय मिलता या हमारे अच्छे-अच्छे मित्र होते; अथवा परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल होतीं तो हम बड़े सुखी होते। बड़े खेद की बात है कि लोगों की समझ उल्टी हो गई है। इन सांसारिक चीजों में केवल असंतोष और दुःख ही है। सुख यदि भीतर नहीं मिलता तो बाहर मिल ही नहीं सकता। बुद्धिमान मनुष्य का सुख हर हालत में एक सा रहता है।

जनवरी २७

मनुष्य के स्वभाव में असीम धैर्य होता है जिससे वह बहुत लाभ उठा सकता है। पुच्छल तारे को अपना मार्ग पूरा करने में हजारों वर्ष लगते हैं; समुद्र में किसी भूमि को काटने में हजारों वर्ष लग जाते हैं, और मनुष्य जाति के विकास में लाखों वर्ष लग जाते हैं। इन प्राकृतिक घटनाओं में जब हम इतना धैर्य देखते हैं तो हमें अपनी हर घड़ी की जल्दबाजी अशान्ति और निराशा पर लज्जा आनी चाहिए। धैर्य से हमें बड़प्पन मिलता है धैर्य से हमारा लाभ होता है और धैर्य से हमें शांति मिलती है। बिना धैर्य के जीवन की शक्ति, जीवन का प्रभाव और जीवन का आनन्द नष्ट हो जाता है।

अथक और सुव्यवस्थित परिश्रम से तुम्हारी सफलता बढ़ सकती है।

जनवरी २८

यदि आज हमारे दिन खराब हों तो क्या हमें निराश होना चाहिये? कदापि नहीं। आगे चलकर हमारे अच्छे दिन भी आवेंगे इसका विश्वास रखना चाहिये। उठो, तुम्हारा अच्छा समय आ गया है। चिड़ियों ने चहचहाना शुरू कर दिया है। उनके गले से सुरीले शब्द निकल रहे हैं जो सूचित करते हैं कि बसन्त ऋतु आ रही है और ग्रीष्म ऋतु भी शीघ्र ही आने वाली है, जिसका बीजारोपण हो चुका है (विलायत में ग्रीष्म ऋतु बड़ी सुहावनी होती है)। उद्योग करते रहो क्योंकि कोई उद्योग व्यर्थ नहीं जाता। तुम्हारे मनोरथों का बसन्त समीप आ गया है और तुम्हारे निःस्वार्थ कामों का ग्रीष्म निस्सन्देह शीघ्र ही आवेगा।

उस समय तुम्हारा असत्य अहंभाव दूर हो जायगा और उसका स्थान सत्य ले लेगा। तुम्हारे हृदय में सर्वशक्तिमान ईश्वर का निवास होगा और तुम्हारे हृदय की कलुषता दूर हो जायगी।

जनवरी २९

सचाई से अपने चरित्र की जाँच करो और तुममें जो बुराइयाँ हों उनको दूर करो। केवल जाँच करके उनको यहीं छोड़ न दो। याद रक्खो बुराइयाँ तुम्हारी पैदा की हुई हैं। वे हमेशा नहीं रहतीं। बराबर आती जाती रहती हैं, इस संसार के दुख और सुख का संचालन एक अचल और निर्दोष ईश्वरीय नियम द्वारा होता है। तुम दुखी हो क्योंकि तुम्हारे काम ऐसे हैं कि तुम्हें दुख मिले किन्तु अपनी समझ-बूझ और सहनशीलता से तुम अपने दुख दूर करके अपने को मजबूत और बुद्धिमान बना सकते हो। जब तुम्हें पूरी तरह मालूम हो जायगा कि यह संसार चक्र एक अचल और निर्दोष नियम द्वारा घूम रहा है तब तुम अपनी परिस्थितियों को सुधार सकोगे और अपनी बुराइयों को दूर करके बुद्धिमानी के साथ अपने भाग्य का निर्माण कर सकोगे।

जनवरी ३०

यदि तुम मुझे यह बतला दो कि तुम किन विषयों पर प्राय और गहराई से विचार किया करते हो और तुम्हारी आत्मा का झुकाव किस ओर रहता है तो मैं तुम्हें बता दूँगा, कि तुम दुख की तरफ जा रहे हो या सुख की तरफ, तुम आस्तिक हो रहे हो या नास्तिक, तुम शिष्ट हो रहे हो या अशिष्ट। यह तो एक नैसर्गिक नियम है कि मनुष्य लगातार जैसा विचार करता है वैसा ही बन जाता है। इसलिये तुम्हारे विचार का विषय ऊँचा होना चाहिये ताकि तुम जब उस पर विचार करने लगो तो ऊपर की ओर उठते रहो। तुम्हारे विचार करने का विषय शुद्ध हो और उसमें तुम्हारा कोई स्वार्थ न हो। इस प्रकार विचार करते-करते तुम्हारा हृदय शुद्ध हो जायगा और तुम बुरी तरह से 'असत्य' के कीचड़ में न फँस कर 'सत्य' के नजदीक पहुँच जाओगे।

जनवरी ३१

यदि तुम बुद्धि, शान्ति, उत्कृष्ट पवित्रता और सत्य के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हो और यदि ये चीजें तुमको नहीं मिलतीं तो इसका अर्थ यह हुआ कि तुम मन में सोचते कुछ हो और करते कुछ हो। इस हठधर्मी को छोड़ दो, इधर-उधर की बातों में भागते हुए अपने मन को रोक लो, और अपने स्वार्थ को हटा लो जिसके कारण इच्छित वस्तुओं के प्राप्त करने में रुकावट पड़ रही है। ईश्वर से ऐसी वस्तु न माँगो जिसके अभी तुम अधिकारी नहीं हो अथवा उससे ऐसी दया और प्रेम की प्रार्थना न करो जो तुम दूसरों को नहीं देना चाहते। सचाई के साथ किसी विषय पर सोचो और उसी के अनुसार काम करो तो क्रमशः सत्य के नजदीक पहुँचते जाओगे और अन्त में उसे प्राप्त कर लोगे।

फरवरी १

क्लेश और दुख से बचने का क्या कोई मार्ग नहीं है? इन शैतानों से बचने का क्या कोई भी उपाय नहीं है? जी हाँ है, जिसके द्वारा ये शैतान जान से मारे जा सकते हैं। जी हाँ, एक मार्ग है जिस पर चलकर मनुष्य अपनी आपत्तियों को हमेशा के लिये समाप्त कर सकता है और अक्षय शान्ति प्राप्त कर सकता है। वह मार्ग यह है कि हम दुख के कारण को बड़ी सचाई के साथ अच्छी तरह समझें और उसे दूर करें, दुख को यों ही टाल देने से कोई काम नहीं। उसके उद्गम को जानने की अत्यन्त आवश्यकता है।

फरवरी २

दुष्कर्म का यदि ठीक-ठीक विश्लेषण किया जाय तो मालूम होगा कि उसमें इतनी शक्ति नहीं है जिससे भय किया जाय। अनुभव बताता है कि दुष्कर्म एक अल्पस्थायी चीज है। यह उन लोगों को शिक्षा भी देता है जो उससे शिक्षा लेना चाहते हैं। दुष्कर्म कोई बाहर की चीज नहीं है जो कठिनाई से समझा जा सके। यह तो तुम्हारे हृदय में रहने वाली चीज है। हृदय की सफाई करने से तुम उसकी असलियत को समझ सकते हो और उसे सदा के लिए निर्मूल कर सकते हो। संसार के सब दुष्कर्म हमारे अज्ञान से ही उत्पन्न होते हैं और यदि उनसे हम शिक्षा लें तो वे हमें ज्ञान देकर और हमारी सहायता करके चले भी जा सकते हैं।

फरवरी ३

इस समय जो तुम्हारी योग्यता है वह तुम्हें अनुभव से प्राप्त हुई है; उसी प्रकार भविष्य में भी जो तुम्हारी योग्यता होगी वह तुम्हें अनुभव से ही प्राप्त होगी। तुम्हारा संसार तुम्हारे विचारों, तुम्हारी इच्छाओं और तुम्हारी महत्त्वाकांक्षाओं से बना है। जो सुन्दरता, जो आनन्द, जो सुख और जो क्लेश संसार में तुम्हें दिखलाई पड़ते हैं ये सब तुम्हारे भीतर मौजूद हैं। अपने ही विचारों से तुम अपना जीवन या संसार बनाते या बिगाड़ते हो। जैसा तुम भीतर से विचार करोगे वैसा ही तुम्हारा जीवन बनेगा और वैसी ही परिस्थितियाँ भी तुम निर्माण करोगे। हृदय के भीतर जैसे तुम्हारे विचार होंगे वैसा ही जीवन तुम 'प्रतिक्रिया के नियम' के अनुसार बनाओगे।

फ़रवरी ४

जो इन्द्रियों का दास है वह अपना शत्रु है और दूसरे भी उससे शत्रुता करते हैं। जो इन्द्रियों का दास नहीं है वह अपना मित्र है और उससे दूसरे भी मित्रता करते हैं। जब ईश्वरीय प्रकाश हमारे हृदय को शुद्ध करता है तब हमारे सारे दुख के बादल उड़ जाते हैं। जो अपने को जीत लेता है वह संसार को जीत लेता है। इसलिये अपने को यदि अपने वश में करो तो तुम्हारे सारे दुख और दरिद्र दूर हो जायेंगे। 'यह मेरा है और यह तेरा है' इस ढंग के स्वार्थपूर्ण तुच्छ विचारों को छोड़ दो, सारे विश्व से प्रेम करो। तब तुमको स्वर्ग अपने ही भीतर दिखलाई पड़ेगा और उसकी आभा तुम्हारे बाहरी जीवन में प्रतिबिम्बित होगी।

फ़रवरी ५

जब हमारे विचार ईश्वरीय नियम के साथ चलते हैं तो वे हमारे चरित्र का निर्माण करते हैं और उसे सँभाले रहते हैं। किन्तु जब वे मिल कर नहीं चलते तो वे ही विचार हमारे चरित्र को नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। सर्वशक्तिमान जगन्नियन्ता परमेश्वर की ओर जब तुम अपने विचारों को पूर्ण श्रद्धा के साथ लगाओगे तो तुम्हारे सब पाप धुल जायेंगे। तुम्हारे पापों के धुलने का यही तो एक मार्ग है। प्रभु की आज्ञा है, "मुझ पर विश्वास करो तो तुम्हारा जीवन सुखद होगा।" ईश्वर पर विश्वास करना और उसी के प्रकाश से पापों का नष्ट करना मात्र है।

फरवरी ६

ऐसी कोई भी बड़ी से बड़ी मुसीबत नहीं है जिसे हम अपने शक्तिशाली और शांत विचारों से दूर नहीं कर सकते और ऐसी कोई भी उचित वस्तु नहीं है जिसे हम अपने शक्तिशाली और शान्त विचारों से प्राप्त नहीं कर सकते।

जब तुम गहराई से अपने भीतर का अध्ययन करते हो और अपने भीतर रहने वाले शत्रुओं का दमन करते हो तब तुम्हें विचारों की महत्ता का पता चलता है। उस समय तुम्हें मालूम होता है कि विचारों में जादू ऐसी शक्ति भरी है। उस समय तुम्हें मालूम होता है कि संसार की वस्तु हमको अनिवार्य रूप से विचारों के ही द्वारा मिलती है, उस समय तुम्हें यह भी मालूम होता है कि विचारों से यदि ठीक तौर पर काम लिया जाय तो हमारा सारा जीवन ही बदल सकता है। तुम्हारे प्रत्येक विचार में एक विशिष्ट शक्ति होती है जो दूसरों पर अपना प्रभाव डालती है और जो तुम्हारे सुख-दुख का कारण होती है।

फरवरी ७

यदि तुम विजयिनी शक्ति प्राप्त करना चाहते हो तो एकान्त में रहने का अभ्यास करो। पहाड़, ठोस चट्टान और तूफान को झेलकरने वाला शाह बलूत का वृक्ष ये सभी शक्तिशाली होते हैं क्योंकि ये एकान्त में निमग्न होकर रहते हैं। लुढ़कने वाली बालू, झुकी हुई डाली और हिलते हुए नरकुल निर्बल होते हैं क्योंकि ये चलते फिरते रहते हैं। उनमें मुकाबला करने की शक्ति नहीं होती और जब वे अपने साथियों से अलग हो जाते हैं तो किसी काम के नहीं रहते। शक्तिशाली मनुष्य वही है जो उस समय भी अचल और शांत रहे जब उसके साथी आपत्ति से घबड़ा रहे हों। कमजोर प्रकृति वाले, डरपोक, मूढ़ और चंचल लोगों को अपने मित्रों के साथ रहने की आवश्यकता है। बिना किसी की सहायता के वे अकेले घबड़ा जायेंगे किन्तु शान्त, निडर, विचारशील और गम्भीर प्रकृतिवालों को एकान्त में रहना चाहिये। एकान्त में रहने के कारण उनकी शक्ति और भी बढ़ जाती है।

फरवरी ८

यदि तुम अपनी वास्तविक उन्नति कर लो तो दूसरों की तरह ऐसा मत सोचो कि जो कुछ ठीक समझकर तुम कर रहे हो वह सब निरर्थक हो जायगा। सत्य के मार्ग पर चलने में दूसरों के कहने की परवाह न करो। मेरी दृष्टि में उनके कहने का कोई भी मूल्य नहीं है। ईश्वरीय विधान अपरिवर्तनशील है इसलिये वह इन आलोचना करने वालों के हृदयों को उसी प्रकार ठेस पहुँचाता है जिस प्रकार वह एक नेक मनुष्य को पहुँचाता है। ईश्वरीय विधान का ज्ञान होने से मैं कुकर्मियों से नहीं घबराता। मुझे विश्वास है कि विनाश उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। जो नेक मार्ग पर चल रहे हैं उन्हें इन आलोचकों से चौकन्ना रहना चाहिये। उनको इन महापुरुषों से अपनी रक्षा करने की आवश्यकता नहीं है।

फरवरी ९

जिसके हृदय में प्रेम है वह अपने आप सब पर शासन करता है। सब से प्रेम करना ईश्वरीय आज्ञा है, अतएव जो ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है उसकी आज्ञा सभी मानते हैं। सफलता उसके विचारों के साथ-साथ चलती है। लोग उसकी बातचीत पर मुग्ध होकर उसका पीछा नहीं छोड़ते। वह अजेय और अमर शक्तियों के साथ अपने हृदय का तार मिला लेता है इसलिये उसमें विचारों की कमजोरी और अनिश्चिन्तता आ नहीं सकती। उसके प्रत्येक विचार के साथ एक विशेष उद्देश्य होता है और उसके प्रत्येक काम में सफलता होती है। वह ईश्वरीय नियम के अनुसार चलता है। उसमें अपनी टाँग नहीं अड़ाता। वह स्वयं ईश्वरीय शक्ति का एक केन्द्र बन जाता है जिससे शक्ति निर्विघ्न निकल कर दूसरों के पास जाती और उनका हित करती है।

फरवरी १०

सबसे पहले तुमको 'ध्यान' और 'व्यर्थ मन की दौड़' का अन्तर समझ लेना चाहिए। मन की दौड़ निरा स्वप्न है और उसकी कोई बात अमल में नहीं लाई जा सकती किन्तु 'ध्यान' एक ठोस वस्तु है। उसकी हर एक बात अमल में लाई जा सकती है। ध्यान एक विधि है जिसके द्वारा सूक्ष्म और दृढ़ विचार विशेष सत्य की खोज करता है। ध्यान करने से तुम्हारा स्वार्थ नष्ट हो जाता है और तुम हमेशा सत्य की खोज करने लगते हो। ध्यान के द्वारा ही तुमने भूतकाल में जो भूलें की हैं उन्हें तुम दूर कर सकोगे और 'सत्य' के उस दैवी प्रकाश की प्रतीक्षा करोगे जो तुम्हें उस समय मिलेगा जब तुम्हारी सब भूलें सर्वथा निर्मूल हो जायेंगी।

फरवरी ११

आध्यात्मिक ध्यान और आत्मानुशासन दोनों अभिन्न हैं। इसलिये तुम अपने चरित्र का मनन बारीकी से करो और समझो कि वास्तव में तुम कौन हो। इस प्रकार अपनी छानबीन करते-करते तुम्हारे चरित्र की बुराइयाँ दूर हो जायेंगी और तुम्हें 'सत्य' का प्रकाश मिलने लगेगा। जब तुम ध्यान द्वारा अपने विचारों, अपनी भावनाओं और अपने कर्मों की कड़ी आलोचना शक्ति के साथ करोगे तब तुम्हें मन और आत्मा का वह तारतम्य मिलेगा जिसके बिना जीवन बेकार होता है।

फरवरी १२

प्रारम्भ में जिस प्रकार की भावना तुम्हारे मन में पैदा होगी उसी प्रकार का तुमको उसका फल भी मिलेगा। किसी काम के प्रारम्भ से ही उसके अन्त और उसकी सफलता का अनुमान होता है। एक प्रवेश द्वार से हमें एक मार्ग का पता चलता है और उसके बाद उस मार्ग के अन्त का। इसी प्रकार काम के आरम्भ से हमें उसके फल का पता चलता है और उसके बाद हमारे उद्देश्य की पूर्ति का।

प्रारम्भ गलत भी होता है और सही भी। उसी के अनुसार उसका फल भी होता है। सावधानी से सोच विचार कर तुम गलत शुरुआत को छोड़ सकते हो और सही शुरुआत को अपना सकते हो। इस प्रकार तुम बुरे परिणाम से बचे रहोगे और तुम्हें अच्छा फल मिलता रहेगा। सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिये यह आवश्यक है कि हम अपने दैनिक काम का प्रारम्भ सही ढंग से करें।

फरवरी १३

जगत की प्रत्येक वस्तु छोटे-छोटे कणों से बनी है और छोटे-छोटे कणों की पूर्णता से ही बड़ी-बड़ी वस्तुयें पूर्ण होती हैं। यदि जगत का एक कण भी अपूर्ण हो तो सारा जगत अपूर्ण हो जाय। जगत का एक कण यदि अलग हो जाय तो सारा जगत नष्ट हो जाय। जगत का एक-एक कण पूर्ण है इसलिये जगत भी पूर्ण है। छोटी-छोटी चीजों की ओर ध्यान न देने से बड़ी-बड़ी चीजों में गड़बड़ी हो जाती है। बर्फ का गिरना उतना ही पूर्ण है जितना आकाश का एक तारा। ओस की बूँद उतनी ही व्यवस्थित है जितना आकाश का यह ग्रह। अन्य चीजों की बनावट में उसी प्रकार ठीक ठीक व्यवस्था है जिस प्रकार मनुष्य की बनावट में। संसार एक एक कण के मिलान से उसी प्रकार सुन्दर बना है जिस प्रकार एक पत्थर के ऊपर दूसरा पत्थर रखकर और उसे साहुल यन्त्र से सीधा करके एक सुन्दर मन्दिर बनाया जाता है।

फरवरी १४

बुद्धिमान पुरुष बातचीत करने में, एक एक पल के प्रयोग करने में, किसी को बधाई देने में, भोजन करने में, वस्त्र पहिनने में, पत्र लिखने में, आराम करने में, काम करने में, लोगों की सेवा में और इसी प्रकार के हजारों कार्यों में बड़ी बुद्धिमानी बरतता है, क्योंकि वह उनको मुख्य समझता है। वह जीवन की हर एक बात में ईश्वरीय व्यवस्था देखता है और जीवन को सुखी और पूर्ण बनाने के लिये विचारशीलता तथा परिश्रम से काम लेता है। वह न तो किसी चीज से उदासीन होता है और न जल्दबाजी करता है। वह अपनी भूलों के लिये पछताया करता है, अपने कर्तव्य का सदैव पालन करता है, और किसी काम को न तो स्थगित करता है और न उसके लिये कोई दुख करता है। बिना कुछ कहे सुने जब वह निर्लिप्त होकर अपना काम करता है तो उसमें बालक जैसी सादगी आ जाती है और उसे अपने आप वह शक्ति मिलती है जिससे उसका बड़प्पन बढ़ता है।

फरवरी १५

मूर्ख समझता है कि छोटे-छोटे अपराधों का कोई महत्व ही नहीं है। वह सोचता है कि जब तक मैं कोई बहुत भारी पाप नहीं करता तब तक मैं धर्मात्मा और पवित्र हूँ किन्तु उसकी यह धारणा गलत है। छोटे छोटे अपराधों से भी उसका धन और उसकी पवित्रता नष्ट हो जाती है और वह उसे अधर्मी समझते हैं। वे न तो उसका आदर करते हैं और न प्रेम ही। उसका सारा प्रभाव जाता रहता है और कुछ समय के बाद लोग उसका नाम तक नहीं लेते। जब ऐसा मनुष्य लोगों से कहता है कि तुम अधर्म करना छोड़ दो, धर्मात्मा बन जाओ तो लोग इसका उपहास करते हैं और उसकी बात का रत्ती भर भी असर नहीं पड़ता। जिस लापरवाही से वह अपने छोटे-छोटे गुनाहों को नगण्य समझता है वह लापरवाही उसके चरित्र में बिंध जाती है जिससे उसकी आध्यात्मिक उन्नति नहीं होती।

फरवरी १६

जिस प्रकार वर्ष में एक-एक करके जब ३६५ दिन आते हैं तो एक पूरा वर्ष बनता है उसी प्रकार एक-एक विचार और एक-एक काम से मनुष्य जीवन का एक अंग बनता है और इस प्रकार के कई अंगों से उसका सम्पूर्ण जीवन तैयार होता है। दया, उदारता और त्याग से पूर्ण छोटे-छोटे कामों से उसका दयालु और उदार चरित्र बनता है। एक ईमानदार मनुष्य जीवन की छोटी-छोटी बातों में भी ईमानदारी से काम लेता है। एक चरित्रवान मनुष्य जिस छोटी बात को करता है या जो छोटा काम करता है उसमें भी वह हमेशा ऊँचे चरित्र का परिचय देता है। तुम अपना जीवन कई अंगों में व्यतीत करते हो जिससे कि तुम्हारा संपूर्ण जीवन बनता है। तुम चाहो तो जीवन के हर एक अंग में ईमानदारी से रह सकते हो और इस प्रकार तुम्हारा सारा जीवन अत्यन्त ऊँचा बन सकता है।

फरवरी १७

जगत की एक ही असली चीज 'सत्य' है। उससे हृदय को शान्ति मिलती है। 'सत्य' ही धर्म है और 'सत्य' ही प्रेम है। 'सत्य' में न तो कुछ जोड़ा जा सकता है और न उसमें से कुछ निकाला ही जा सकता है। 'सत्य' किसी पर आश्रित नहीं रहता किन्तु उसी पर लोग आश्रित रहते हैं। तुम में जब तक अहंकार है तब तक तुम 'सत्य' की सुन्दरता को नहीं देख सकते। यदि तुम में अहंकार है तो तुम सब चीजों को अहंकार की दृष्टि से देखोगे। यदि तुम कामी हो तो तुम्हारा मन और हृदय काम से दूषित रहेगा और प्रत्येक वस्तु तुमको विकृत दिखलाई पड़ेगी। यदि तुम घमन्डी और दुराग्रही हो तो तुम अपने ही मन को सब कुछ समझ कर उसे महत्व देते रहोगे। 'सत्य' के पुजारी को 'दुराग्रह' और 'सत्य' का भेद मालूम रहता है।

फरवरी १८

यदि तुम अपने मन, हृदय और चरित्र की परीक्षा शान्ति से करो तो आसानी से जान सकते हो कि तुम 'सत्य' के पुजारी हो अथवा अहंकार के। क्या तुम दूसरों पर सन्देह करते हो ? क्या तुम किसी से शत्रुता रखते हो ? क्या तुम दूसरों से ईर्ष्या करते हो ? क्या तुम्हें काम सताता है ? क्या तुममें घमंड है ? यदि ये ही सब बातें तुममें हैं तो तुम्हारा धर्म चाहे जो हो तुम अहंकार के ही पुजारी कहलाओगे और यदि इन सब से तुम बराबर लोहा लेते रहते हो तो देखने में चाहे तुम्हारा कोई भी धर्म क्यों न हो फिर भी तुम 'सत्य' के ही पुजारी कहलाओगे। यदि तुम क्रोधी हो, यदि तुम दुराग्रही हो, यदि तुम भोगी हो, और यदि तुम्हें सदा अपने ही स्वार्थ का ख्याल रहता है तो याद रखो तुम्हारा स्वामी 'अहंकार' है। किन्तु यदि तुम नम्र हो, दयालु हो, स्वार्थहीन हो, अभोगी हो और त्यागी हो तो समझ लो कि 'सत्य' तुम्हारे प्रेम का विषय है।

फरवरी १९

प्रलोभन एक उत्साही पुरुष को मुसीबत में डाल देता है जब तक वह ईश्वर की शरण में नहीं जाता जहाँ प्रलोभन पहुँच नहीं सकता। जब मनुष्य ऊपर उठने लगता है तब प्रलोभन उसे नीचे खींचता है। अपने को ऊपर उठाने में ही मनुष्य के गुण और दोष सामने आते हैं क्योंकि जब तक मनुष्य को अपने गुण और दोष नहीं मालूम होते तब तक वह उन्नति नहीं कर सकता। प्रलोभन के सामने आने पर मनुष्य को उससे बचने का प्रयत्न करना चाहिये किन्तु जो मनुष्य पशुवत होता है वह तुरन्त प्रलोभन के चंगुल में फँस जाता है। वासना का उत्पन्न होना और उसकी पूर्ति करना साधारण मनुष्य का काम है जो अपने को ऊपर उठाना नहीं चाहता। उसकी इच्छा केवल इन्द्रिय भोग की होती है। ऐसा मनुष्य और भी अधिक क्या गिरेगा, क्योंकि वह गिरी अवस्था में पहले से ही है। उसने कभी ऊपर उठने की चेष्टा नहीं की।

फरवरी २०

जो मनुष्य प्रलोभन में फंसा हुआ है वह दूसरों को भी प्रलोभन में फंसाता है। उसके शत्रु उसके भीतर ही रहते हैं। बहकाने वाले प्राणी, आक्षेप करने वाले प्राणी और हृदय को जलाने वाले प्राणी सब उसी के भीतर मौजूद हैं जो उसके अज्ञान से पैदा हो गये हैं। ऐसा समझकर उसे अपनी बुराइयों को दूर करके उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिये। यदि वह प्रलोभन में पड़ जाय तो उसे यह समझ कर पश्चाताप नहीं करना चाहिए कि मुझ में प्रलोभन रोकने के लिये शक्ति की अपेक्षा कमजोरी अधिक है। जो अपनी कमजोरियों को समझ लेता है उसे शक्ति धीरे-धीरे मिल ही जाती है।

फरवरी २१

अपनापन छोड़ने का अर्थ केवल बाहरी चीजों के छोड़ने ही से नहीं है बल्कि आन्तरिक पापों और दोषों के छोड़ने से भी है। केवल चमकदार कपड़े न पहनने से, धन दौलत लुटा देने से, स्वादिष्ट भोजन न करने से और चिकनी चुपड़ी बातें करने से मनुष्य को 'सत्य' की प्राप्ति नहीं होती। सत्य उसे उस समय मिलता है जब वह अहंकार, धन प्राप्त करने की इच्छा, विलासिता, घृणा, कलह, निन्दा और लोभ को छोड़ कर अपने हृदय को नम्र और पवित्र बनाता है।

फरवरी २२

अपनी बुरी भावनाओं और अपने स्वार्थों को रोक कर मनुष्य अपनी शक्ति बढ़ाता है। वह अपनी आन्तरिक शक्ति को जाग्रत करके शान्ति प्राप्त करता है और जीवन का एक सिद्धान्त बना कर उसी पर अचल रहता है।

वह इस बात का अनुभव करता है कि ईश्वरीय नियम एक रूप से हमेशा काम करते हैं। इस धारणा से उसे महान् शक्ति मिलती है।

अधिक सोच करके, अधिक कष्ट उठा कर और अधिक त्याग करके जब उसके हृदय में ईश्वरीय प्रकाश का उदय होता है तो उसके चेहरे पर एक विचित्र ईश्वरीय आभा दिखलाई पड़ती है और उसके हृदय में एक अकथनीय आनन्द पैदा होता है।

जिसने इस सत्य का अनुभव किया उसका भ्रम दूर हो जाता है और वह फिर अपनी आत्मा में ही आनन्द लेने लगता है।

फरवरी २३

जब तक मनुष्य के पास धन है तब तक वह शान्ति, भ्रातृभाव और विश्वप्रेम के सिद्धान्तों को मानता है किन्तु जब धन नष्ट होने लगता है तो उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और वह फिर शान्ति, भ्रातृभाव और विश्वप्रेम के सिद्धान्तों को छोड़ कर अशान्ति, स्वार्थ और घृणा से काम लेने लगता है।

चाहे नाम बदनाम हो जाय और चाहे प्राण चले जायं किन्तु जो पुरुष ऐसे आपत्ति काल में भी अपने सिद्धान्तों को नहीं छोड़ता वही शूरवीर पुरुष है। लोग उसकी बातों का विश्वास करते हैं, मरने के बाद उसका नाम आदर के साथ लेते हैं और देवता की तरह उसकी पूजा करते हैं।

फरवरी २४

मनुष्य का असली जीवन आध्यात्मिक होता है जो भीतर रहता है। उसे हम देख नहीं सकते। उसे भोजन भीतर से मिलता है, बाहर से नहीं। इन्द्रियों के द्वारा उसकी आभा बाहर प्रकाशित होती है। जब यह आभा धूमिल होने लगती है तो उसे शक्ति फिर भीतर से ही मिलती है। मनुष्य जब भीतरी शान्ति को छोड़ कर इन्द्रियों के भोगों में लिप्त हो जाता है तो वह दुखी होता है। जब उसका दुख असह्य हो जाता है तब वह फिर इन्द्रियों के भोगों को छोड़ कर अपने भीतर शरण लेता है जहाँ उसे शान्ति मिलती है।

फरवरी २५

विश्व प्रेम से तुम्हारा परम कल्याण हो सकता है। उस पर शान्ति से मन लगा कर विचार करो और उसे विस्तार के साथ अच्छी तरह समझ लो। उसका प्रयोग अपने कामों में, अपनी बातचीत में, अपने व्याख्यानों में, अपनी इच्छाओं में और जीवन की सभी बातों में करो। ऐसा करते-करते जब तुमको विश्व-प्रेम का पूर्णरूप से अनुभव हो जायगा तो तुम्हारे चारित्रिक दोष समाप्त हो जायँगे और तुम उसे बराबर बढ़ाने की इच्छा करते रहोगे। एक बार जब तुम इस अमिट और अद्वितीय 'विश्वप्रेम' रस को चख लोगे तो तुम्हारी सारी कमजोरियाँ दूर हो जायँगी; और तुम अशान्ति के कीचड़ से बाहर निकल कर पूर्ण शान्ति का आनन्द लेने लगोगे।

फरवरी २६

जिस प्रकार शक्ति प्राप्त करने के लिये शरीर को बीच-बीच में आराम करने की आवश्यकता होती है उसी प्रकार जीवात्मा को भी फिर से शक्ति प्राप्त करने के लिये एकान्त की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार शरीर के हित के लिये सोने की जरूरत है उसी प्रकार मनुष्य की आत्मिक उन्नति के लिये एकान्त की जरूरत है। शरीर के लिये जिस प्रकार फुर्ती की जरूरत है उसी प्रकार जीवात्मा को पवित्र विचार और ध्यान की जरूरत है जो उसे एकान्त में मिलते हैं। जिस प्रकार आवश्यक आराम और निद्रा न मिलने से शरीर बेकाम हो जाता है उसी प्रकार आवश्यक एकान्त न मिलने से जीवात्मा कमजोर हो जाता है। मनुष्य आध्यात्मिक प्राणी है इसलिये वह जब तक कभी-कभी संसार से अलग होकर एकान्त में परमात्मा का ध्यान न करेगा तब तक वह बराबर अपनी ताकत, अपनी सचाई और अपनी शान्ति को कायम न रख सकेगा।

फरवरी २७

जिनमें अपने और पराये का भेदभाव अधिक है और जो माया के फेर में विशेष रूप से पड़े हुए हैं वे यही सोचा करते हैं कि ईश्वरीय प्रेम हमारी पहुँच के बाहर है और हमेशा बाहर रहेगा क्योंकि उसका सम्बन्ध ईश्वर से है। बात ठीक है किन्तु जब हृदय और मन पद्‌विकारों से खाली हो जाते हैं तो उनमें ईश्वरीय प्रेम स्थायी रूप से रहने लगता है।

ईश्वरीय प्रेम प्रभु ईसा का ही प्रेम है—जिसकी चर्चा तो बहुत की जाती है किन्तु उसे लोग समझते कम हैं। यह ईश्वरीय प्रेम जीवात्मा के पापों को धो डालता है और उसे प्रलोभनों से बचाता है।

फरवरी २८

यदि मनुष्य को अपने हृदय में शान्ति नहीं मिलती तो फिर उसे कहीं भी नहीं मिल सकती। यदि वह एकान्त में रहने से डरता है तो उसे फिर साथियों के बीच शान्ति कहाँ मिल सकती है? यदि वह अपने ही विचारों में निमग्न होकर आनन्द का अनुभव नहीं कर सकता तो दूसरों के सम्पर्क में उसे आनन्द कहाँ मिल सकता है। यदि मनुष्य को अपने भीतर शान्ति नहीं मिलती तो बाहर उसे कोई शान्ति नहीं दे सकता। अपने बाहर परिवर्तन है विनाश है और भय है, किन्तु अपने भीतर निर्भयता और आनन्द है। आत्मा पहले तो स्वयं मुक्त है किन्तु यदि उसे किसी वस्तु की आवश्यकता ही हो तो उसके भीतर सब कुछ भरा हुआ है। तुम्हारा अनादि स्थान तुम्हारे भीतर ही है।

फरवरी २९

जब तक तुम देवताओं और मनुष्यों की सहायता की बाट जोहते रहोगे तब तक तुम न तो अपने को स्वतन्त्र कर सकते हो और न तुम्हें शान्ति ही मिल सकती है। स्वावलम्ब ही तुम्हारा एकमात्र आधार होना चाहिये। स्वावलम्ब को घमंड न समझ लेना। जो घमंड करता है उसका पतन पहले से ही निश्चित है। घमंडी पुरुष ही सहायता के लिये दूसरों का मुंह देखा करता है। उसका सुख दूसरों के हाथ में रहता है। किन्तु स्वावलम्बी पुरुष अपने व्यक्तित्व का घमंड नहीं करता। वह अपने भीतर एक अचल सिद्धान्त की चट्टान पर खड़ा रहता है। उसी पर खड़ा हुआ वह आनन्द लेता रहता है। उसको न तो भीतर के पद्‌विकार हिला डुला सकते हैं और न बाहर के लोगों की आलोचना के तूफ़ान।

मार्च १

मनुष्य का जैसा हृदय होता है वैसा ही उसका जीवन होता है। जो भीतर रहता है वह बराबर बाहर निकलता रहता है। भीतर कोई चीज छिपी नहीं रह सकती। यदि कोई चीज छिपी है तो केवल थोड़े समय के लिये, वह भी पक कर बाहर निकल आती है। संसार के चार क्रम होते हैं (१) बीज (२) वृक्ष (३) फूल और (४) फल। जिस प्रकार बीज से वृक्ष, वृक्ष से फूल और फिर फूल से फल उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार हृदय से जीवन की परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। जीवन की परिस्थितियों से मनुष्य के विचार उत्पन्न होते हैं और विचारों से मनुष्य काम करता है तथा अपने भाग्य का निर्माण करता है।

जीवन अपने को भीतर से बाहर प्रकाशित करता रहता है और हृदय में जो विचार गुप्त होते हैं हमारे वचनों, कर्मों और उनके फलों द्वारा बाहर निकला करते हैं।

मार्च २

मनुष्य को समझ लेना चाहिए कि उसका संपूर्ण जीवन मन से बनता है और सुख का मार्ग उसके लिये हमेशा खुला हुआ है। ऐसा समझ लेने पर उसको विश्वास हो जायगा कि उसमें मन को वश में करने की शक्ति मौजूद है और जैसा वह चाहे वैसा अपने मन को बना सकता है। इस प्रकार मजबूती के साथ वह उन विचार वीथियों में कदम रक्खेगा और उन कामों को करेगा जो बहुत ही उत्कृष्ट होंगे। उसका जीवन बहुत ही सुन्दर और पवित्र होगा और कभी न कभी वह अपनी बुराइयों, व्यग्रताओं और दुखों को दूर कर सकेगा। उस मनुष्य को प्रकाश, शांति और मोक्ष मिलना कठिन है जो अपने हृदय की चौकसी-दारियारी और परिश्रम के साथ नहीं करता।

मार्च ३

बार बार के अनुभव से ज्ञान प्राप्त करना मन का स्वभाव है। प्रारम में जिस विचार को पकड़ना और मन में रखना कठिन होता है वही विचार बार-बार मन में लाने से उसी में वह घर बना लेता है। जिस प्रकार कोई बालक जब सौदागरी करना सीखता है तो यंत्रों को ठीक-ठीक पकड़ भी नहीं सकता किन्तु बार-बार उनको पकड़ने से वह उन्हें बहुत तेज और सफाई से इस्तेमाल करने लगता है, उसी प्रकार प्रारंभ में मन के लिये ईश्वर की साधना करना असंभव सा लगता है किन्तु अध्यवसाय और सभ्यता से उसकी ऐसी हालत हो जाती है कि वह अपने को सर्वथा साधना के योग्य बना लेता है।

मनुष्य अपने मन की शक्ति के द्वारा अपनी आदतों और परिस्थितियों को सुधार लेता है जिससे वह अपने को मोक्ष का अधिकारी बना लेता है। इसके अलावा आत्मसंयम द्वारा वह अपने को पूर्ण स्वतन्त्र भी बना लेता है।

मार्च ४

मनुष्य के सारे जीवन का संचालन उसका मन करता है। मन आदतों का एक समूह होता है जिन्हें वह परिश्रम करके जितना चाहे सुधार सकता है और उन पर अपना पूर्ण अधिकार कर सकता है। इस बात को यदि मनुष्य समझ जाय तो उसे वह कुंजी मिल सकती है जिसके द्वारा वह अपना पूर्ण मुक्ति का दरवाजा खोल सकता है।

किन्तु जीवन की बुराइयों (जिन्हें मन की बुराइयाँ ही समझना चाहिये) मनुष्य धीरे-धीरे दूर कर सकता है। इस काम के लिये शक्ति उसे भीतर से मिलती है बाहर से नहीं। प्रतिक्षण और प्रतिदिन मनुष्य को अपने मन में निर्दोष विचारों को स्थान देना चाहिये और अपनी नियत हमेशा ठीक और सात्विक रखनी चाहिये। इस प्रकार वह आदर्श जीवन बनाने का अपना स्वप्न पूरा कर सकेगा।

मार्च ५

मनुष्य के सभी कर्तव्य पवित्र होते हैं। उन्हें सचाई और निस्स्वार्थ भाव से पालन करने का अभ्यास करना चाहिये। कर्तव्य पालन में व्यक्तिगत स्वार्थ का किंचित् अंश भी न होना चाहिये। जब ऐसा हो जायगा तो हमको अपने कर्तव्य में दुःख नहीं, सुख मिलेगा। कर्तव्य पालन में दुःख उसे मिलता है जिसके हृदय में निजी स्वार्थ भाव रहता है। यदि मनुष्य गम्भीरता पूर्वक विचार करे तो उसे मालूम होगा कि कर्तव्य पालन में दुःख नहीं होता, दुःख तो उसे निजी स्वार्थ के कारण होता है। जो अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, सार्वजनिक हो या घरेलू, तो उसका चरित्र बिगड़ जाता है और जिसे कर्तव्य शब्द सुनकर बुखार चढ़ता है उसका चरित्र तो बिलकुल नष्ट हो जाता है।

मार्च ६

मनुष्य के ऊपर जो बीतती है, उसकी जिम्मेदारी उसी पर है। वह जिस दुर्भाग्य का मारा-मारा इधर उधर घूमता फिरता है और जिसे वह न तो अपने पुरुषार्थ से और न ईश्वर की प्रार्थना से बदल सकता है, वह दुर्भाग्य उसी का बनाया हुआ है। उसने जो बुरे कर्म किये हैं उन्हीं का कठोर दण्ड वह पा रहा है। जो सुख और दुःख उसके पास अपने आप आ जाते हैं, वे उसके किये हुये कर्मों के अच्छे या बुरे फल हैं।

मनुष्य के कर्म एक-एक करके बराबर जमा होते जा रहे हैं और वह उन्हीं में फँसता जा रहा है। उसका जीवन ही कारण और कर्म के ताने बाने से बना हुआ है। वही बोता है और स्वयं काटता भी है। उसका प्रत्येक कर्म कारण है, जिसका फल उसे अवश्य मिलता है। वह कार्य तो करता है जिसमें वह स्वतन्त्र है किन्तु उसके परिणाम को वह बदल नहीं सकता और न खराब काम करके अच्छा फल पा सकता है; क्योंकि वह इसमें पराधीन है। इसी का नाम भाग्य है। जिस शक्ति से वह काम करता, उसे स्वतन्त्र बुद्धि और उस काम के परिणाम को भाग्य कहते हैं।

मार्च ७

सारे पाप अज्ञान से उत्पन्न होते हैं। अन्धकार-पूर्ण और अशिक्षित मस्तिष्क की अवस्था ही अज्ञान है। जीवन के स्कूल में गलत सोचने वाले और गलत काम करने वालों की वही स्थिति होती है, जो एक छोटे विद्यार्थी की किसी विद्यालय में। उस मनुष्य को अभी यह सीखना है कि वह ईश्वरीय नियम के अनुसार किस प्रकार सोचे और किस प्रकार काम करे। जिस प्रकार विद्यालय के विद्यार्थी को यह सीखना है कि वह अपना पाठ किस प्रकार याद करे। वह विद्यार्थी उस समय तक दुखी रहता है जब तक वह विधि पूर्वक पाठ याद नहीं करता। जब उसे अपने पाठ की परिपाटी मालूम हो जाती है तब वह सुखी हो जाता है। उसी प्रकार मनुष्य को ठीक रीति से सोचने और काम करने की विधि जब मालूम हो जाती है तब वह सुखी हो जाता है।

जीवन में अनेक पाठ पढ़ने पड़ते हैं। कुछ उनको बड़े परिश्रम से याद करते हैं। इसलिए वे पवित्र, बुद्धिमान और सुखी होते हैं किन्तु कुछ लोग अपनी असावधानी के कारण उन्हें नहीं याद करते, इसलिये वे अपवित्र, मूर्ख और दुखी रहते हैं।

मार्च ८

जब मन में लाभ अधिक रहता है और जब मन का उस पर अपना बिल्कुल अधिकार नहीं होता तब हममें स्वार्थ बुद्धि उत्पन्न होती है। इससे हमें अपने मन के उत्कृष्ट और निकृष्ट विचारों का पता भी चल जाता है। मन की खराबी उस समय और भी अधिक बढ़ जाती है जब हम दूसरों के स्वार्थ की टीका-टिप्पणी करते हैं और इस कारण उनसे ईर्ष्या करने लग जाते हैं। जो मनुष्य दूसरों के स्वार्थ की टीका-टिप्पणी करता है वह अपने स्वार्थ को दूर नहीं कर सकता। अपने को शुद्ध करके ही हम अपने स्वार्थ से बच सकते हैं। हम अपने ऊपर पूर्ण नियंत्रण

रखने से ही शान्ति प्राप्त कर सकते हैं, दूसरों के सिर पर दोष मढ़ने से नहीं। दूसरों के स्वार्थ को कुचलने की प्रबल इच्छा से हम नरक कुण्ड में गिरते हैं और दृढ़ता के साथ अपने स्वार्थ पर विजय प्राप्त करने से हम स्वर्ग को पहुँचते हैं।

मार्च ९

महत्त्वाकांक्षा के परों के सहारे ही मनुष्य पृथ्वी से आकाश को उठता है, अयोग्य से योग्य बनता है और अँधेरे से उजेले में आता है। बिना महत्त्वाकांक्षा के वह जीवन भर अयोग्य और अशान्त बना रहता है।

स्वर्गीय चीजों के प्राप्त करने की इच्छा को महत्त्वाकांक्षा कहते हैं जैसे—सच्चाई, दया, पवित्रता और प्रेम। सांसारिक चीजों के प्राप्त करने की अभिलाषा को इच्छा कहते हैं जैसे—धन-दौलत, कीर्ति, विषय वासना और इन्द्रिय भोग। जो स्वर्गीय चीजों के प्राप्त करने की इच्छा करता है वह सांसारिक चीजों से घृणा करता है। ऊँचे उठने का निश्चित चिन्ह यह है कि मनुष्य संसार के विषय भोग से मुँह मोड़ ले और जीवन को सुखी बनाने के लिये सच्चाई और प्रेम आदि लाभदायक श्रेष्ठ गुणों को प्राप्त करे।

मार्च १०

जब महत्त्वाकांक्षा का आनन्द मन को स्पर्श करता है तो उसे वह शुद्ध कर देता है और उसकी गन्दगी दूर होने लगती है। महत्त्वाकांक्षा का प्रभाव जब तक मन में रहता है तब तक गन्दगी उसमें नहीं आ सकती क्योंकि पवित्रता और गन्दगी एक साथ नहीं रह सकती। किन्तु स्मरण रहे कि महत्त्वाकांक्षा का प्रभाव बहुत दिन तक जारी नहीं रहता। मन अपनी पुरानी बुरी आदतों की ओर फिर वापस चला आता है। इसलिये उसे बराबर स्वच्छ करते रहना चाहिये।

सच्चाई के लिये लालायित रहना पवित्र जीवन की उत्कंठा करना और ईश्वर प्राप्ति की उत्कृष्ट इच्छा रखना बुद्धिमानी का गूढ़ रास्ता है; यही शान्ति के लिये प्रयत्न है यही दिव्य मार्ग का प्रारम्भ है।

मार्च ११

हम जब अपने मन से स्वार्थ को निकाल देते हैं और जब हम प्रेम भरे भावों से दूसरों की ओर देखते हैं तब हमें आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है और हम अपने को बिल्कुल बदल कर नये होने का अनुभव करते हैं। उस समय मन से भोगों की इच्छा समूल नष्ट हो जाती है किन्तु भोग का विचार बना रहता है। यह विचार बदल कर धीरे-धीरे शुद्ध हो जाता है और शक्ति के रूप में नवीन रूप धारण कर लेता है। पंचभूतों की तरह मन में शक्ति भरी हुई है। यह शक्ति ।जो पाप में लगी रहती थी, वहाँ से हटकर आध्यात्मिक जगत में संचित हो जाती है।

मार्च १२

दिव्य जीवन प्राप्त करने के लिये अपनी प्रकृति को बिलकुल बदल देना [भी महान त्याग है। पुराने विकार, पुरानी इच्छायें और पुराने विचार सब हमसे छूट जाते हैं और उनके स्थान में अच्छी भावनायें उत्कृष्ट इच्छायें और पवित्र विचार उत्पन्न हो जाते हैं जो अधिक टिकाऊ होते हैं और जिनसे हमको पूरा-पूरा संतोष प्राप्त होता है। जिस प्रकार बहुत समय तक संदूक में बन्द रहने के कारण कीमती रत्न मैले हो जाते हैं किन्तु जब उन्हें हम उबलते पानी में डाल कर साफ कर लेते हैं तो उनका रूप ही बदल जाता है, उसी प्रकार आध्यात्मिक कीमियागर को पुरानी आदतों और पुराने विचारों को छोड़ने से पहिले कष्ट होता है किन्तु जब उन्हें वह छोड़ देता है और उनके स्थान में उसे नई बुद्धि, असाधारण शक्ति तथा चमकीले सुन्दर आध्यात्मिक रत्न मिलते हैं तो उसे अपार आनन्द होता है।

मार्च १३

जब एक नेक मनुष्य को यह ज्ञात हो जाता है कि ईश्वरीय नियम सब पर लागू है और उसके सारे काम ईश्वरीय न्याय के आधार ही पर हुआ करते हैं तब वह घृणा क्रोध असन्तोष को छोड़ देता है और अपने शत्रु से भी प्रेम करने लगता है। वह समझता है कि जो मैंने किया है उसका फल तो मुझे अवश्य ही मिलेगा और मेरे शत्रु मुझे कदापि न छोड़ेंगे। वह उनको दोषी नहीं ठहराता। उसने जो कुछ किया है उसके फल को वह शान्ति के साथ भोगता है। वह इस बात का ख्याल भी रखता है कि अब मैं ऐसा कोई खराब काम न करूँगा कि मुझे भविष्य में उसका फल भोगना पड़े। वह बराबर अपने कामों की देखभाल रखता है और उन्हें उत्कृष्ट बनाता है।

मार्च १४

बिना ईश्वर की आज्ञा के कुछ नहीं होता। जहां किस चीज की परछाईं है वहां वह चीज भी होती है। मनुष्य के जीवन में जो कुछ भी होता है वह उसके कामों का फल है। जिस प्रकार परिश्रम करके मनुष्य व्यवसाय में जब लाभ उठाता है तो वह उससे भी बड़ा रोजगार करता है और उसकी उत्तरोत्तर बढ़ती होती जाती है किन्तु जो बेमन से और सुस्ती के साथ व्यवसाय करता है उसका काम ढीला होता जाता है और उसे हानि उठानी पड़ती है। इसी प्रकार मनुष्य की भिन्न भिन्न अवस्थायें उसके अच्छे और बुरे कामों से बनती हैं। मनुष्य अपने विचारों और कामों से अपने भाग्य का निर्माण करता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के जो मनुष्य हमें दिखाई पड़ते हैं उनके चरित्र उनके वर्तमान जीवन के काम से ही नहीं बने प्रत्युत उनके पूर्व जन्मों में उन्होंने जो काम किये थे उनके फल भी उनके इसी जीवन में निहित हैं। इस जीवन के बाद भी मनुष्य जब भविष्य में फिर जन्म लेता है तो वह अपने कामों के मीठे और कड़वे फलों को साथ लेता जाता है और उन्हीं के अनुसार उसको सुख या दुख मिलता है।

मार्च १५

मनुष्य विचार करने वाला प्राणी है। उसका जीवन और उसका चरित्र उन विचारों से बनता है जो उसके मन में आते रहते हैं। अभ्यास, संगति और आदत से विचार बारबार बड़ी आसानी से आते रहते हैं जिससे एक विशेष प्रकार का चरित्र निर्मित होता है। बारबार करने से जो काम अपने आप होने लगता है उसे आदत कहते हैं। पवित्र विषयों पर प्रतिदिन विचार करने से ध्यान करने वाला मनुष्य पवित्र और उत्कृष्ट विचारों की आदत डालता है जिससे पवित्र, व्यवस्थित और उत्कृष्ट काम होते हैं। पवित्र विचारों के दोहराने से मनुष्य के मन में हमेशा पवित्र विचार ही रहते हैं जिनसे प्रेरित होकर वह उत्कृष्ट काम करता है।

मार्च १६

मनुष्य के लिये वह दिन धन्य है जब उसे यह ज्ञान हो जाता है कि अपना उद्धारक मैं स्वयं हूँ, सुख-दुख, ज्ञान अज्ञान, शान्ति-अशान्ति और ईश्वरीय प्रकाश तथा अंधेरा सब अपने हृदय में ही हैं। स्वार्थपूर्ण विचार, पतन की ओर ले जानेवाली इच्छायें और बेईमानी के काम हानिप्रद बीज हैं जिनसे दुख के पौधे पल्लवित होते हैं; निस्वार्थ विचार उच्च महत्वाकांक्षायें तथा ईमानदारी के काम ऐसे लाभप्रद बीज हैं जिनसे सुख के पौधे लहलहा उठते हैं।

मार्च १७

जो अपनी जीभ पर अधिकार रखता है वह एक बलशाली बुद्धिमान वकील से कहीं बड़ा है। जो मन को जीत लेता है वह कई राष्ट्रों के राष्ट्रपति से कहीं अधिक शक्तिशाली है और जो अपने ऊपर पूर्ण संयम कर लेता है वह देवताओं और देवदूतों से भी महान् है। अपने ही बनाये हुए विषय के जाल में फँसा हुआ मनुष्य जब अनुभव करता है कि इस जाल से मैं स्वयं निकल सकता हूँ तब उसमें ईश्वरीय तेज आ जाता है और वह गुलामी से पिंड छुड़ा कर संसार का सम्राट बन जाता है।

मनुष्य जब तक उपर्युक्त बातों का अनुभव नहीं करता और जब तक वह अपने जीवन को पवित्र नहीं बना लेता तब तक उसे चिरस्थायी शान्ति नहीं मिल सकती।

मार्च १८

यदि तुम कम से कम एक घंटा प्रतिदिन ऊँचे ऊँचे नैतिक विषयों पर ध्यान लगाओ और उन पर अपने दैनिक जीवन में अमल करो तो धीरे-धीरे तुम्हें अपार शक्ति मिलेगी और तुम्हारे ज्ञान तथा विचार शक्ति की वृद्धि होगी। इन मामलों में शीघ्रता न करो। अपने कर्तव्य का पालन सचाई से करो। मनोविकारों को दूर करो और नैतिकता तथा आध्यात्मिकता का सहारा लेकर काम करो। स्मरण रखो ऐसा करने से तुम को अपने उद्देश्य में सिद्धि अवश्य मिलेगी।

मार्च १६

प्रत्येक मनुष्य के हृदय में दो राजा हैं। एक राजा अनधिकारी और हस्ताय होता है। उसका नाम अहंकार है। वह विषयी है और घृणा करता है। वह क्रोधी है और झगड़ा करता है। दूसरा राजा अधिकारी होता है। उसका नाम सत्य है। उसके विचार और काम बड़े पवित्र होते हैं। वह प्रेम करता है। उसकी प्रकृति बहुत ही शान्त है।

भाइयों और बहिनों, तुम किस राजा के सामने अपना मस्तक झुका आगे? तुमने किस राजा को अपने हृदय में मान्यता दे रक्खी है? तुम्हारी आत्मा कहेगी, "मैं 'सत्य' राजा के सामने सिर झुकाती हूँ मैं शान्ति के राजा के सिर पर मुकुट रखती हूँ," वह पुरुष धन्य है जो अपने हृदय में धार्मिक राजा को स्थान देता है और उसी की पूजा करता है।

मार्च २०

जिस शक्ति को हम अपनी समझदारी से प्राप्त करते हैं वह ऐसी होती है जिसको जीवन की कोई घटना या कोई विषम परिस्थिति नष्ट नहीं कर सकती। वह शान्ति सदास्थायी नहीं होती क्योंकि बहुत सोच-विचार कर हमने उसे प्राप्त की है। साधारण मनुष्यों को ऐसी शान्ति नहीं मिलती क्योंकि वे अपने ही मनोविकारों में फँसे रहते हैं। इसलिए उन्हें उस शान्ति का ज्ञान ही नहीं होता। जब वे अपने मनोविकारों को ही नहीं हटा सकते तो उनको ऐसी शान्ति मिल कैसे सकती है?

मार्च २१

हमारे सारे दुःख और सारे कष्ट या तो हमारे ही अज्ञान और हमारे ही बुरे कर्मों से उत्पन्न हुए हैं या बाहरी परिस्थितियों के कारण पैदा हो गये हैं अथवा दूसरे लोगों ने उन्हें पैदा कर दिया है।

स्मरण रक्खो, हमारे दुःख बिलकुल ठीक हैं। उन्हें हमने अपनी मूर्खता, अपनी भूल और अपने ही खराब कर्मों से पैदा किया है।

तुम्हें कोई दूसरा दुःखी नहीं करता। तुम स्वयं अपने को दुःखी करते हो। यदि तुम बुरा काम करो और उसका फल कोई दूसरा भोगे तो फिर ईश्वरीय नियम हो कैसा ? याद रक्खो, दुनिया के सारे काम एक ईश्वरीय नियम से चलते हैं। यदि उसके अनुसार काम न हो तो यह जगत एक मिनट भी कायम नहीं रह सकता। चारों ओर हाहाकार मच जायगा। देखने में तो यही मालूम होता है कि दूसरों के कारण हमें दुःख मिलता है किन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। गम्भीरतापूर्वक विचार करने से इसकी सचाई मालूम हो जाती है।

मार्च २२

मनुष्य इसलिए दुःख झेलते हैं कि उनमें अपना स्वार्थ भरा हुआ है। वे न तो स्वार्थहीन जीवन व्यतीत करना चाहते हैं और न धर्मात्मा ही बनना चाहते हैं, इसलिए वे अपने माया-मोह के कीचड़ में जीवन भर फँसे रह कर दुःख उठाते हैं। धर्मात्मा बनने के लिए मनुष्य पूर्णतया स्वतन्त्र है। उसकी इस स्वतंत्रता को कोई छीन नहीं सकता। एक गुलाम इस स्वतंत्रता का उतना ही अधिकारी है जितना एक राजा। जो इस स्व-तन्त्रता को प्राप्त कर लेता है वह अपनी बेड़ियों को काट कर फेंक देता है। इसके बल पर एक गुलाम अपने मालिक के चंगुल से निकल सकता है। इस स्वतंत्रता के बल पर एक राजा अपनी विलासिता को छोड़ कर एक सच्चा राजा बन सकता है।

मार्च २३

बुद्धिमान मनुष्य ज्ञानी होता है चिंता, भय, निराशा और दुख उसके पास नहीं आ सकते। वह चाहे जिस परिस्थिति में रहे उसकी शान्ति भङ्ग नहीं होती। वह प्रत्येक वस्तु को अपनी बुद्धि और योग्यता से तोड़ मरोड़ कर अपने अनुकूल बना लेता है। उसको किसी वस्तु से शोक नहीं होता। जब उसके मित्र इस पाँच भौतिक शरीर को छोड़ते हैं तो वह शोक नहीं करता, क्योंकि उसका विश्वास है कि उसके मित्र मरे नहीं, उन्होंने केवल अपना चोला बदल लिया है। उसको कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता, क्योंकि उसने अपने को उस ईश्वर में मिला दिया है जिस पर हानि और लाभ का कोई असर नहीं पड़ता।

ईश्वरीय ज्ञान से ही मनुष्य को शान्ति मिलती है और यह ज्ञान नेकी, सदाचार तथा प्राणिमात्र में ईश्वर का प्रतिबिम्ब देखने से ही मिलता है। जिसको यह ज्ञान मिल जाता है वह अमर हो जाता है।

मार्च २४

शरीर चापलूसी करता है आत्मा चापलूसी नहीं करती। शरीर आँख बन्द करके विषयों का आनन्द लेता है, आत्मा विवेक के साथ अपने ऊपर नियन्त्रण रखती है।

शरीर एकान्त स्थान पसंद करता है, आत्मा का एकान्त स्थान पसन्द नहीं है, यह सबके सामने बातचीत करती है।

शरीर अपने ऊपर किये हुए अत्याचार को याद रखता है, आत्मा भारी से भारी शत्रु का भी क्षमा कर देती है।

शरीर कोलाहल करने वाला और असभ्य होता है, आत्मा शान्त और सभ्य होती है।

शरीर का रुख पल-पल में बदलता रहता है, आत्मा हमेशा एकरस रहती है।

शरीर में अधैर्य और क्रोध होता है, आत्मा में धैर्य और गम्भीरता होती है।

शरीर विचारहीन होता है, आत्मा विचारशील होती है।

मार्च २५

'सत्य' की पहले कल्पना होती है और उसके बाद उसका अनुभव होता है। कल्पना क्षणिक हो सकती है और अनुभव अवगुणों का खोज खोज कर देखने के बाद धीरे-धीरे होता है किन्तु स्थाई होता है। अपने को एक बच्चा समझ कर तुम्हें प्रेम का पाठ पढ़ना चाहिये। जैसे-जैसे इस पाठ को पढ़ते हुए आगे बढ़ोगे वैसे तुम्हें अपने भीतरी दिव्य रूप का दर्शन होगा। प्रेम को ईश्वरीय गुण समझ कर और दिन प्रति दिन अपने मन, वचन तथा कर्म को ठीक करके तुम प्रेम का पाठ पढ़ सकते हो अपने ऊपर कड़ी दृष्टि रक्खो; जब तुम अपने मन, वचन और कर्म में स्वार्थ भाव देखो तो प्रतिज्ञा करो कि तुम भविष्य में निस्वार्थ भाव से काम लोगे। इस प्रकार के अभ्यास से तुम अत्यन्त पवित्र और नम्र हो सकोगे, दूसरों से प्रेम करने लगोगे और अन्त में तुम्हें अपने भीतर अपने दिव्य स्वरूप का दर्शन होने लगेगा।

मार्च २६

तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम अपनी कमियों को समझो और समझ कर उन्हें दूर करो। धीरे-धीरे तुम उनको दूर कर सकोगे और निस्वार्थ प्रेम के साथ फिर अपने कर्तव्य का पालन कर सकोगे। भविष्य को अन्धकारमय न देखो। यदि भविष्य को देखना ही चाहते हो तो उसे प्रकाशमय देखो। अपने कर्तव्य का पालन प्रति दिन हँस-हँस कर निस्वार्थ भाव से करते रहो। ऐसा करने से तुम प्रति दिन आनन्द और शान्ति का अनुभव करोगे और तुम्हारा भविष्य भी बड़ा सुखद होगा। अपनी कमियों को दूर करने का सबसे अच्छा मार्ग यह है कि हम अपने कर्तव्यों को स्वार्थ छोड़ कर सचाई के साथ दूसरों की प्रसन्नता का ख्याल रखते हुए करें, सबके साथ नेकी करें, सबसे मीठी बातें करें, और जब कोई हमारी बुराई करे तो उससे बदला न लें।

मार्च २७

सत्यव्रती पुरुष कोई काम छिपा कर नहीं करता और न वो मन में ऐसे विचार लाता है और न ऐसी इच्छा करता है जो वह दूसरों के लिए न चाहता हो इसलिए वह निर्भय और बेधड़क रहता है। उसका कदम पक्का होता है उसका शरीर सीधा होता है और उसकी वाणी स्पष्ट होती है। वह प्रत्येक से आँख मिला कर बातचीत करता है। जब वह कोई पाप ही नहीं करता तो किसी से डर कैसे सकता है? जब वह किसी को धोखा ही नहीं देता तो दूसरों से लज्जित किस प्रकार हो सकता है? जब वह दूसरों की हानि ही नहीं करता तो उसकी भी हानि कोई भला किस प्रकार कर सकता है? सम्भव नहीं कि असत्य सत्य पर हावी हो जाय, इसलिए सत्यव्रती पुरुष को कोई दुष्ट पुरुष नीचा नहीं दिखा सकता।

मार्च २८

जब कोई काम बिगाड़ता है तो कभी कभी हम उसके ऊपर क्रोध कर बैठते हैं और देखने में ऐसा मालूम होता है कि हमारा यह क्रोध उचित है, किन्तु यदि हम ऊँची दृष्टि से देखें तो हमें स्वयं यह क्रोध अनुचित मालूम होगा। अन्याय होते देख कर क्रोध करना किसी हद तक अच्छा है किन्तु उससे भी अच्छा यह है कि हम अन्याय को नम्रता और प्रेम से जीतें। नम्रता और प्रेम से हम अन्याय को क्रोध करने की अपेक्षा अधिक खूबी के साथ जीत सकते हैं। जिस मनुष्य के साथ अन्याय किया गया है उसके साथ हमें सहानुभूति करनी चाहिये किन्तु जिसने अन्याय किया है वह और भी अधिक हमारी सहानुभूति का पात्र है क्योंकि वह अपनी मूर्खता से अपने ऊपर दुख का पहाड़ रख रहा है। जैसा वह बो रहा वैसा वह काट रहा है।

मार्च २९

नेकी न तो कोई मुर्दा चीज है और न उसका अर्थ कमजोरी है। नेकी हृदय की खूबी है जिससे हमको शक्ति मिलती है। इसलिए न नेक आदमी कमजोर होता है और न कमजोर आदमी नेक होता है।

हमें बुराई की दृष्टि से दूसरों के चरित्र का अनुमान नहीं करना चाहिये। हमें परिणामों से स्वयं अपने चरित्र और चालचलन का अनुमान करना चाहिये। याद रक्खो, जो बुराई करता है उसे दुख मिलता है और भलाई करने वाला सुख पाता है।

यह सच है कि बुरे लोग समुद्र के किनारे के वृक्ष की तरह हरे-भरे रहते हैं किन्तु स्मरण रखना चाहिये कि किनारे का वृक्ष जल्दी ही उखड़ जाता है। बुरे लोगों की अन्त में यही दशा होती है।

मार्च ३०

मनुष्य-जाति के सच्चे उपदेशक बहुत ही कम होते हैं। हजार वर्ष के बाद भी सच्चा उपदेशक नहीं जन्म लेता। किन्तु जब एक सच्चा उपदेशक जन्म लेता है तो उसके ओजस्वी जीवन को देख कर लोग उसे पहचानते हैं। उसका आचरण दूसरों से भिन्न होता है। उसका उपदेश किसी धर्म पुस्तक या किसी महान पुस्तक के आधार पर नहीं होता किन्तु जो वह अपने जीवन में करता है उसी का अपने उपदेश में करता है। उपदेशक पहले स्वयं एक आदर्श जीवन व्यतीत करता है और फिर दूसरों को उपदेश करता है कि उन्हें उसी की तरह जीवन व्यतीत करना चाहिये। उसके उपदेश की पुस्तक उसका अपना जीवन ही होता है। उसके उपदेश का प्रमाण भी उसका अपना जीवन ही होता है। लाखों उपदेशकों में से किसी एक को मनुष्य जाति अपना सच्चा उपदेशक मानती है और जिस उपदेशक को मनुष्य जाति अपना उपदेशक मान लेती है वही अमर होकर इस जगत में जीवित रहता है।

मार्च ३१

महात्मा ईसा ने संसार को नियमों की एक पुस्तक दी। उन नियमों के अनुसार चलने से सब मनुष्य ईश्वर के बेटे बन सकते हैं और एक आदर्श जीवन व्यतीत कर सकते हैं। ये नियम इतने सादे, असली और सरल हैं कि कोई उन्हें समझने में गलती कर ही नहीं सकता। ये इतने स्पष्ट हैं कि एक अपढ़ बालक भी सरलता से उनके अर्थ को समझ सकता है। ये नियम मनुष्य के आचरण से सम्बन्ध रखते हैं जिन्हें वह अपने जीवन में करके दिखा सकता है। इन नियमों का समझना और उन्हें जीवन में बरतना ही हमारे जीवन का सम्पूर्ण कर्तव्य है। उन नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करने से मनुष्य को अपने दैवी स्वभाव का ज्ञान हो जाता है और फिर वह अपने को और अत्यन्त दयालु ईश्वर को एक समान देखने लगता है।

अप्रैल १

जो कुछ मनुष्य सोचता है, जो काम वह करता है, जिस अवस्था में वह अपने मन को रखता है और जिस प्रकार का वह जीवन व्यतीत करता है इन सब की जिम्मेदारी उसी पर है, कोई शक्ति, कोई घटना, और कोई परिस्थिति उससे बुराई नहीं करा सकती। वह स्वयं सोचता है और अपनी इच्छा से ही वह काम करता है। कोई भी प्राणी कितना ही बुद्धिमान क्यों न हो, यहाँ तक कि ईश्वर भी किसी को नेक और सुखी नहीं बना सकता। मनुष्य स्वयं नेक काम करता है और उससे सुखी होता है।

ऐसा यशस्वी जीवन उन लोगों को नहीं मिलता जो विषयों में फँसे हुए हैं। वह तो उन्हीं लोगों को मिलता है जिनमें उसकी लालसा होती है, जो उसे प्राप्त करने की कोशिश करते हैं तथा जिनको ईमानदारी से उतना ही प्रेम होता है जितना प्रेम कंजूस को अपने धन से होता है। वह सबके चारों ओर मंडरा रहा है और सबकी पहुँच के भीतर है। वे धन्य हैं जो उसे पकड़ कर अपनी छाती से लगाते हैं। ऐसे पुरुष सत्य के लोक में प्रवेश करते हैं और ऐसे ही लोगों को पूर्ण शान्ति मिलती है।

मार्च २९

नेकी न तो कोई मुर्दा चीज है और न उसका अर्थ कमजोरी है। नेकी हृदय की खूबी है जिससे हमको शक्ति मिलती है। इसलिए न नेक आदमी कमजोर होता है और न कमजोर आदमी नेक होता है।

हमें बुराई की दृष्टि से दूसरों के चरित्र का अनुमान नहीं करना चाहिये। हमें परिणामों से स्वयं अपने चरित्र और चालचलन का अनुमान करना चाहिये। याद रक्खो, जो बुराई करता है उसे दुःख मिलता है और भलाई करने वाला सुख पाता है।

यह सच है कि बुरे लोग समुद्र के किनारे के वृक्ष की तरह हरे भरे रहते हैं किन्तु स्मरण रखना चाहिये कि किनारे का वृक्ष जल्दी ही उखड़ जाता है। बुरे लोगों की अन्त में यही दशा होती है।

मार्च ३०

मनुष्य-जाति के सच्चे उपदेशक बहुत ही कम होते हैं। हजार वर्ष के बाद भी सच्चा उपदेशक नहीं जन्म लेता। किन्तु जब एक सच्चा उपदेशक जन्म लेता है तो उसके ओजस्वी जीवन को देख कर लोग उसे पहचानते हैं। उसका आचरण दूसरों से भिन्न होता है। उसका उपदेश किसी धर्म पुस्तक या किसी महान पुस्तक के आधार पर नहीं होता किन्तु जो वह अपने जीवन में करता है उसी को अपने उपदेश में कहता है। उपदेशक पहले स्वयं एक आदर्श जीवन व्यतीत करता है और फिर दूसरों को उपदेश करता है कि उन्हें उसी की तरह जीवन व्यतीत करना चाहिये। उसके उपदेश की पुस्तक उसका अपना जीवन ही होता है। उसके उपदेश का प्रमाण भी उसका अपना जीवन ही होता है। लाखों उपदेशकों में से किसी एक को मनुष्य जाति अपना सच्चा उपदेशक मानती है और जिस उपदेशक को मनुष्य जाति अपना उपदेशक मान लेती है वही अमर होकर इस जगत में जीवित रहता है।

मार्च ३१

महात्मा ईसा ने संसार को नियमों की एक पुस्तक दी। उन नियमों के अनुसार चलने से सब मनुष्य ईश्वर के बेटे बन सकते हैं और एक आदर्श जीवन व्यतीत कर सकते हैं। ये नियम इतने सादे, असली और सरल हैं कि कोई उन्हें समझने में गलती कर ही नहीं सकता। वे इतने स्पष्ट हैं कि एक अपढ़ बालक भी सरलता से उनके अर्थ को समझ सकता है। वे नियम मनुष्य के आचरण से सम्बन्ध रखते हैं जिन्हें वह अपने जीवन में करके दिखा सकता है। इन नियमों को समझना और उन्हें जीवन में बरतना ही हमारे जीवन का सम्पूर्ण कर्तव्य है। उन नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करने से मनुष्य को अपने दैवी स्वभाव का ज्ञान हो जाता है और फिर वह अपने को और अत्यन्त दयालु ईश्वर को एक समान देखने लगता है।

अप्रैल १

जो कुछ मनुष्य सोचता है, जो काम वह करता है, जिस अवस्था में वह अपने मन को रखता है और जिस प्रकार का वह जीवन व्यतीत करता है इन सब की जिम्मेदारी उसी पर है; कोई शक्ति, कोई घटना, और कोई परिस्थिति उससे बुराई नहीं करा सकती। वह स्वयं सोचता है और अपनी इच्छा से ही वह काम करता है। कोई भी प्राणी कितना ही बुद्धिमान क्यों न हो, यहाँ तक कि ईश्वर भी किसी को नक और सुर्गा नहीं बना सकता। मनुष्य स्वयं नेक काम करता है और उससे सुखी होता है।

ऐसा यशस्वी जीवन उन लोगों को नहीं मिलता जो विषयों में फँसे हुए हैं। वह तो उन्हीं लोगों को मिलता है जिनमें उसकी लालसा होती है, जो उसे प्राप्त करने की कोशिश करते हैं तथा जिनको ईमानदारी से उतना ही प्रेम होता है जितना प्रेम कंजूस को अपने धन से होता है। वह सबके चारों ओर मंडरा रहा है और सबकी पहुँच के भीतर है। वे धन्य हैं जो उसे पकड़ कर अपनी छाती से लगाते हैं। ऐसे पुरुष सत्य के लोक में प्रवेश करते हैं और ऐसे ही लोगों को पूर्ण शान्ति मिलती है।

अप्रैल २

मनुष्य का जीवन नपा तुला होता है, उसके विचार नपे तुले होते हैं, और उसके काम भी नपे तुले होते हैं। अपने चारों ओर की उपयोगी वस्तुओं को जो छान-बीन करता है वह बुद्धिमान है। जो मनुष्य अपने को अपने मन और विचारों से भिन्न समझता है वह ठोकरें खा रहा है और प्रशस्त मार्ग में नहीं चल रहा है। जो निरुपयोगी वस्तुओं का अध्ययन करता है वह मूर्ख है।

मनुष्य अपने मन से नहीं अलग किया जा सकता। उसका जीवन उसके विचारों से अलग नहीं किया जा सकता। मन, विचार और जीवन एक दूसरे से उसी प्रकार अभिन्न हैं जिस प्रकार प्रकाश, चमक और रंग। इन बातों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिये क्योंकि ये अत्यन्त उपयोगी हैं और इनके मूल में ज्ञान भरा हुआ है।

अप्रैल ३

हृदय को शुद्ध करना, अच्छे-अच्छे विचार मन में लाना, और अच्छे अच्छे काम करना उत्कृष्ट गुण हैं जिनसे मनुष्य का चरित्र-निर्माण होता है। इससे मनुष्य की शक्ति बढ़ती है, उसका अधिक लाभ होता और अधिक सुख मिलता है।

महत्वाकांक्षा, ध्यान और भक्ति के द्वारा ही मनुष्य के मन में अच्छे विचार उत्पन्न होते हैं, उसे अधिक शांति मिलती है और उसकी योग्यता बढ़ती है। मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बनता है। मन में अच्छे अच्छे विचारों को भरने से मनुष्य का जीवन ही बदल जाता है और वह फिर न तो अन्धकार के गढ्ढे में गिरता है और न दुखी होता है।

अप्रैल ४

अज्ञानियों को आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता इसलिये वे साधारण विचारों के दास बने रहते है। किन्तु ज्ञानियों को आध्यात्मिक ज्ञान होता है इसलिये वे विचारों के स्वामी होते हैं। अज्ञानी आंखें मूँद कर अपने विचारों के पीछे पीछे चलता है और ज्ञाता बुद्धिमानी से विचारों को चुन-चुन कर उनके पीछे चलता है। मन में जो अंग्शंट आता है वही अज्ञानी करने लगता है। ज्ञानी मन को अपने अधिकार में रखता है और जो ठीक समझता है वही करता है। मन का दास होने से अज्ञानी सचाई के नियम को तोड़ देता है। ज्ञानी मन का स्वामी होने से सचाई के नियम का पालन करता है। ज्ञानी मुस्तैदी से जीवन संग्राम में डटा रहता है। उसको यह ज्ञान होता है कि उसको विचार धारा किधर को जा रही है। वह मनुष्य जीवन से संबंध रखने वाले ईश्वरीय नियम का समझता और उसका पालन करता है।

अप्रैल ५

ईश्वर की अपने ऊपर महान् कृपा समझनी चाहिये कि वह हमें बुरे कर्मों के लिये दंड देता है और अच्छे कामों के लिये इनाम। यदि हमें बुरे कामों का दंड न मिले तो हम आये दिन भगवान् का न तो स्मरण करें और न उनकी शरण ही में जायें। फिर तो हमारे अच्छे काम भी नष्ट हो जायेंगे और उनका कोई परिणाम भी न होगा। ऐसी योजना बहुत ही अहितकर होगी। वास्तव में ईश्वरीय नियम न्याय और दया से पूर्ण है। ईश्वर ठीक ही करता है जो वह कुकर्मी को दंड और सुकर्मी को इनाम देता है। हमारा हित इसी में है।

वास्तव में ईश्वरीय नियम अत्यन्त दयापूर्ण, निर्दोष और व्यापक है। उसमें प्रेम ही प्रेम भरा है जिसका गुणानुवाद इसाई और बौद्ध मुक्त कंठ से अपने ग्रंथों में कर रहे हैं।

अप्रैल ६

बुद्ध भगवान कर्मों के सिद्धान्त पर बड़ा जोर देते थे। जो लोग इस को बुरा कहते हैं वे उसके असली तत्व को नहीं समझते। उसमें न तो रत्ती भर बुराई है और न कड़ाई। यह वह निर्दय राक्षस भी नहीं है जो कमजोरों और मूर्खों को कुचल डालता है। यह प्रेम और दया का साक्षात् स्वरूप है। वह क्या निर्बल और क्या शूरवीर दोनों की रक्षा करता है। उसके भय से शूरवीर अपनी शक्ति का अनुचित प्रयोग दूसरों पर नहीं करते। इससे सारी बुराइयाँ दूर हो जाती हैं और भलाई सुरक्षित हो जाती है। यह छोटे से छोटे जीव की रक्षा करता है और गलत रास्ते पर चलने वाले बड़े से बड़े राक्षस को एक ही फूँक से नष्ट कर देता है। उसको समझ लेने से बड़ा सुख और बड़ी शांति मिलती है।

अप्रैल ७

मनुष्य जब अच्छाई की ओर कदम उठाता है तब उसमें विशेष परिवर्तन होने लगता है। उसकी बुराइयाँ कम हो जाती हैं और अच्छाइयाँ बढ़ती जाती हैं। उसके मन में एक विचित्र नवीन शक्ति पैदा हो जाती है। वह एक नया मनुष्य हो जाता है। जब उसकी ऐसी अवस्था हो जाती है तो वह मनुष्य से देवता बन जाता है। जब उसका दूसरा जन्म होता है तब वह नई नई बातों का अनुभव करता है। लोगों पर उसका विचित्र प्रभाव पड़ता है। उसका आध्यात्मिक प्रकाश एक विचित्र रूप से संसार भर में फैलने लगता है। यह जीवन उसकी प्रभुता का जीवन होता है। उसे मैं एक महान जीवन कहता हूँ।

जब इस प्रकार का महान जीवन मिल जाता है तो मनुष्य का संकीर्ण व्यक्तित्व उसी में लुप्त हो जाता है और वह ईश्वरीय जीवन का अनुभव करने लगता है। उसकी बुराई बिल्कुल दूर हो जाती और उसके स्थान में अच्छाई ही अच्छाई दिखलाई पड़ने लगती है।

अप्रैल ८

उत्कृष्ट जीवन में मनोविकार नहीं होते। उसके अपने कुछ सिद्धांत होते हैं जिनके द्वारा वह प्रभावित होता रहता है। वहाँ क्षण-क्षण में परिवर्तन होने वाले विचारों का गुजर नहीं है। वहां तो पक्के विचार ही ठहर पाते हैं। जब उस उत्कृष्ट जीवन में पूर्ण शांति आ जाती है तो सब चीजों की असलियत और उनकी ठीक व्यवस्था मालूम हो जाती है। फिर शोक चिन्ता या दुख के लिये कोई स्थान नहीं रह जाता। मनुष्य जब अपने ही स्वार्थ में डूबा रहता है तो उसे बहुत सी चीजों की चिन्ता घेरे रहती है। उसको हमेशा यह आशा रहती है कि कहीं हमारा धन और सुख नष्ट न हो जाय जिनकी रक्षा का वह सतत प्रयत्न करता है। जिसका जीवन उत्कृष्ट है उसे इन बातों की बिल्कुल चिन्ता नहीं रहती। ऐसा पुरुष दूसरों के स्वार्थ को ही अपना स्वार्थ समझता है और निजी सुख की उसकी सारी चिन्ताएँ रात के दुखद स्वप्न की तरह नष्ट हो जाती हैं।

अप्रैल ९

यदि कुकर्म जगत की स्वतन्त्र शक्ति होती तो उसका कोई भी सामना न कर सकता। यद्यपि यह स्वतन्त्र शक्ति नहीं है फिर भी अनुभूति तो है ही। और अनुभूति भी एक स्वतंत्र वस्तु की तरह हो ही जाती है। मनुष्य अपनी मूर्खता और छिछोरपन से कुकर्म करता है। ज्ञान के प्रकाश से कुकर्म का आगे बढ़ना रुक जाता है। फिर वह उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जिस प्रकार विद्या से विद्यार्थी का अज्ञान और सूर्य के प्रकाश से अंधेरा नष्ट हो जाता है।

जैसे-जैसे सुकर्म की अनुभूतियाँ मन में अधिकार जमाती जाती हैं वैसे-वैसे कुकर्म की अनुभूतियाँ स्थान खाली करती जाती हैं।

अप्रैल १४

जिस प्रकार देह के साथ परछाईं चलती है और आग के साथ धुआँ चलता है उसी प्रकार कारण के पीछे कार्य चलता है और मनुष्यों के विचारों तथा कार्यों के पीछे दुःख और सुख चलते हैं। हमारे चारों ओर जो भी परिस्थिति दिखलाई पड़ती है वह किसी न किसी प्रकट व अप्रकट कारण से बनी है और उस परिस्थिति के बनाने में न्याय से ही काम लिया गया है। मनुष्य इस समय दुःख इस कारण उठा रहे हैं कि उन्होंने भूतकाल में दुःख का बीज बोया था। वे इस समय सुख व आनन्द इस कारण लूट रहे हैं कि भूतकाल में उन्होंने सुख का बीज बोया था। मनुष्य यदि इस सिद्धान्त की सचाई समझ जाय तो वह केवल सुख के बीज बोवेगा और जो झंखाड़ उसने भूतकाल में अपने हृदय में जमाकर रक्खा है उसे नोच कर फेंक देगा।

अप्रैल १५

जो स्वर्णयुग निःस्वार्थ विश्वप्रेम से हमें अभी मिल सकता है उससे जगत इस समय वंचित है और भविष्य में भी अनेक वर्षों तक वंचित रहेगा। तुम चाहो तो अपने स्वार्थ को छोड़कर आज ही उस स्वर्णयुग में प्रवेश कर सकते हो। शर्त यह होगी कि तुम्हें अभिमान, घृणा और ईर्ष्या के स्थान में प्रेम की स्थापना करनी पड़ेगी।

जहाँ घृणा, ईर्ष्या, और अभिमान होते हैं वहाँ विश्वप्रेम नहीं रह सकता। वह उसी स्थान में रहता है जहाँ ये मनोविकार नहीं रहते।

जो समझता है कि सब प्राणियों के हृदयों में प्रेम होता है और जिसने प्रेम के सर्वोच्च प्रभाव का अनुभव किया है उसके हृदय में घृणा कभी नहीं रहती।

अप्रैल १६

जिसके हृदय में विश्व प्रेम होता है उसके लिये सब मनुष्य एक समान होते हैं। वह न तो किसी को अपने विचारों में लाने का प्रयत्न करता है और न यही करता है कि मेरे विचार सब से ऊँचे हैं। विश्व प्रेम के नियम को समझ कर वह उसी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है और सब के साथ शांत मन तथा शांत हृदय से मधुर बर्ताव करता है। अधर्मी और धर्मात्मा, मूर्ख और बुद्धिमान, शिक्षित और अशिक्षित तथा स्वार्थी और स्वार्थहीन सभी समान रूप से उसके शांत स्वभाव से लाभ उठाते हैं।

तुम चाहो तो आत्मानुशासन और आत्मसंयम द्वारा ही विश्वप्रेम की योग्यता अर्जित कर सकते हो।

अप्रैल १७

मन में दृढ़, निर्दोष और कोमल विचारों को भरो, हृदय में पवित्रता और दया को भरो, जिह्वा को काबू में रक्खो और जब बोलो तो निर्दोष सत्य बोलो। इस प्रकार तुमको सुख और शान्ति मिलेगी तथा अन्त में तुम अमर विश्वप्रेम का अनुभव करने लगोगे। इस ढंग का जीवन व्यतीत करके तुम दूसरों को अपने विचारों का बना सकोगे। और बिना किसी वाद-विवाद के दूसरों को उपदेश दे सकोगे। बुद्धिमान लोग तुम्हारी खोज करेंगे और बिना कुछ कहे सुने लोगों के दिलों को तुम अपनी ओर आकृष्ट कर सकोगे। प्रेम बहुत सफल होता है। वह सब को जीत लेता है। प्रेम के विचार, काम और वचन कभी मरते नहीं।

अप्रैल १८

अब हमने आँखें खोल दी हैं क्योंकि भय की अँधेरी रात बीत गई है, और हमने विषय और भोगों में बहुत सा समय नष्ट कर दिया है। हमने अपने पापों से बहुत समय तक व्यर्थ घमासान युद्ध किया किन्तु अब हमने अपनी आत्मा और 'सत्य' को पहचान लिया है। अब हमें अपने लिये नेक मार्ग मिल गया है और और पाप के साथ अब हमारा संग्राम समाप्त हो गया है।

हम सोते थे किन्तु हमें पता न था कि हम सो रहे हैं। हमें कष्ट मिल रहा था किन्तु हम जानते न थे कि हमें कष्ट मिल रहा है। हम स्वप्न में घुम पा रहे थे किन्तु हमें किसी ने जगाया नहीं। जगाता कौन? हमारी तरह सभी तो सो रहे थे। एकाएक हमने अपने स्वप्न को छोड़ दिया और हमारी निद्रा टूट गई। 'सत्य' ने हमसे बातचीत की और हमने उसे बड़े ध्यान से सुना। हम सो रहे थे। हमारी आँखें बन्द थीं। अब हम जाग गये हैं और देख रहे हैं। अब हमें धर्म अच्छा लगता है, पाप अच्छा नहीं लगता।

अप्रैल १९

पाप करना स्वप्न देखना है और पाप से प्रेम करना अँधेरे से प्रेम करना है। लोगों ने प्रकाश को नहीं देखा, इसीलिए वे अँधेरे से प्रेम करते हैं। जो प्रकाश को देख लेते हैं वे फिर अँधेरे में नहीं जाते। जिन्हें सत्य का दर्शन हो जाता है उनका उनसे प्रेम हो जाता है। फिर वे पाप से घृणा करने लगते हैं। स्वप्न देखने वाला पापी कभी सुखी होता है और कभी दुखी; कभी-कभी उसको साहस होता है और कभी भय। उसका मन चंचल रहता है। उसका किसी पर विश्वास नहीं होता, दुख और शत्रु उसका पीछा करते हैं तो वह कहीं भाग कर जा नहीं सकता क्योंकि जाग बिना उसे शरण का कोई स्थान नहीं सूझता। स्वप्न देखने वाला स्वप्न से युद्ध करके अब अपनी स्वार्थपूर्ण वासनाओं की अभिलाषा को

पहिचान लेता है तो उसके हृदय की आँखें खुल जाती हैं और वह संसार में 'सत्य' और प्रकाश को देखने लगता है। जगत की असलियत को समझ कर वह प्रसन्न, बुद्धिमान और शान्त हो जाता है।

अप्रैल २०

सब का पतन होता है किन्तु 'सत्य' का पतन संभव नहीं। मनुष्य का दिल जब दुखी रहता है और उसको संसार में कहीं शरण नहीं मिलती तो 'सत्य' से उसे सुख और संतोष मिलता है। जीवन में चिन्ताएँ और कष्ट होते हैं किन्तु 'सत्य' इन सब से न्यारा है। 'सत्य' हमारे बोझ को हल्का कर देता है और हमारे माग को आनन्द से प्रकाशित कर देता है। हमारे संबन्धी मर जाते हैं, हमारे मित्रों की दशा शोचनीय हो जाती है और हमारा धन नष्ट हो जाता है, फिर भी हमें आराम और संतोष कहा मिलता है ? केवल 'सत्य' ही दुखियों और वियोगियों को संतोष देता है। सत्य न तो कभी मरता है और न कभी उसका क्षय होता है। 'सत्य' चिरस्थायी शान्ति और सन्तोष देता है। सचेत होकर सत्य की आवाज को सुनो और उसके साथ ईश्वर की भी आवाज सुनो।

अप्रैल २१

'सत्य' मनुष्य को दुख और अशांति के गढ़े से निकाल कर सुख और शांति देता है। वह स्वार्थी और पापी लोगों को नेक और पवित्र मार्ग पर लाकर खड़ा कर देता है। वह मनुष्य को ईमानदार बनाता और सच्चे वफादार, तथा नम्र लोगों को सुख एवं शांति देता है। यही मेरा शरणस्थल है। यही सोच कर मैं नेक बनने का प्रयत्न करता और नेक काम करता हूँ। इससे मेरे हृदय को बड़ा संतोष होता है और मुझ में ईर्षा तथा घृणा का नाम तक नहीं होता। विषय मुझसे डरते हैं और भाग कर अँधेरे में छिप जाते हैं। घमंड मुझे देखकर चूर-चूर हो जाता है और अहंकार कोहरे की तरह उड़ जाता है। मैंने अब नेकी करने और निर्दोष जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया है, इसलिये मैं बहुत सुखी रहता हूँ।

अप्रैल २२

हमारे सत्कर्म हमेशा साथ रह कर हमारी रक्षा करते रहते हैं। उसी प्रकार कुकर्म भी हमारे साथ रहते हैं किन्तु परीक्षा के समय हमारी हानि कर देते हैं। कुकर्मी दुख से नहीं बच सकता किन्तु सत्कर्म करने वाले का दुख मात्र भी बाँध नहीं कर सकता। मूर्ख अपने कुकर्मों को छिपाकर रखना चाहता है किन्तु वे प्रकट हो जाते हैं और उसे दुख देते हैं। यदि हम कुकर्म करते हैं तो स्त्री, पुरुष, धन, दौलत, आकाश, पाताल कोई भी हमारी रक्षा नहीं कर सकता। कुकर्मों का फल तो हमें भोगना ही पड़ेगा। कुकर्मों से बचकर हम कहीं नहीं जा सकते और न कोई हमें शरण दे सकता है। यदि हम सत्कर्म करते हैं तो हमें कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता—स्त्री, पुरुष, दुःख, दरिद्रता, आकाश, पाताल सभी हमारी रक्षा करते हैं।

अप्रैल २३

शिष्य ने कहा—गुरु जी, मुझे कुछ शिक्षा दीजिये। गुरु जी ने कहा—तुम मुझसे कोई प्रश्न करो तो मैं उसका उत्तर दूँ।

शिष्य ने कहा—मैंने पढ़ा बहुत है फिर भी मूर्ख का मूर्ख बना हूँ। मैंने भिन्न-भिन्न धर्मों के उपदेश सुने हैं किन्तु उनका मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मैंने अपनी धार्मिक पुस्तक घोंट डाली है फिर भी मुझे शांति नहीं मिली। गुरु जी, कृपया मुझे शांति का मार्ग बताइये। ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने का मुझे सुगम मार्ग बताइये। मुझे शांति के मार्ग पर ले चलिये।

गुरु जी ने उत्तर दिया—मेरे प्यारे शिष्य, यदि तुम सुख चाहते हो तो अपने हृदय को शुद्ध करो, यदि विवेक चाहते हो तो नेक काम करो और शांति चाहते हो तो निर्दोष जीवन व्यतीत करो।

अप्रैल २४

शिष्य ने कहा—गुरू जी, अँधेरे के कारण मुझे कुछ सूझ नहीं पड़ता। क्या आप मेरा अंधेरा दूर कर सकेंगे? क्या प्रलोमनों की परीक्षाओं में मुझे सफलता मिलेगी?

गुरू जी ने उत्तर दिया—जब तुम्हारा हृदय शुद्ध होगा तभी तुम्हारा अंधेरा दूर होगा। तुम्हारे मन से विषय की वासना नष्ट हो जाने पर ही तुम परीक्षा में सफल होगे। स्वार्थ नष्ट हो जाने पर ही तुम सुखी होगे। खुशी है कि अब तुम अनुशासन और पवित्रता के मार्ग पर चलने लगे हो। उसी मार्ग पर मेरे दूसरे शिष्यों को भी चलना चाहिये। यदि तुम 'सत्य' के दर्शन करना चाहते हो तो अपने पापों को धो डालो, माया मोह को हटा दो और अपने मन को दृढ़ बनाओ। 'सत्य' पर अपने विश्वास को ढीला न करो, क्योंकि 'सत्य' ही तुम्हारा उद्धारक है। याद रक्खो 'सत्य' का स्वामी मैं तुम्हारी देखरेख कर रहा हूँ।

अप्रैल २५

शिष्य ने पूछा—गुरू जी, कृपया बताइये कि मन की बड़ी-बड़ी और छोटी छोटी शक्तियाँ कौन सी हैं?

गुरू जी ने उत्तर दिया—मेरे प्यारे बच्चे, जो आत्मअनुशासन और पवित्रता के मार्ग पर चलता है तथा आपत्तियों के आने पर भी उस मार्ग को नहीं छोड़ता उसे तीन बड़ी शक्तियाँ मिलती हैं जिनको पाकर वह अजेय हो जाता है। आत्मसंयम, स्वावलम्बन और सावधानी—ये छोटी शक्तियाँ हैं। दृढ़ता, धैर्य और सरलता—ये तीन बड़ी शक्तियाँ हैं। जब तुम्हारा मन पूर्णरूप से अपने वश में हो जायगा, जब तुम्हें सिवाय अपनी मदद के दूसरों से मदद लेने की जरूरत न पड़ेगी, और जब तुम अपने विचारों और कामों पर सावधानी रक्खोगे तभी तुम्हें ईश्वरीय ज्ञान और शक्तियाँ मिलेंगी।

अप्रैल २६

इन चार चीजों से हृदय दूषित होता है जिससे मनुष्य पाप करता और दुख उठाता है—(१) विषय की इच्छा (२) धन की लालसा (३) अहंकार (४) और निजी स्वार्थ। हृदय को शुद्ध करो, विषयों की इच्छाओं को त्याग दो, धन की ओर से मन को हटा लो और अहंकार को दूर करो। इस प्रकार सब इच्छाओं की ओर से मुँह मोड़ लेने पर तुम्हें बड़ा संतोष होगा। नाशवान चीजों से मन को अलग कर लेने से, बुद्धि और निजी स्वार्थ न रखने से शांति मिलती है। जिसका हृदय शुद्ध होता है वह विषय-वासनाओं की इच्छा नहीं करता, संसार की नाशवान चीजों को तुच्छ समझता है, और सुख-दुख, सफलता-विफलता, जय-पराजय और जीवन-मरण में एक समान रहता है। उसको निस्संदेह आनन्द ही आनन्द मिलता है।

अप्रैल २७

अधर्मी अपनी तुच्छ भावनाओं से प्रेरित होकर काम करता है। भलाई और बुराई उस पर अधिकार किये रहती हैं। पक्षपात उसको अन्धा बनाये रहता है। उसको न तो दुख का ख्याल रहता है और न इसी की कुछ चिन्ता रहती है कि मैं क्या चाहता हूँ। संयम तो उसे कभी सिखलाया ही नहीं गया। वह दिन-रात बेचैन रहता है। धर्मात्मा पुरुष मन को वश में रखता है। भलाई और बुराई को वह लड़कों का खेल समझ कर छोड़ देता है। पक्षपात से वह दूर रहता है। न तो वह किसी वस्तु की इच्छा करता है और न दुखी होता है। वह अपने ऊपर पूरा संयम रखता है इसलिये सदा शांत रहता है।

किसी की निन्दा न करो। किसी पर क्रोध न करो। किसी से झगड़ा न लो। किसी दल में न फँसो। किसी से बहस मुबाहिसा न करो। हमेशा शांति कायम रक्खो। नम्रता, दया और उदारता के साथ काम करो। धैर्य रक्खो,' सब से प्रेम करो सब का समान ख्याल रक्खो और किसी से परेशान होने की चिन्ता न करो।

अप्रैल २८

स्वार्थ की भावना को सर्वथा नष्ट कर दो। व्यवहार में दूसरे लोगों का ख्याल रक्खो अपने सुख और लाभ का नहीं। तुम इनसे कुछ भिन्न नहीं हो—उसी परमात्मा के तुम सब स्वरूप हो। स्वार्थ के लिये दूसरों से झगड़ा न करो, बल्कि सहानुभूति रक्खो। किसी मनुष्य को अपना शत्रु न समझो क्योंकि वास्तव में तुम तो सब के मित्र हो। सब से प्रेम का व्यवहार करो। सब प्राणियों पर दया भाव रक्खो और अपने वचनों तथा कर्मों में अत्यन्त उदारता से काम लो। यही तो 'सत्य' का शुभ मार्ग है। यही ईश्वर की आज्ञा है। सत्य के मार्ग पर चलने वाला हमेशा प्रसन्न रहता है। उसके सिद्धांत अचल होते हैं। वह ईश्वर ही है क्योंकि चिन्ताओं से मुक्त हो सुखी है। उसको पूर्ण शांति मिलती है। विकारों से रहित होकर वह स्थितप्रज्ञ, शांत और सुखी होता है, वह प्रत्येक वस्तु की असलियत को समझता है और इसलिये कभी घबड़ाता नहीं।

अप्रैल २९

शक्ति और स्वावलम्ब को बढ़ाओ। मन को अपने अधिकार में रक्खो। इन्द्रियों को वश में करो, तुम उनके वश में न हो जाओ। मन के विकारों से बचे रहो। ऐसा न हो कि वे तुम्हें गिरा दें। फिर भी यदि तुम गिर ही पड़े हो तो उठकर संभल जाओ और अपने पतन से शिक्षा लो। मन को वश में करने का पूर्ण प्रयत्न करो। जिस परिस्थिति में भी तुम हो, उससे लाभ उठाओ। आपत्तियों का सामना करके अपने शक्ति के भंडार को बढ़ाओ। सदाचारी को छोड़कर और किसी के सामने सर न झुकाओ। जब तुम्हारे बल की परीक्षा होने लगे तो पारितोषिक पाने के लिये कठिन अभ्यास करने वाले पहलवान की तरह प्रसन्न रहो।

अप्रैल ३०

विषय वासना, मोह, निराशा, दुख और भय के दास न बनो। शांति के साथ अपने ऊपर संयम रक्खो। जिस मन के चक्कर में दुनिया पड़ी हुई है उसे अपने वश में रखो। इन्द्रियों के वश में न रहो प्रत्युत उनको अपने वश में रक्खो। अपने ऊपर उस समय तक कठिन संयम रक्खो जब तक तुम्हारे मनोविकार दूर न हो जायं और तुम्हें शांति और विवेक न प्राप्त हो जायँ। इस प्रकार तुम्हें ज्ञान मिलेगा और ज्ञान मिलने से तुम अपने को जानोगे।

अपने अन्दर देखा तो मालूम होगा कि इस नश्वर शरीर के भीतर ईश्वर का निवास है और संसार के झंझटों के बीच शांति विराजती है। जो क्रोध करता है वह दुखी होता है और जो क्रोध को जीत लेता है उसे सुख मिलता है।

मई १

आलाउ ने कहा—मुझे मालूम है कि विषयों में दुःख है और संसार के भोगविलासों में भी दुःख एवं अशान्ति है और हृदय को बड़ा कष्ट होता है। इसी कारण मैं बड़ा दुखी रहता हूँ यदि 'सत्य' का मार्ग मिल जाय तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।

देवगुरु ने उत्तर दिया—जो सुख 'सत्य' में मिलता है वह कहीं नहीं मिलता। जिनके हृदय शुद्ध हैं वे सुख के समुद्र में तैरते हैं और उनको दुःख नहीं होता। जो संसार की व्यवस्था को समझते हैं वे कभी कष्ट नहीं पाते। 'हम क्या हैं ?' जो इसे जानता है वह सुखी रहता है। जिन्हें परमात्मा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है वे हमेशा आनन्द से जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे महानपुरुष ही 'सत्य' को जानते हैं, उसका अनुभव करते हैं और उसी के आधार पर जीवन व्यतीत करते हैं।

मई २

हर एक पुरुष संसार की असलियत को जाने अथवा बिना जाने अपने ढंग पर अपनी योग्यतानुसार 'सत्य' की खोज करता है। 'सत्य' एक ही होता है और उसके खोजने की इच्छा भी एक ही होती है किन्तु उसके पाने के मार्ग अनेक होते हैं। वे धन्य हैं जो संसार की असलियत को समझ कर 'सत्य' की खोज करते हैं। उनको वह शान्ति शीघ्र ही मिलती है जिसको केवल 'सत्य' ही दे सकता है। उन्होंने सही रास्ता समझ लिया है इसलिये उनका उद्देश्य शीघ्र ही सफल होता है। जो संसार की असलियत न जानकर 'सत्य' की खोज करते हैं वे थोड़े समय तक भले ही आनन्द में रहें किन्तु अन्त में वे सुखी नहीं रहते। दुःख का मार्ग वे अपने हाथों से बनाते हैं जिस पर लगड़ा-लंगड़ा कर वे बड़े कष्ट के साथ चलते हैं और उनकी आत्मा अपनी खोई हुई सम्पत्ति 'सत्य' के लिये रोया करती है।

मई ३

खग की बादशाहत की यात्रा लम्बी और दुःखद तथा छोटी और सुखद दोनों हो सकती है। उस यात्रा में एक मिनट लग सकता है और कई युग भी लग सकते हैं। अधिक या कम समय का लगना खोज करने वाले की श्रद्धा और विश्वास पर निर्भर है। श्रद्धा न होने के कारण मनुष्य उसके भीतर नहीं आ सकता। स्मरण रक्खो, उस बादशाहत के भीतर जाने के लिये अपने घर को अथवा अपने कर्त्तव्य को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ तो प्रवेश निस्स्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्य का पालन करने से ही होता है। जो गृहस्थी में ही रहकर आपत्तियों से घिरने पर भी 'सत्य' को नहीं छोड़ते और जो सचाई के साथ अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए उस मार्ग पर बढ़ते जाते हैं उन्हें आगे या पीछे विजय मिलती ही रहती है।

अप्रैल ३०

विषय वासना, मोह, निराशा, दुःख और भय के दास न बनो। शांति के साथ अपने ऊपर संयम रक्खो। जिस मन के चक्कर में दुनिया पड़ी हुई है उसे अपने वश में रखो। इन्द्रियों के वश में न रहो प्रत्युत उनको अपने वश में रक्खो। अपने ऊपर उस समय तक कठिन संयम रक्खो जब तक तुम्हारे मनोविकार दूर न हो जायें और तुम्हें शांति और विवेक न प्राप्त हो जायें। इस प्रकार तुम्हें ज्ञान मिलेगा और ज्ञान मिलने से तुम अपने को जानोगे।

अपने अन्दर देखो तो मालूम होगा कि इस नश्वर शरीर के भीतर ईश्वर का निवास है और संसार के झंझटों के बीच शांति विराजती है। जो क्रोध करता है वह दुखी होता है और जो क्रोध को जीत लेता है उसे सुख मिलता है।

मई १

आशाब ने कहा—मुझे मालूम है कि विषयों में दुःख है और संसार के भोगविलासों में भी दुःख एवं अशान्ति है और हृदय को बड़ा कष्ट होता है। इसी कारण मैं बड़ा दुखी रहता हूँ यदि 'सत्य' का मार्ग मिल जाय तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।

देवदूत ने उत्तर दिया—जो सुख 'सत्य' में मिलता है वह कहीं नहीं मिलता। जिनके हृदय शुद्ध हैं वे सुख के समुद्र में तैरते हैं और उनको दुःख नहीं होता। जो संसार की व्यवस्था को समझते हैं वे कभी कष्ट नहीं पाते। 'हम क्या हैं?' जो इसे जानता है वह सुखी रहता है। जिन्हें परमात्मा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है वे हमेशा आनन्द से जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे महानपुरुष ही 'सत्य' को जानते हैं, उसका अनुभव करते हैं और उसी के आधार पर जीवन व्यतीत करते हैं।

मई २

हर एक पुरुष संसार की असलियत को जाने अथवा बिना जाने अपने ढंग पर अपनी योग्यतानुसार 'सत्य' की खोज करता है। 'सत्य' एक ही होता है और उसके खोजने की इच्छा भी एक ही होती है किन्तु उसके पाने के मार्ग अनेक होते हैं। वे धन्य हैं जो संसार की असलियत को समझ कर 'सत्य' की खोज करते हैं। उनको वह शान्ति शीघ्र ही मिलती है जिसको केवल 'सत्य' ही दे सकता है। उन्होंने सही रास्ता समझ लिया है इसलिये उनका उद्देश्य शीघ्र ही सफल होता है। जो संसार की असलियत न जानकर 'सत्य' की खोज करते हैं वे थोड़े समय तक भले ही आनन्द में रहें किन्तु अन्त में वे सुखी नहीं रहते। दुःख का मार्ग वे अपने हाथों से बनाते हैं जिस पर लगड़ा-लंगड़ा कर वे बड़े कष्ट के साथ चलते हैं और उनकी आत्मा अपनी खोई हुई सम्पत्ति 'सत्य' के लिये रोया करती है।

मई ३

स्वर्ग की बादशाहत की यात्रा लम्बी और बुलंद तथा छोटी और सरल दोनों हो सकती है। उस यात्रा में एक मिनट लग सकता है और कई युग भी लग सकते हैं। अधिक या कम समय का लगना खोज करने वाले की श्रद्धा और विश्वास पर निर्भर है। श्रद्धा न होने के कारण मनुष्य उसके भीतर नहीं जा सकता। स्मरण रक्खो, उस बादशाहत के भीतर जाने के लिये अपने घर को अथवा अपने कर्त्तव्य को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। वहाँ तो प्रवेश निस्स्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्य का पालन करने से ही होता है। जो गृहस्थी में ही रहकर आपत्तियों से घिरने पर भी 'सत्य' को नहीं छोड़ते और जो सचाई के साथ अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए उस मार्ग पर बढ़ते जाते हैं उन्हें आगे या पीछे विजय मिलती ही रहती है।

मई ४

संसार की झंझटों से छूट कर विश्वप्रेम को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने आचरण को एक क्रम से सुधारें और उसे पवित्र बनावें। यदि सुधार का यह क्रम परिश्रम से जारी रक्खा जाय तो मनुष्य को पूर्णता मिल सकती है। मनुष्य सबसे पहले अपने भीतर के विचारों को समझे और उनको दूर करे। इसके अनन्तर वह ईश्वरीय विधानों की जानकारी प्राप्त करे जिनसे दुनियाँ के सब काम चल रहे हैं। ये ईश्वरीय विधान उसके भीतर भी काम करते हैं जिसके लिये उसे भारी से भारी मूल्य चुकाना पड़ता है। संसार में लोगों को जो सुख और दुःख मिलते हैं वे इन्हीं विधानों के मानने या न मानने से मिलते हैं।

विधान समझ लेने के अनन्तर मनुष्य अपने मन और आचरण को शुद्ध करे।

मई ५

नेक मनुष्य समाज का एक रत्न है। वह जैसे-जैसे अपने जीवन को पवित्र स्वार्थरहित और विशाल बनाता जाता है वैसे-वैसे वह ईश्वर के समीप पहुँचता रहता है। महात्मा ईसा ने कहा है, "जो मेरा शिष्य है उसे प्रतिदिन त्याग करने के लिये तैयार रहना चाहिये।" लोग इस कथन को समझ कर अपने लाभ के लिये उसका प्रयोग अपने जीवन में कर सकते हैं। नेक मनुष्य की बराबरी कोई नहीं कर सकता। जब तक मनुष्य नेक नहीं बनता, तब तक वह अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव नहीं कर सकता। नेक बनने के लिए दूषित विचार अहंकार और अन्य दोषों को दूर करने की आवश्यकता है। इस प्रकार के जीवन से ही मनुष्य ईश्वर के मार्ग पर चल सकता है।

मई ६

महात्मा ईसा प्रेम का जीवन व्यतीत करते थे। यदि सब लोग नम्रता और सचाई से उनके उपदेशों के अनुसार चलें तो उसी प्रकार का जीवन व्यतीत कर सकते हैं। जब तक मनुष्य अपनी इच्छाओं और विषय वासनाओं में फँसा रहता है और जब तक वह अपने अहंकार को नहीं छोड़ता तब तक वह तो अपना ही दास है, ईसा का दास नहीं। महात्मा ईसा ने कहा है, "तुमसे सच सच कहता हूँ कि जो पाप करता है वह पाप का दास है।" लोगों को समझना चाहिए कि वे काम, क्रोध मोह, लोभ, मद और ईर्ष्या रहते हुए महात्मा ईसा के अनुयायी नहीं हो सकते। जो वस्तु मनुष्य को मनुष्य से अलग रखती है वह ईसा की वस्तु नहीं है, ईसा की वस्तु तो प्रेम है?

मई ७

जिस प्रकार किसी व्यसन में पड़ना बुरा है उसी प्रकार किसी सम्प्रदाय में जकड़ा रहना भी बुरा है। नेक मनुष्य का धर्म 'प्रेम' ही होता है और उसी को वह अपने जीवन का प्रिय धर्म बनाता है। वह किसी से झगड़ा नहीं करता, न तो किसी की निन्दा करता है और न किसी से घृणा करता है। वह सभी से प्रेम करता है। उसे यह देखकर खेद होता है कि जो लोग किसी विशेष पन्थ पर चल रहे हैं वे सकुचित हृदय होने से कितना कष्ट भोग रहे हैं महात्मा ईसा ने कहा है "जिसमें संकीर्णता और स्वार्थ की भावना है उसे जीवन का सुख नहीं मिलता" जो नरक में ले जाने वाले निजीपन को अपने आप छोड़ देता है वही ईश्वर का सच्चा भक्त है, ऐसा ही महान् पुरुष विश्वप्रेम के भव्य मन्दिर में प्रवेश करता है। प्रेम ही जीवन है और प्रेम ही स्वर्ग का दरवाजा है।

मई ८

मेरा व्यवहार दूसरों के प्रति कैसा है? मैं दूसरों की ओर ही नेकी कर रहा हूँ? मैं दूसरों को अच्छा समझ रहा हूँ या खराब? क्या मैं निःस्वार्थ भाव से उनकी सेवा कर रहा हूँ जैसा कि मैं उनसे चाहता हूँ! क्या मैं उनसे घृणा और उनकी निन्दा तो नहीं कर रहा हूँ? मैं उनसे बदला तो नहीं लेना चाहता? जब एकान्त में बैठ कर मनुष्य अपने हृदय में ऐसे-ऐसे प्रश्न करता है और अपना ध्यान उसी एक परमात्मा पर लगाता है तो उसे सच्चा ज्ञान मिलता है और जो पाप उसने जीवन में अभी तक किये हैं उन्हें वह मालूम कर लेता है और उनको वह फिर नहीं दोहराता। वह नाना प्रकार के साधनों द्वारा अपने हृदय और मन को शुद्ध करता है।

मई ९

जब मनुष्य किसी की बुराई को दूर करने में अपने को लगाता है तो वह केवल अपनी भलाई ही का दरवाजा बन्द नहीं करता किन्तु स्वयं उन बुराइयों में फँस जाता है जिनकी वह कड़ी आलोचना किया करता है। परिणाम यह होता है कि उसकी मनोवृत्ति को देखकर दूसरे उसका विरोध करने लगते हैं। यदि किसी मनुष्य, किसी दल, किसी धर्म अथवा किसी सरकार का बुरा-भला कह कर उसका विरोध करो तो वे तुमको बुरा कहेंगे और तुम्हारा विरोध करेंगे। लोग किसी मनुष्य को कष्ट देते हैं अथवा उसकी निन्दा करते हैं यदि वह इसे एक बड़ी बुराई समझता है तो उसे स्वयं न तो दूसरों को कष्ट देना चाहिये और न उसकी निन्दा करनी चाहिये। जिसे अभी तक वह बुराई समझता था उसकी ओर से ध्यान हटाकर उसे भलाई करने की ओर लगाना चाहिये। ऐसा करने से उसकी स्वयं भलाई होगी और उसे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होगा।

मई १०

बाबा आदम के समय से पाप करते-करते मनुष्य अब यह समझने लगा है कि न तो पाप करना मैं छोड़ सकता हूँ और न मुझे अब ईश्वरीय ज्ञान ही मिल सकता है। वह ईश्वरीय ज्ञान को एक बाहर की वस्तु समझता है किन्तु ऐसी बात है नहीं। वास्तव में मनुष्य जन्म के समय बिल्कुल निर्दोष होता है और उसमें सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और अनादि ईश्वर के सब गुण विद्यमान रहते हैं। वह पूज्य और स्वयं एक बड़ा पुण्यात्मा है किन्तु अपने विचारों, अपने स्वार्थों, अपने अहंकार और अपनी कुत्सित इच्छाओं के कारण उसने अपने को एक पापी बना रक्खा है। यदि वह उपरोक्त अवगुणों को परित्याग करदे तो इस समय भी पुण्यात्मा बन सकता है। संत पाल के कथनानुसार वह अब भी अपनी जन्मजात अवस्था को फिर से ला सकता है।

मई ११

मनुष्य के भीतर दैवी शक्ति है जिसके बल पर वह आध्यात्मिक उन्नति के उच्च शिखर पर चढ़ सकता है और अपनी बुराइयों तथा कष्टों को हटा कर परम पिता ईश्वर की आज्ञा का पालन कर सकता है। उस शक्ति के द्वारा वह मनोविकारों को हटा कर सर्वथा विशुद्ध और स्वतंत्र हो सकता है और संसार को पैरों तले दबाकर ईश्वर के समीप पहुँच सकता है। ऐसे मनुष्य को चाहिये कि वह अपने हृदय को शुद्ध करके दैवीशक्ति का अनुभव करे। उसे अशान्ति के स्थान में शान्ति, अपवित्रता के स्थान में पवित्रता, घृणा के स्थान में प्रेम, स्वार्थ के स्थान में त्याग और बुराई के स्थान में भलाई को स्थान देना चाहिये।

मई १२

जिस प्रकार महात्मा ईसा शान्त, नम्र, प्रिय, पवित्र और दयालु थे उसी प्रकार तुम्हें भी शान्त नम्र, प्रिय, पवित्र और दयालु होना चाहिये। जिस प्रकार वे ईश्वर की आज्ञा का पालन करते थे उसी प्रकार तुम्हें भी ईश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिये। उनकी दया, उनके प्रेम तथा सदाचार से तुमको क्या लाभ हो सकता है जब तक उनके इन गुणों को तुम स्वयं अपने व्यवहार में न चरितार्थ करो। इसके अलावा जिन साधनों से ये गुण प्राप्त होते हैं वे भी तो तुम में नहीं है।

मई १३

जब तक हम सदाचारी न बनें तब तक दूसरों के अथवा ईश्वर तक के सदाचार को केवल देखने से न तो हमें कोई लाभ हो सकता है और न शान्ति मिल सकती है। इसलिये जो महात्मा ईसा में विश्वास करते हैं उन्हें उनके दैवी गुणों को अपने भीतर पैदा करके अपने चरित्र को ऊँचा बनाना चाहिये।

महात्मा ईसा के आदेशानुसार सदाचार पैदा करना मनुष्य के हाथ में है। वह अच्छे विचारों और कर्मों के द्वारा सदाचारी बन सकता है। प्रत्येक मनुष्य को सदाचारी बनना चाहिये। मनुष्य अपने ही सदाचार से शान्ति और आनन्द प्राप्त कर सकता है, दूसरों के सदाचार से नहीं।

मई १४

महात्मा ईसा ने अपने जीवन में लोगों से प्रेम करके दिखाया कि बिना प्रेम के मनुष्य का जीवन बेकार है। दूसरों का ख्याल न करके मनुष्य जब अपने ही स्वार्थ के लिये काम करता है तब उसके जीवन को निरर्थक ही समझना चाहिये। वह अज्ञान में पड़ा हुआ दुख पा रहा है जिससे उसको छुटकारा मिलना कठिन हो जाता है। ऐसे मनुष्य को ईश्वरीय प्रकाश कभी नहीं मिल सकता। जो स्वार्थ रहित हैं और जिन्हें दूसरों के साथ सहानुभूति है वे ही ईश्वरीय प्रकाश पाने के अधिकारी हैं। जहाँ घृणा है वहाँ प्रेम नहीं हो सकता। प्रेम ही प्रेम को समझ सकता और उसमें सुख मिल सकता है। मनुष्य पवित्र होता है। उसमें प्रेम का तत्व रहता है। इस बात का अनुभव मनुष्य उस समय करता है जब वह अपने स्वार्थ को छोड़कर महात्मा ईसा के तत्व को समझता है।

मई १५

महात्मा ईसा ने अपने प्रत्येक उपदेश में लोगों से जोर देकर कहा है कि तुम लोग आंख बन्द कर अपने स्वार्थ को छोड़ो। जब तक मनुष्य अपने स्वार्थ में फंसा हुआ है तब तक वह ईश्वर से सम्पर्क नहीं स्थापित कर सकता। जब तक उसका मन शुद्ध नहीं होता तब तक वह 'सत्य' के मार्ग पर नहीं चल सकता। जब तक मनुष्य काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद और ईर्ष्या में लिप्त है तब तक वह कोई ऊँचा और स्थायी काम नहीं कर सकता, क्योंकि इन विकारों के साथ जो काम किये जाते हैं वे तुच्छ और अस्थायी होते हैं। जब वह अपने हृदय को शुद्ध करके सब से प्रेम करता है और धैर्य, नम्रता पवित्रता, क्षमा तथा दया से काम लेता है तब वह नेक काम करता है और अपने जीवन को सार्थक बनाता है। असली अंगूर की लता वही है जिसमें चारों ओर शाखाएं फूटी हों और उनमें स्वादिष्ट अंगूर लगे हों।

जिसके विचार पवित्र होते हैं, जो किसी को हानि नहीं पहुँचाता और जो शुद्ध हृदय और मन से दूसरों से प्रेम करता है वही जीवन के अमर सिद्धान्तों को समझता है।

मई १६

शत्रुता, घृणा, निन्दा, अपवित्रता, स्वार्थ और अहंकार को छोड़ कर और अच्छे विचारों को मन में स्थान देकर तथा अच्छे अच्छे काम करके ही मनुष्य प्रेम कर सकता है। ऐसा करके वह अपने भीतर एक दिव्य ज्योति उत्पन्न करता है जिसका बलिदान वह अभी तक अपने खोटे कर्मों द्वारा करता चला आया है। जब मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह या अहंकार के वश में होता है तभी वह ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करता है और प्रेम से वंचित हो जाता है। जब मनुष्य ईश्वरीय नियमों को मान कर अपने हृदय और मन को शुद्ध कर लेता है तथा जब वह निजी स्वार्थ को त्याग देता है जिससे संसार के सब प्रकार के दुःख उत्पन्न होते हैं और जब वह विचारशील, नम्र शान्त, प्रिय और पवित्र हो जाता है तब उस पर ईश्वर की कृपा होती है।

मई १७

जिनका ध्यान ईश्वर में लगा है उनको धन, जमीन आदि बाहरी पदार्थों में सुख नहीं मिलता। वे समझते हैं कि धन दौलत, भोजन, वस्त्र केवल शरीर रक्षा के लिये हैं और शीघ्र नष्ट होने वाले हैं। अत एव उनको इन चीजों की परवाह नहीं रहती। वे विश्व प्रेम में विश्वास करते हैं और उसी से वे स्वयं सुखी होते और दूसरों को सुखी करते हैं। पवित्रता, दया, विवेक और प्रेम आदि सिद्धान्तों की शरण लेकर वे अपने को अमर समझते हैं। वे अपने में और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं समझते। वे अपने को ईश्वर का प्रतिबिम्ब ही मानते हैं। जीवन की असलियत को समझ कर वे किसी से घृणा नहीं करते प्रत्युत सबसे प्रेम करते हैं।

मई १८

आराम और आलस्य मनुष्य के दो शत्रु हैं। जो ईश्वर के मार्ग में लगे हुए हैं वे इन दोनों शत्रुओं को नष्ट कर देते हैं। वे शान्ति के साथ निरन्तर परिश्रम करते रहते हैं। वे दुख, चिन्ता और भय पैदा करने वाले अपने स्वार्थ को नष्ट करते हैं और त्याग का जीवन व्यतीत करते हैं। वे अपने कर्त्तव्यों का पालन बड़े परिश्रम से करते हैं। वे अपनी शक्ति और बुद्धि को अपने चारों ओर शान्ति का वायु मण्डल उत्पन्न करने में लगाते हैं। वे दूसरों को भी शान्त करते हैं। जो काम वे करना चाहते हैं उसे पहले वे स्वयं करते हैं, उसके बाद दूसरों को उपदेश करते हैं। वे कभी दुखी नहीं होते, हमेशा आनन्द में ही डूबे रहते हैं। एक ओर अज्ञानता में पड़े हुए लोगों को वे दुखी देखते हैं तो दूसरी ओर ईश्वर के मार्ग पर लगे हुए लोगों को वे सुखी भी पाते हैं।

मई १९

जिस मोक्ष को महात्मा ईसा ने माना है और जिसका उन्होंने उपदेश दिया है वह है पापों से अपने को मुक्त करना। यदि हम अपने को पापों से मुक्त कर लें तो हमें अभी और इसी समय मोक्ष मिल सकता है। इस प्रकार पापों से मुक्त होने पर हमें पूर्ण ज्ञान, पूर्ण सुख और पूर्ण शान्ति जब मिल जायगी तो समझ लीजिये कि स्वर्ग की 'बादशाहत' का अनुभव हमने अपने हृदय में कर लिया।

जब तक मनुष्य अपने को सोलहों आने बदल न दे तब तक उसे स्वर्ग की बादशाहत नहीं मिल सकती। वह अपने वर्तमान पापों को छोड़कर और अपने हृदय तथा मन को शुद्ध करके ही अपने को सर्वथा बदल सकता है। जो मनुष्य समझता है कि काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद और ईर्ष्या का तो छोड़े नहीं और एक विशेष पन्थ को ग्रहण करलें तो मेरा परिवर्तन हो जायगा और मैं एक नया आदमी बन जाऊँगा वह अपने को भ्रम में डाल रहा है। ऐसा आदमी कभी आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकता। स्वर्ग वहीं है जहाँ प्रेम और शान्ति का साम्राज्य है।

मई २०

महात्मा ईसा कहते हैं, "ऐ दुःखी मनुष्यो, तुम्हारे भीतर ईश्वर प्राप्त करने की शक्तियाँ परिपूर्ण हैं, सच्चे मार्ग को अपनाओ और उसी पर चलो। 'सत्य' पर विश्वास करो। अज्ञान के अन्धकार में मत पड़े रहो। इस निर्दोष 'सत्य' को परिश्रम के साथ खोजो और उसका दिव्य अनुभव करो।" इसके अलावा महात्मा ईसा ऐसा भी आदेश करते हैं, "ऐ मनुष्यो! वह ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करो जो संसार के अज्ञान को दूर करता है और जिसके प्रकाश में चलकर मनुष्य अपने दिव्य स्वभाव का अनुभव करता है।"

मई २१

मनुष्यों के उत्कृष्ट जीवन से पता लग जाता है कि वे 'स्वर्ग की बादशाहत' में हैं या नहीं। उनमें प्रेम, आनन्द, शान्ति, सहिष्णुता, दया, सत्य, ईमानदारी, नम्रता, आचार और संयम होता है। आपत्तिकाल आने पर भी वे अपने इन गुणों को नहीं छोड़ते। उनमें क्रोध, भय, शंका, ईर्ष्या, चंचलता, चिन्ता और दुःख नहीं रहता। वे 'सत्य' का जीवन व्यतीत करते हैं। उनके कामों में वे गुण दिखलाई पड़ते हैं जो संसार के लोगों में उनकी मूर्खता के कारण नहीं होते; उनको कोई शिकायत नहीं होती। वे अपनी रक्षा का प्रबन्ध नहीं करते, वे बदला नहीं लेते। वे उन लोगों का भी भला चाहते हैं जो उन्हें हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। वे उन लोगों से भी अपने मित्रों की तरह प्रेम करते हैं जिनके विचार उनसे नहीं मिलते। वे दूसरों की आलोचना नहीं करते, वे न तो किसी की निन्दा करते हैं और न किसी धर्म का खण्डन करते हैं। वे सब के साथ मेल से रहते हैं।

मई २२

'सत्य' का मन्दिर बना हुआ है, पवित्रता, बुद्धि, दया और प्रेम उस मन्दिर की चार दीवालें हैं। शान्ति उसकी छत है। दृढ़ता उसका फर्श है। निस्वार्थ सेवा उसका प्रवेश द्वार है। ज्ञान वहाँ का वायुमण्डल है और ईश्वर का गुणानुवाद ही वहाँ का संगीत है। वह मन्दिर कभी नष्ट होने वाला नहीं है। वह चिरंतन है। उसके भीतर रहकर तुम्हें भविष्य की चिन्ता करने की नहीं। आवश्यकता जब तुम्हें अपने हृदय में ही 'स्वर्ग की बादशाहत' मिल गई तो फिर अपने निर्वाह की वस्तुओं की प्राप्त करने की चिन्ता कैसी। परिणाम स्वरूप ये वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में तुम्हें अपने आप मिलती रहेंगी। ईश्वर का भण्डार बहुत ही बड़ा है। उसमें तुम्हारी हर प्रकार की आवश्यकतायें पूर्ण होती रहेंगी।

मई २३

यदि असली सत्य को तुम प्राप्त करना चाहते हो तो आज ही प्राप्त करो। यह 'सत्य' समय से भी अधिक मूल्यवान है और किसी भी समय प्राप्त किया जा सकता है, इसका सम्बन्ध न तो भूतकाल से है और न भविष्यकाल से। यह बड़ा तेजस्वी होता है और वर्तमान काल ही में प्राप्त किया जा सकता है। यदि तुमने सत्य की खोज शीघ्र से शीघ्र न की तो प्रत्येक मिनट, प्रत्येक दिन, और प्रत्येक वर्ष तुम्हारे लिये स्वप्न की तरह व्यर्थ ही है, और तुम उन्हें या तो एकदम भूल जाओगे या स्मरण भी रक्खोगे तो बहुत कम।

भूत और भविष्य काल को स्वप्न समझो। असली चीज तो वर्तमान काल है। इस काल में ही हम काम करते और संसार भर के पदार्थों को प्राप्त करते हैं। वर्तमान काल में काम करके यदि हम सफलता नहीं प्राप्त करते तो फिर हम कभी भी काम करके सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। यह विचारते रहना कि हम अमुक समय में अमुक-अमुक काम करेंगे मूर्खता है। बुद्धिमानी तो इसी बात में है कि हम प्रसन्नचित्त से शान्ति के साथ वर्तमान काल में ही काम करें।

मई २४

मनुष्य को सम्पूर्ण ज्ञान वर्तमान काल ही में मिल सकता है किन्तु इसे न जान कर वह कहता है "मैं पूर्ण ज्ञान कुछ वर्षों में प्राप्त कर लूँगा और यदि इस जन्म में मुझे यह ज्ञान न मिला तो मैं उसे अगले जन्मों में प्राप्त करूँगा।" जिन्होंने 'स्वर्ग की बादशाहत' का अनुभव कर लिया वे वर्तमान काल को ही पूर्ण महत्व देते हैं और कहते हैं, "हमें तो इसी समय पूर्णज्ञान प्राप्त हो गया है।" वे पाप करना छोड़ देते हैं और निकृष्ट विचारों को मन में नहीं आने देते। भूत और भविष्य की चिन्ता उनको नहीं होती और सहायता के लिये वे किसी का मुँह नहीं ताकते। इस प्रकार अपने को सुधार कर वे हमेशा पवित्र और सुखी रहते हैं। अपने मन में तुम भी बारम्बार कहो, "यही समय मेरे मोक्ष का है। मैं अपना आदर्श स्वयं बनूँगा। मैं किसी की सहायता न चाहूँगा। मार्ग में आनेवाली सारी बाधाओं को मैं नष्ट करूँगा और अपने अन्तःकरण की आवाज को सुनूँगा।" इस प्रकार का पक्का इरादा करके तुम हमेशा 'सत्य' के ऊँचे मार्ग पर चलते रहोगे।

मई २५

जब प्रलोभन तुम्हारे सामने आवे तो उससे डर कर अपने 'सत्य' मार्ग को न छोड़ो। जब मन में विकार उत्पन्न हों तो उन्हें रोक दो। जब मन इधर उधर जाने लगे तो उसे ऊंची ऊंची बातों में लगाओ। यह न कहो कि सत्य हमको केवल महात्माओं और शास्त्रों से मिलता है। 'सत्य' तो तुम्हें केवल अपने अभ्यास से ही मिलता है। महात्मा और शास्त्र तो केवल उपदेश देते हैं किन्तु उनका पालन करना तुम्हारे ही हाथ में है। जो महात्माओं और शास्त्रों के बताये हुए उपदेश का पालन सचाई के साथ करते हैं उनको ईश्वरीय प्रकाश मिलता है। भूत-प्रेत अथवा देवी देवता की पूजा करके 'सत्य' पाने की चेष्टा न करो। यह सब ढोंग है। 'सत्य' की खोज तुम स्वयं करो और उसी के सहारे ईश्वरीय ज्ञान, सुख और शान्ति प्राप्त करो, महात्माओं के वाक्यों, ईश्वरीय नियमों और सत्य पर विश्वास करो।

मई २६

केवल सत्य बोलो। शब्दों को तोड़ मरोड़ कर, आँखें मटका मटका कर या हाथ घुमा फिरा कर दूसरों को धोखा न दो। एक विषैले साँप की तरह चुगली से दूर रहो नहीं तो स्वयं आपत्ति में पड़ सकते हो। जो दूसरों की चुगली करता है उसे कभी शान्ति नहीं मिलती। दूसरों को कलंकित करने वाली थोथी थोथी बातें करना छोड़ दो। दूसरों की घरेलू बातों की चर्चा न करो। जिस समाज में तुम रहते हो उसकी निन्दा न करो और विशिष्ट पुरुषों की आलोचना न करो। दूसरों पर दोषारोपण न करो किन्तु दूसरे यदि तुम पर दोष लगावें तो उनका जवाब अपने सदाचार द्वारा दो। जो सन्मार्ग पर न चल रहे हों उनकी निन्दा न करो। उनके ऊपर दया करो और स्वयं सन्मार्ग पर चलकर उन्हें भी उसी मार्ग पर चलाओ। 'सत्य' के बल से क्रोध की अग्नि को बुझाओ। नम्र बनो। न तो बाजारों की तरह बातें करो और न गन्दी-गन्दी दिल्लगी करो। गम्भीरता, आत्मसम्मान और पवित्रता बुद्धिमानी के चिन्ह हैं।

मई २७

निःस्वार्थ को छोड़ कर बहुत ही सच्चाई के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करो। भोग विलास में पड़ कर कर्तव्य पालन में शिथिलता न करो। दूसरों के कामों में विघ्न न डालो। अपने कामों में ईमानदारी से काम लो। घोर से घोर सकट पड़ने पर भी जहाँ तुम्हारे जीवन जाने का भी डर हो वहाँ अपने सत्यमार्ग से न डिगो। सत्य के मार्ग पर चलने वाला हमेशा अजेय होता है। वह कभी घबड़ाता नहीं है। वह शकाओं से दूर रहता है। यदि तुम्हें कोई गाली दे अथवा तुम्हारी निन्दा करे तो भी तुम चुप रहो। अपने शत्रु से बदला लेने की नियत न रखो। जब तक तुम्हारा हृदय उसकी ओर से शुद्ध है, वह तुमको हानि नहीं पहुँचा सकता। उसी की तरह तुम मूर्ख न बन जाओ। शत्रु पर दया करो और उसकी मूर्खता पर हँसो कि वह तुमसे शत्रुता करके किस प्रकार स्वयं अपनी हानि कर रहा है।

मई २८

किसी की शत्रुता से मत डरो। क्रोध और घृणा को रोको। सब पर दया भाव रक्खो। आपत्तियों से घिर जाने पर भी कभी क्रोध न करो और न किसी को बुरा भला कहो। क्रोध को शान्ति से तिरस्कार को धैर्य से और घृणा को प्रेम से जीतो। झगड़ा करने के लिये किसी दल विशेष में न मिलो। शान्ति स्थापित करने का सतत प्रयत्न करो। एक दूसरे के बीच मतभेद न उत्पन्न करो और न एक दल का पक्ष लेकर दो दलों को लड़ाओ। सब पर समान प्रेम, न्याय और दया करो। किसी दूसरे धर्म की या उसके उपदेशकों की अथवा किसी भी सम्प्रदाय की अवहेलना मत करो। अमीर-गरीब, मालिक-नौकर, राजा-प्रजा, पूंजीपति और श्रमजीवी के बीच झगड़ा पैदा न करो। उनके भिन्न-भिन्न कामों को देख कर सब पर समान ध्यान रक्खो। मन को हमेशा अपने अधिकार में रखकर, शत्रुता को दूर करके और दयालु होकर तुम नेक बन सकते हो।

मई २९

सब काम बुद्धि से करो। सब चीजों की जाँच करके उनको जानने और समझने की कोशिश करो। सुलझे हुए विचार रक्खो। सोच समझ कर बात कहो और काम करो। ज्ञान के प्रकाश से मन को शुद्ध करके सरल बनाओ और अपनी भूलों को सुधारो। बहुत ही बारीकी के साथ आत्म-निरीक्षण करो। जनश्रुतियों पर विश्वास न करो। ज्ञानार्जन करो। जो अभ्यास और परिश्रम से ज्ञान प्राप्त कर लेता है उसको अपने ऊपर विश्वास होता है और वह निडर होकर सत्य बोलता है। सूझ-बूझ से काम करने का पूरा-पूरा अभ्यास करो। भले बुरे जानने की शक्ति उत्पन्न करो। जीवन के प्रत्येक अंग का विश्लेषण करो और उसे समझो। मन को सजग बनाओ ताकि वह समझे कि भौतिक और आध्यात्मिक जगत के सब काम कारण से होते हैं और उनका अच्छा या बुरा फल भोगना

पड़ता है। तब तुमको मालूम होगा कि विषय और भोग का जीवन कितना निकृष्ट होता है और सदाचार का कितना उत्कृष्ट। जहाँ 'सत्य' होता है वहाँ कोई गड़बड़ी नहीं उत्पन्न होती।

मई ३०

जब तुम आध्यात्मिक दृष्टि से अपने जीवन पर विचार करोगे तो तुमको मालूम हो जायगा कि कितने जन्मों का अनुभव जमा करके तुम इस अवस्था को पहुँचे हो। कभी तुम गरीब से अमीर और कभी अमीर से गरीब हुए हो। इस प्रकार तुम्हारे मन में अनेक जन्मों के संस्कार पड़ते गये हैं और उन्हीं के अनुसार तुम्हारा वर्तमान जीवन बना है। जब तुम अपने जीवन की तरह दूसरों के जीवन के भी विकास को समझोगे तो तुम उनके साथ दया का बर्ताव करोगे। ईश्वर के इस महत्वपूर्ण नियम को आँख खोलकर देखो और समझो कि मनुष्य को अपने पूर्व जन्म के संस्कारों को भी अपने साथ अनेक जन्मों में ले जाना पड़ता है और उसे उनका अच्छा या बुरा फल भी इसी जीवन में भोगना पड़ता है। सभी जीवधारी इस अटल नियम से बँधे हुए हैं। यह सब देखकर और समझ कर तुम्हारे हृदय में एक ठेस लगेगी और अहंकार को छोड़ कर तुम 'सत्य' को ही सब कुछ समझोगे।

मई ३१

मनुष्य स्वयं अपने को मूर्ख, बुद्धिमान, निर्बल और सबल बनाता है। कोई बाहरी वस्तु उसे ऐसा नहीं बनाती। मनुष्य केवल अपने को मजबूत बना सकता है, दूसरे को नहीं। वह अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर सकता है, दूसरों की इन्द्रियों को नहीं। तुम दूसरों से उपदेश ले सकते हो किन्तु उसको चरितार्थ तुम्हीं करोगे, दूसरे नहीं। दूसरों का सहारा छोड़ कर अपनी उन्नति के लिये तुम्हें स्वयं अपनी भीतरी शक्ति पर निर्भर होना पड़ेगा। कोई सम्प्रदाय तुम्हें प्रलोभनों से नहीं बचावेगा, केवल तुम्हारी भीतरी शक्ति ही तुम्हें प्रलोभनों से बचावेगी। आपत्तिकाल में कोई धार्मिक

ज्ञान तुम्हारी रक्षा न करेगा, मनुष्य का भीतरी असली ज्ञान ही उसकी रक्षा कर सकेगा।

अच्छे विचारों को मन में लाने और अच्छे कर्मों के करने से ही हमें शुद्ध बुद्धि मिलती है। मन और हृदय को प्रेम और सत्य के मार्ग पर चलाकर ही हमें शुद्ध ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

जून १

जगत में सबको ईश्वर की ओर से समान न्याय मिलता है, ऐसा जानकर दूसरों के प्रति हमारे प्रेम में न्यूनता नहीं आनी चाहिये प्रत्युत यह जानकर वृद्धि होनी चाहिये कि वे अज्ञानी हैं और ईश्वरीय न्याय को न समझ कर बराबर भूलें करते रहते हैं। अमीर लोग गरीबों की अपेक्षा प्रायः अधिक दुखी रहते हैं और उन्हें भी दूसरों की तरह दुख और सुख भोगना पड़ता है। ईश्वरीय न्याय अमीर और गरीब दोनों को समान रूप से चेतावनी देता रहता है। अमीरों से वह कहता है, "देखो, तुम बड़े स्वार्थी और अत्याचारी हो और अपने धन का दुरुपयोग करते हो इसलिये तुम्हें इसका फल भोगना पड़ेगा।" गरीबों से वह कहता है, 'देखो, तुमने पहले जन्म में जो दुष्कर्म किया था उसका दुख भोग रहे हो। अब तुम पवित्रता प्रेम और शान्ति उत्पन्न करने वाले अच्छे-अच्छे काम करो जिससे तुम्हारा कष्ट दूर हो और तुम्हारी वर्तमान दशा में सुधार हो।"

जून २

मन की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं से प्रेरित होकर मनुष्य काम करता है और उसका अच्छा या बुरा फल भोगता है जिसे सुख या दुःख कहते हैं। अतएव सुख या दुःख लाने के लिये मनुष्य को अपने विचारों में परिवर्तन करना होगा। सुख के स्थान में दुःख लाने के लिये मनुष्य को अपनी विचारधारा ऐसे कर्मों में लगानी होगी जिनके करने से दुःख होता है, उसी प्रकार दुःख के स्थान में सुख लाने के लिये उसे अपनी विचारधारा ऐसे कर्मों में लगानी होगी जिनके करने से सुख मिलता है। स्वार्थ में दुःख होता है किन्तु त्याग में सुख है। जैसा विचार होगा वैसा ही उसका

फल मिलेगा। मनुष्य शुरू शुरू में जिन विचारों से काम करता है उन्हें वह बदल सकता है किन्तु एक बार सोचकर जो काम उसने कर दिया उसके फल को वह नष्ट नहीं कर सकता। वह अपने स्वभाव को पवित्र बना सकता है। वह अपने चरित्र को सुधार सकता है। आत्म संयम में बड़ी शक्ति है। अपने को बदलने में बड़ा आनन्द है।

जून ३

जरा उस मनुष्य की दशा पर विचार करो जिसके मन में लोभ, ईर्ष्या और सन्देह भरे रहते हैं। हर वस्तु उसे संकीर्ण, तुच्छ और दुखद दिखलाई पड़ती है। अपने में कान्ति न होने के कारण प्रत्येक वस्तु उसे कान्तिहीन दिखलाई पड़ती है और अपने में नीचता होने के कारण प्रत्येक वस्तु उसे तुच्छ दिखलाई पड़ती है। हृदय में स्वार्थ भरा होने से वह उत्कृष्ट स्वार्थ रहित कामों को देख ही नहीं सकता। उसकी प्रवृत्ति हमेशा गन्दे कामों की ओर रहती है।

अब जरा उस मनुष्य की दशा पर विचार करो जिसके मन में न लोभ है, न ईर्ष्या है और न सन्देह है। उसका संसार कितना विचित्र और मनोहर होता है। वह जिस प्रकार स्वयं ईमानदार है उसी प्रकार दूसरों को भी ईमानदार समझता है। दुष्ट से दुष्ट मनुष्य उसके सामने आकर अपनी दुष्टता को भूल जाते हैं और यद्यपि वे घबड़ाये रहते हैं फिर भी उससे स्फूर्ति पाकर थोड़े समय के लिये वे अपने जीवन को अत्यन्त शान्त और सुखी बना लेते हैं।

जून ४

स्वर्ग की बादशाहत कोई जबरदस्ती नहीं ले सकता। वह तो उस मनुष्य को आप से आप मिलती है जो ईश्वरीय नियमों के अनुसार अपने चरित्र का निर्माण करता है। डाकू को डाकुओं की संगति में आनन्द मिलता है और ईश्वर भक्त को ईश्वर भक्तों में, सारे मनुष्य शीशे की तरह अपना प्रकाश फेंकते रहते हैं। जिस प्रकार मनुष्य शीशे में जब अपना मुँह देखता है तो जैसा उसका मुँह है वैसा ही उसे दिखलाई पड़ता है,

उसी प्रकार जिस भावना से मनुष्य दूसरों की ओर देखता है वही भावना उसको उनमें दिखलाई पड़ती है।

प्रत्येक मनुष्य अपने ही विचारों की छोटी या बड़ी परिधि में उठता बैठता है। उस सीमा के बाहर के लोगों का उसे कुछ भी ज्ञान नहीं होता। उसकी संगति की जितनी छोटी परिधि होगी उतना ही उसका विश्वास होगा कि मेरे दायरे के बाहर कोई दूसरा दायरा नहीं है। छोटा पात्र बड़े पात्र को अपने में नहीं रख सकता। उसी प्रकार संकीर्ण हृदय वाले विशाल हृदय वाले महात्माओं की संगति नहीं कर सकते। इसके लिये अधिक ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है।

जून ५

जो भावनायें मनुष्य के हृदय में होती हैं उन्हीं के अनुसार उसके काम होते हैं। प्रकृति वैसी मन की सहायता करती है। विचारों से घटनायें होती हैं और परिस्थितियाँ बनती हैं। मनुष्य जैसी भावनाओं से दूसरों के साथ बर्तता है उसी प्रकार का व्यवहार दूसरों का उसके प्रति होता है। मनुष्य समाज का एक अंग है। वह उससे अलग नहीं हो सकता। वह अपने विचारों और कर्मों से समाज को प्रभावित करता रहता है

वह अपने चित्त की चंचलता और इच्छाओं से बाहरी वायु मंडल को हितकर नहीं बना सकता किन्तु चंचलता और इच्छाओं को नष्ट अवश्य कर सकता है। वह अपने मन को ऐसा अवश्य बना सकता है जिसके कारण सारा वायु मंडल बदलकर उसके अनुकूल हो जाय। वह दूसरों के विचारों को बदल कर अपनी ओर नहीं कर सकता। हाँ, वह अपने विचारों को ऊँचा बनाकर दूसरों के विचारों को अपनी ओर अवश्य खींच सकता है।

जून ६

तुम्हारे बन्धन और मोक्ष का कारण तुम्हारा मन ही तो है। तुम्हारे दूषित मन और दूषित काम के ही कारण दूसरे लोग तुम्हें हानि पहुँचाते हैं। तुम स्वयं अपनी हानि के कारण हो, दूसरे तो तुम्हारी इच्छा पालन करने वाले गुमास्ते हैं। अपने परिपक्व विचारों के फल का ही नाम भाग्य है। हर एक मनुष्य अपने अच्छे और बुरे विचारों से ही अपने अच्छे या बुरे भाग्य को बनाता है। सचाई पर चलने वाला मनुष्य बंधन मुक्त रहता है। उसको न तो कोई हानि पहुँचा सकता है और न उसकी कोई हत्या कर सकता है। उसकी शान्ति को भी कोई भंग नहीं कर सकता। वह दूसरों के साथ ऐसा प्रेम पूर्ण वर्ताव करता है कि वे उसे हानि पहुँचाने का विचार ही बदल देते हैं। यदि उसको वे हानि पहुँचाते भी हैं तो उसकी ही हानि हो जाती है और वह साफ बच जाता है। वह दूसरों की निस्वार्थ सेवा करता है इसी कारण वह हमेशा सुखी और शान्त रहता है। उसकी निस्वार्थ सेवा की जड़ में गम्भीरता होती है और उसमें सुख के फूल खिलते हैं।

जून ७

मनुष्य सोचा करता है कि यदि मेरे पास धन होता, समय होता, प्रभाव होता और गृहस्थी से मुझे फ़ुरसत मिलती, तो मैं बड़े-बड़े काम करता; किन्तु वास्तव में उसका ऐसा सोचना निराधार है। वह अपने मन में इन चीज़ों को महत्त्व दिये हुए है, जो उनमें है ही नहीं। इसी से उसके मन में कमजोरी आ जाती है और वह ऐसी निर्मूल बातें करने लगता है। उसकी निराशा का कारण तो उसके मन की कमजोरी है। जब उपर्युक्त विचारों द्वारा वह परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेता है तो उसे मालूम होने लगता है कि मेरी निराशा ही मुझे चाबुक मार-कर मुझे सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचायेगी और मेरी सम्पूर्ण बाधाओं को मेरी सहायक बनायेगी।

जून ८

मनुष्य विवेक और बुद्धि के सहारे जीवित रहता है। जिन नियमों से इस जगत का काम हो रहा है उनमें से एक भी नियम को वह नहीं बना सकता। ये नियम अपने आप बने हुए हैं और बड़े ही महत्वपूर्ण हैं। ये न तो बनाये जा सकते हैं और न नष्ट किये जा सकते हैं। इन नियमों के तोड़ने से मनुष्य संसार में बंध जाता है और तब उसे कोई बुद्धिमान नहीं कहता। स्वतन्त्र कौन मनुष्य है? वह चोर जो देश के कानून को तोड़ता है या वह ईमानदार नागरिक जो उनका पालन करता है? स्वतन्त्र कौन मनुष्य है? वह मूर्ख जो मनमाना जीवन व्यतीत करता है या वह बुद्धिमान जो 'सत्य' के मार्ग पर चलना चाहता है।

स्वभावतः मनुष्य आदतों से बना है, इस सिद्धान्त को वह नहीं बदल सकता, हाँ, वह अपनी आदतों को अवश्य बदल सकता है; वह अच्छी आदतें डालकर अपने जीवन को ऊँचा उठा सकता है। नेक मनुष्य वही है जिसके विचार और काम ऊँचे हों।

जून ९

मनुष्य अपने विचारों, अपने कामों और अपने अनुभवों को बार-बार दोहराता रहता है जिससे वे उसके खून में मिलकर उसके जीवन के एक अंग हो जाते हैं और उसके चरित्र का निर्माण करते हैं। मस्तिष्क में ज्ञान का संचय ही विकास है। इस समय मनुष्य जो कुछ भी है वह अपने खास विचारों और कार्यों का बार-बार दोहराने के फल स्वरूप बना है। वह पहले से ही नहीं बना है। उसने अपने को बनाया है और बराबर बनाता जा रहा है। अपनी स्वतंत्र बुद्धि से ही उसने अपना चरित्र बनाया है। वह आगे भी जैसा सोचेगा और जैसा करेगा उसी के अनुसार वह अपने को बनावेगा।

प्रत्येक मनुष्य विचारों और कामों का समूह है। जो काम उसके द्वारा अपने आप बिना प्रयास के होते रहते हैं, वे उसकी विचार धारा को सूचित करते हैं और बार-बार दोहराये जाने से वे अपने आप होने लगते

बिस काम की आदत पड़ जाती है, वह अपने आप होता रहता उसमें मनुष्य को किंचित् भी प्रयास नहीं करना पड़ता। कुछ समय वह आदत मनुष्य को ऐसा जकड़ लेती है कि यदि वह अपनी इच शक्ति द्वारा छुड़ाना भी चाहे तो नहीं छुड़ा सकता।

जून १०

यह बात सत्य है कि मनुष्य अपने मन के विचारों ही द्वारा प्रतिदिन करता है। यों कहिये कि मनुष्य विचारों से ही बना है और वह र चाहे उधर उनको मोड़कर अपनी आदतें सुधार सकता है। इसमें इ नहीं कि अनेक पूर्व जन्मों के कर्मों की निधि लेकर मनुष्य ने जन्म ा है। उसने स्वयं उन कर्मों को चुनकर किया था किन्तु यदि वह चाहे अपने अच्छे-अच्छे विचारों और कर्मों द्वारा वह अपने वर्तमान में भी र कर सकता है।

बुरी आदतों के कारण मनुष्य की वर्तमान दशा चाहे कितनी खराब गई हो, किन्तु उसका मौलिक स्वभाव तो अच्छा ही रहता है और यदि वह ानी से काम लें तो बुरी आदतों से पिंड छुड़ाकर ऊँचा बना सकता है।

जून ११

मन का प्रभाव शरीर पर पड़ता है। जब कोई रोग होता है तो मव है मनुष्य मन को सुधार कर शुरू में अपने को चंगा न कर सक : भी संभव है कि पूर्व संस्कारों के कारण उसकी हालत और भी राब हो जाय किन्तु घबड़ाने की कोई बात नहीं है। जिस प्रकार 'सत्य' मार्ग पर चलने से मनुष्य को एकाएक शान्ति नहीं मिलती उसी प्रकार मारी में मन को सुधार कर वह एकाएक अपने को चंगा नहीं कर क्ता। मन का प्रभाव शरीर पर पड़ने के लिये कुछ समय चाहिये। मव है, शरीर पूरी तरह पहले स्वस्थ न हो किन्तु स्वस्थ होना शुरू वश्य हो जायगा। यदि मन पत्थर की तरह मजबूत हो जाय तो उसका भाव शरीर पर बिना पड़े न रहेगा और जो प्रधानता शरीर को मन के ऊपर बहुत से लोग देते हैं उसको वे न देंगे।

जून १२

मनुष्य जब विषयों में फँस जाता है तो दुखी होता है और मन में बड़ी अशान्ति उत्पन्न होती है। कुछ दिन तक वह इनका झूठा सुख भोग लेता है तो उसे मालूम होता है कि अरे, यह सुख तो निस्सार है और विषयों से उसको कभी सन्तोष नहीं होता। इन्द्रिय सुख भोगते समय उसका दिल भी उसे कोंचा करता है और धीरे-धीरे उसे विश्वास होने लगता है कि इन विषयों से मनुष्य को कभी सच्चा सुख नहीं मिल सकता। सच्चा सुख और शान्ति तो उसे ईश्वर में ही मिल सकती है जो अमर है, शास्वत है और जिसका न आदि है और न अन्त है।

वास्तव में मनुष्य स्वभावतः निर्दोष और अमर है किन्तु अपनी मूर्खता से विषयों से बंधा हुआ है। वह अपना पिंड इन विषयों से छुड़ा कर अपने असली स्वभाव को पहिचानने में लगा है।

जून १३

मनुष्य की आत्मा ईश्वर का ही अंश है और वह उसी में मिलना चाहती है। मनुष्य का भाग उस समय तक अन्धकारमय रहता है और उसे शान्ति नहीं मिलती जब तक उसकी आत्मा संसार के खप्नवत् झमेलों में फँसकर अपने असली घर ईश्वर के पास नहीं पहुँच जाती।

जिस प्रकार समुद्र के एक बूँद पानी में, जो उससे अलग हो जाता है समुद्र के ही गुण होते हैं उसी प्रकार आत्मा में भी ईश्वर से अलग होकर भी उसी के गुण होते हैं। जिस प्रकार पानी की बूँद प्राकृतिक नियम द्वारा उसी समुद्र में फिर से पहुँच जाती है और उसी में विलीन हो जाती है उसी प्रकार उसी प्राकृतिक नियम द्वारा मनुष्य की आत्मा भी घूम फिर कर अपने जन्मस्थान ईश्वर के ही पास पहुँच जाती है और उसी में विलीन हो जाती है।

जून १४

मनुष्य जब तक संसार के विषयों में फँसा हुआ है तब तक उसे अपने असली स्वरूप का ज्ञान नहीं हो सकता। अपनापन, भिन्नता और स्वार्थ सब एक ही थैले के चट्टे बट्टे हैं। इनसे मनुष्य की बुद्धि और उसके दिव्य स्वरूप का ह्रास होता है। जब मनुष्य के ये तीनों अवगुण मिट जाते हैं तो वह ईश्वर के सम्पर्क में पहुँच कर अमरत्व को प्राप्त कर सका है।

स्वार्थी मनुष्यों को स्वार्थ छोड़ने में बड़ा कष्ट होता है और इसे वे एक बड़ी आपत्ति और हानि समझते हैं। किन्तु वास्तव में यह अत्यंत लाभप्रद और चिरस्थायी ईश्वरीय देन है जिसका मुकाबिला कोई कर ही नहीं सकता। भोगी पुरुष न तो ईश्वरीय नियमों को समझता है और न अपने निर्दोष मूल स्वभाव और भाग्य को ही जानता है। संसार की चमकीली और भड़कीली चीजों में वह पड़ा रहता है जिनमें कोई असली तत्व नहीं होता और मनुष्य अपने ही बनाये हुए माया के जाल में फँसकर नष्ट हो जाता है।

जून १५

इन्द्रिय भोगों को स्थायी जानकर जब मनुष्य उनमें फँसते हैं तो वे इस बात को भूल जाते हैं कि ये शीघ्र नष्ट हो जायेंगे। वे हमेशा मृत्यु से डरते रहते हैं और उनके स्वार्थ की दुःखद परछाई एक निर्दयी भूत की तरह उनके पीछे-पीछे चला करती है।

जैसे-जैसे इन भोगों की वृद्धि होती जाती है वैसे-वैसे मनुष्यों की आन्तरिक शक्ति कुंठित होती जाती है और वे अधिकाधिक नष्ट होने वाले इन्द्रिय भोगों में लिप्त होते जाते हैं। किन्तु जो बुद्धिमान हैं वे आत्मा को अमर समझते और इन्द्रिय भोगों को क्षणस्थायी मानते हैं।

जून १६

प्रकृति की सब वस्तुएं परिवर्तनशील, अस्थिर और अस्थायी होती हैं किन्तु उसका महत्वपूर्ण नियम स्थायी होता है। प्रकृति के अनेक रूप होते हैं और उनमें भिन्नता होती है किन्तु नियम केवल एक ही है और वह समान रूप से काम करता है। इन्द्रियों और उनके भोगों को वश में करके मनुष्य संसार की माया से ऊपर उठ जाता है और ईश्वर के सम्मुख यानी सत्य के देश में उड़कर पहुँच जाता है जहां से सारे प्रेम के समान उत्पन्न होते हैं।

इस लिए मनुष्य त्याग का जीवन व्यतीत करे, इन्द्रियों को वश में रक्खे, विषय में और इन्द्रिय भोगों में न फँसे, और जब तक एक दिव्य पुरुष न बन जाय तब तक सत्य और धर्म के मार्ग पर चलता रहे।

जून १७

जो स्वार्थों का बलिदान करके संसार से प्रेम करता है वही सच्चा सन्त है चाहे वह एकान्त जंगल में रहे अथवा जन समुदाय के बीच झोपड़ों में या राजप्रासाद में।

जो मनुष्य आध्यात्मिक जगत में उन्नति करना चाहता है उसको फ्रांसिस और एग्यानी सरीखे सन्तों से ज्ञान प्राप्त होता है। सन्तों को उन सिद्ध पुरुषों से ज्ञान मिलता है जो दुख से परे हैं, जिनको मानसिक चिन्तायें नहीं सताती, जो पवित्र और गम्भीर है और जिनके पास प्रलोभन को जाने की हिम्मत भी नहीं होती। सिद्ध पुरुषों को उन उद्धारकों से ज्ञान प्राप्त होता है जो निस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करते हैं, जो दिव्य ईश्वरीय ज्योति का प्रकाश करते हैं और जो दुःख से पीड़ित जनसमूह में मिलकर उनके उद्धार का सतत प्रयत्न करते हैं।

जून १८

संसार को 'त्याग' का पाठ पढ़ना चाहिये। इस पाठ को हरयुग के सन्तों, सिद्धों और उद्धारकों ने पढ़ा है और उसी के अनुसार जीवन भर उन्होंने श्रम किया है। सभी देश और उपदेशक इसी पाठ को पढ़ने का आदेश देते हैं। जो संसार में इस समय स्वार्थ में लिप्त होकर मारा मारा फिर रहा है वही यदि 'त्याग' के पाठ को सरलता से पढ़ ले तो अपना कल्याण कर सकता है।

जो 'त्याग' का पाठ पढ़ते हैं वे 'सत्य' और शान्ति के मार्ग पर चल रहे हैं। वे उस अमरत्व को प्राप्त होते हैं जहाँ जन्म और मरण के दुःख नहीं भोगने पड़ते। संसार के इतने बड़े कारबार में 'त्याग' का रत्ती भर भी प्रयत्न निष्फल नहीं होता। मनुष्य तब तक इस संसार-सागर को पार नहीं कर सकता जब तक 'त्याग' और दूसरे गुणों द्वारा वह अपने को दिव्य नहीं बना लेता।

जून १९

समुद्र में ऐसे गहरे-गहरे स्थान हैं जहाँ भयानक से भयानक तूफान नहीं पहुँच सकते। उसी प्रकार मनुष्य के हृदय में भी ऐसे शान्त और पवित्र गहरे स्थान हैं जिन्हें पाप और दुःख के तूफान स्पर्श तक नहीं कर सकते। हृदय के ऐसे गहरे स्थान में पहुँचकर उन्हीं में रहने का नाम शान्ति है।

बाहर संसार में बड़े झगड़े बखेड़े हैं किन्तु मनुष्य के हृदय में स्थायी शान्ति है। मनुष्य की आत्मा आँख बन्द करके पाप रहित जीवन व्यतीत करना चाहती है जिसमें कि सच्ची शान्ति है। संसार से निर्लिप्त हो जाओ, इन्द्रिय भोगों को छोड़ दो, दिमागी बहस मत करो, संसार के झगड़े बखेड़ों से बचो और फिर अन्तर्मुख होकर हृदय के भीतर देखो तो तुम्हारे सब दोष मिट जायेंगे और तुम्हें स्थायी शान्ति मिलेगी। ईश्वर की कृपा से तुम्हारे दिव्य चक्षु भी उसी समय खुल जायेंगे जिनके द्वारा तुम हर वस्तु को उसके असली स्वरूप में देखोगे।

जून २०

मनुष्य शान्ति-शान्ति तो चिल्लाते हैं किन्तु शान्ति कहीं दिखलाई नहीं पड़ती। शान्ति के स्थान में हम शत्रुता, अशान्ति और कलह देखते हैं। बिना स्वार्थों का त्याग किये शान्ति मिल ही नहीं सकती।

हमें जो शान्ति अपने समाज से मिलती है अथवा इन्द्रियों के भोगों से प्राप्त होती है अथवा सांसारिक वस्तुओं के मिलने से उपलब्ध होती है वह स्वभावतः क्षणस्थायी है और वह परीक्षा के समय नहीं टिकती। केवल मन की शान्ति ही टिकाऊ होती है जो हृदय को शुद्ध करने से मिलती है।

केवल धार्मिकता ही अमर शांति है जो आत्मसंयम से प्राप्त होती है। हमारी सात्विक बुद्धि ही हमें शांति के मार्ग पर ले जाती है। जो मनुष्य धर्ममय जीवन व्यतीत करता है वही शांति पाने का अधिकारी होता है किन्तु पूर्ण शांति उस समय मिलती है, जब वह जीवन को पवित्र बनाकर हृदय से स्वार्थ की भावना को नष्ट कर देता है।

जून २१

मनुष्यो, यदि तुम स्थायी सुख प्राप्त करना चाहते हो, यदि तुम्हें टिकाऊ शान्ति प्राप्त करने की इच्छा है यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे सारे कष्ट और तुम्हारी सारी चिन्ताएं नष्ट हो जायं और तुम्हें मोक्ष मिले तथा तुम्हारा जीवन यशस्वी हो तो तुम अपनी इन्द्रियों को वश में करो। प्रत्येक विचार, प्रत्येक भावना और प्रत्येक इच्छा को अपने वश में करो, शान्ति प्राप्त करने का इससे बढ़कर दूसरा मार्ग नहीं है। यदि तुम इस मार्ग पर न चलोगे तो तुम्हारी प्रार्थना और तुम्हारा दान पुण्य सब निष्फल हो जायगा और देवता भी तुम्हारी सहायता न कर सकेंगे। जो अपनी इन्द्रियों को वश में करता है उसी को उत्कृष्ट जीवन मिलता है।

जून २२

स्कूल का अध्यापक पहले अपने विद्यार्थियों को गणित के गूढ़ सिद्धान्त नहीं बतलाता। वह जानता है कि ऐसा करने से मेरी-पढ़ाई से कोई लाभ न होगा, वह पहिले एक सरल जोड़ देता है और उसको हल करने का नियम बतला देता है। विद्यार्थी कई बार भूलें करते हैं किन्तु एक समय ऐसा आता है जब व जोड़ को ठीक-ठीक लगा लेते हैं। इसके बाद उन्हें कठिन गणित का प्रश्न दिया जाता है। जब विद्यार्थी उसे भी कर लेते हैं तब उन्हें उससे भी कठिन प्रश्न सिखलाया जाता है। इस प्रकार गणित के कई प्रश्न जब कुछ वर्षों में विद्यार्थी परिश्रम से सीख लेते हैं तब अध्यापक उनको गणित के गूढ़ सिद्धान्त बताता है। इसी प्रकार उपदेशक लोग पहले धर्म की छोटी-छोटी बातें बताते हैं। जब मनुष्य उन छोटी-छोटी बातों को अच्छी तरह समझ लेते हैं तब उनको धर्म की ऊँची और गूढ़ बातें बताई जाती हैं।

जून २३

अच्छे घराने में बालक को पहले आज्ञा पालन करना सिखाया जाता है और उसे यह भी बताया जाता है कि अमुक अमुक अवसरों पर तुम्हारा व्यवहार इस प्रकार का होना चाहिए। पहले बालकों को यह नहीं बत-लाया जाता कि तुम से आज्ञा का पालन क्यों कराया जा रहा है? जब उनकी आदत पड़ जाती है और जब वे अपना सब काम व्यवस्था से करने लगते हैं तब उन्हें आज्ञा पालन का रहस्य बताया जाता है। बच्चा जब तक घर के और समाज के कामों को ठीक-ठीक नहीं करने लगता तब तक कोई पिता उसे नीति शास्त्र नहीं सिखलाता।

करने से धर्म की बातें मालूम होती हैं। धर्म को अच्छी तरह समझने से ही 'सत्य' का ज्ञान होता है। जो धर्म को समझ लेता है वह 'सत्य' को भी अच्छी तरह समझ लेता है।

जून २४

जहां प्रेम है और जहां धर्म है, वहीं ईश्वर है। जो अपने स्वार्थ और अहंकार को छोड़ कर मन को शुद्ध तथा निर्दोष बनाते हैं उनके हृदय में ही ईश्वर का निवास स्थान हो जाता है। जो इन्द्रियों को वश में रखता है, अपने जीवन को पवित्र बनाता है, संसार के झंझटों से अलग रहता है, काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद और ईर्ष्या को छोड़ देता है वह ईश्वर ही है। उसे परम शान्ति मिलती है।

जो पाप नहीं करता, उसके सारे दुख नष्ट हो जाते हैं। वह हमेशा सुखी रहता है। जिसका हृदय बिल्कुल शुद्ध हो गया है उसी के भीतर ईश्वर का निवास है। जो नेक रास्ते पर चलता है उसे महात्मा ईसा का जीवन मिलता है।

जून २५

मन पर अनुशासन रखने का सबसे सरल उपाय यह है कि हम आलस्य को छोड़ें। जब तक ऐसा न किया जायगा तब तक हम उन्नति न कर सकेंगे। आलस्य 'सत्य' के मार्ग में रोड़ा अटकाता है। आवश्यकता से अधिक सोना, टालमटोल करना, और आवश्यक कामों की ओर से उदासीन रहना आलस्य कहलाता है। आलस्य छोड़ने के लिये हम नियम से प्रातःकाल उठें, शरीर को फिर से काम के योग्य बनाने के लिये जितने सोने की आवश्यकता है, उतना ही सोयें और जो काम हमारे सामने आजाय, वह कितना भी छोटा क्यों न हो, उसे मन लगाकर फुर्ती के साथ करें।

जून २६

एक निश्चित विषय की ओर बुद्धिमानी के साथ विचार करने से पूर्ण सफलता मिलती है। सफलता मनुष्य के व्यक्तिगत गुणों पर निर्भर है, परिस्थिति पर नहीं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बहुत अंशों में सफलता को परिस्थितियों का मुँह देखना पड़ता है किन्तु मनुष्य ही उन्हें अपने अनुकूल बनाता है और उनसे यदि काम न लिया जाय तो वे व्यर्थ जाती हैं

सफलता के लिये सुव्यवस्थित फुर्ती की भी जरूरत पड़ती है। यदि मन में फुर्ती न हुई तो हम किसी विषय पर मन लगाकर विचार न कर सकेंगे। सफलता फूल की तरह होती है जिसके लिये शुरू-शुरू में बड़ी तैयारी और परिश्रम करना पड़ता है। वह एकाएक भी मिल सकती है। मनुष्य सफलता तो देखता है किन्तु उसकी जड़ में जो नाना प्रकार के मानसिक विचार क्रम करते रहते हैं, जिनसे उसे सफलता मिलती है, उन्हें नहीं देख पाता।

जून २७

एक निश्चित मार्ग पर बराबर चलने वाले को सफलता मिलती है। इधर उधर भटकने या उस मार्ग को छोड़ देने से परिश्रम व्यय हो जाता है और सफलता बहुत दूर जा बैठती है।

सफलता के लिए जुटकर अथक परिश्रम करने की जरूरत है। यदि एक बार सफलता न मिले तो बार-बार कोशिश करते रहना चाहिए।

बड़े-बड़े व्यापारियों को जो सफलता मिली है वह उन्हें परिश्रम द्वारा ही मिली है। कुशल उपदेशकों ने भी परिश्रम पर ही जोर दिया है। जो परिश्रम नहीं करते उनके जीवन की उपयोगिता नष्ट हो जाती है। अतएव सफलता के लिये जुटकर परिश्रम करना चाहिए। काम करने का नाम ही परिश्रम है।

जून २८

जब मनुष्य पैसों के बदले रुपया और रुपयों के बदले गिन्नी मोल लेता है तो वह सिक्कों का इस्तेमाल करना नहीं छोड़ता। वह भारी सिक्कों को हलके सिक्कों में बदल लेता है जो छोटे और अधिक मूल्यवान होते हैं। इसी प्रकार जो चंचलता के बदले स्थिरता और स्थिरता के बदले गम्भीरता मोल लेता है वह परिश्रम करना नहीं छोड़ता। वह छितरी हुई निष्फलशक्ति के बदले में केवल एक दूसरी प्रबल, प्रभावशाली और मूल्यवान शक्ति ग्रहण कर लेता है।

प्रारम्भ में भद्दे प्रकार का ही परिश्रम आवश्यक होता है, क्योंकि बिना उसके ऊँचे प्रकार का परिश्रम असम्भव है। यथा पहले घुटनों चलता है, इसके बाद खड़े-खड़े चलना सीखता है। वह बातचीत करके तब लेख लिख सकता है। मनुष्य कमजोरी को छोड़ आगे बढ़कर शक्ति को अपनाता है। वह अधिक से अधिक परिश्रम करके उन्नति करता हुआ बढ़ता जाता है।

जून २९

मनुष्य जब अज्ञानता से अपना पतन कर लेता है तो ईश्वर दोनों हाथों से प्रेम के साथ उसकी रक्षा करता है यद्यपि वह हमारे कर्मों के लिये हमें पहले दण्ड भी देता है। हम जितना अधिक कष्ट भोगेंगे उतना ही अधिक हमें ईश्वर का ज्ञान होगा। ईश्वर बहुत ही दयालु होकर मनुष्य को सुख देता है और जितना ही अधिक उसे अपने दिव्य स्वरूप का ज्ञान होगा उतना ही अधिक उसे सुख मिलेगा। हम कुछ न कुछ दुख उठा कर सबक सीखते हैं और सीखकर उन्नति करते हैं। जब हृदय में प्रेम भर जाता है तो चारों ओर हमें विचित्र रूप में प्रेम ही प्रेम दिखलाई पड़ता है, प्रेम से शान्ति मिलती है।

हम चीजों के विधान को नहीं बदल सकते जो कि पूर्ण रूप से अलग अपना काम करता है किन्तु हम अपने को अवश्य इस प्रकार बदल सकते हैं कि उस विधान को समझें और उससे लाभ उठावें।

जून ३०

इस क्रमबद्ध संसार के महात्माओं का विश्वास है कि संसार कई टिकड़ों से मिलकर नहीं बना है प्रत्युत यह एक पूर्ण वस्तु है। ये महात्मा हमेशा बड़े सुखी और शान्त रहते हैं।

विषयी पुरुष सोचा करता है 'ईश्वर ने व्यवस्था के साथ चीजों की रचना नहीं की है। हम उनको तोड़-फोड़ कर अपनी इच्छा के अनुसार फिर से निर्माण करने का समार्थ्य रखते हैं।"

उन भागियों की यह कैसी तुच्छ धारणा है। वे नियम विरुद्ध भोगों का आनन्द लूटना चाहते हैं किन्तु उनके दुखद फलों को नहीं भोगना चाहते। ऐसे ही पुरुष कहा करते हैं कि ईश्वर ने व्यवस्था के साथ चीजों की रचना नहीं की। वे चाहते हैं कि हमारी इच्छा के अनुसार संसार बन जाय। उनको हर बात में अव्यवस्था ही पसन्द है। किन्तु बुद्धिमान मनुष्य ईश्वरीय विधान के सामने अपना मस्तक झुकाता है और समझता है कि सृष्टि के सारे काम एक पूर्ण व्यवस्था के साथ हो रहे हैं।

जुलाई १

कितनी ही प्रतिकूल परिस्थितियों में मनुष्य क्यों न हो, यदि वह चाहे तो उनको अपने अनुकूल बनाकर शक्तिशाली और बुद्धिमान हो सकता है। अर्थ लोलुपता और दंड के भय को हमेशा के लिये अपने हृदय से निकाल दो। तुच्छ इन्द्रिय भोगों को छोड़कर अपने कर्तव्य का पालन करो। शूरवीर, पवित्र और स्वावलम्बी बनो। ऐसे ही जीवन से तुमको बुद्धि, सन्तोष और शक्ति मिलेगी। महात्माओं ने हमेशा से अपना ऊँचा आदर्श रक्खा है और अपने कर्तव्यों का पालन किया है, संसार में जो भी सुख है वह तुम में है, तुम्हारे पड़ोसी के घन में नहीं। तुम सोचते हो कि मैं गरीब हूँ। जी हाँ, यदि तुम गरीबी से मजबूत नहीं हो तो तुम गरीब अवश्य हो। तुम कहते हो कि आपत्तियों ने मुझे घेर रक्खा है किन्तु क्या चिन्ता करके और निष्क्रिय बनकर तुम उनको दूर कर सकोगे? यदि तुम बुद्धिमानी से काम लो तो कोई भी ऐसी बुराई नहीं है जिसे तुम नष्ट न कर सको।

जुलाई २

जो अपने बल से दूसरों पर जीत लेता है वह बली है। जो नम्रता से अपने को जीत लेता है वह शूरवीर है जो बल से दूसरों को जीतता है उसे दूसरे लोग भी बल से जीतते है। जो नम्रता से अपने को जीत लेता है उस कोई जीत नहीं सकता। वह तो स्वयं ईश्वर है और ईश्वर सर्वथा अजेय है। नम्र मनुष्य पराजय की दशा में भी विजयी रहता है। सुकरात मर करके अमर हैं। महात्मा ईसा सूली पर चढ़कर भी जीवित हैं। स्टिफेन पत्थरों से मारे पर भी जीवित हैं। असली चीज कभी नष्ट नहीं होती। नष्ट वही चीज होती है जो नकली है। जब मनुष्य को अपनी आन्तरिक शक्तियों का अनुभव हो जाता है जो असली और स्थायी, अपरिवर्तन शील और चिरन्तर है तब उसे ईश्वर का दर्शन होता है और वह नम्र हो जाता है। उसे सारी आपत्तियाँ घेर भी लें तो भी वे उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं। वे स्वयं छिन्न-भिन्न हो जाती हैं।

जुलाई ३

माया का कारण जानकर और उसकी नश्वरता से अवगत होकर तुम जीवन के असली तत्व तक पहुँच सकते हो। वहाँ पहुँचने पर तुमको मालूम होगा कि हम सब एक ही ईश्वर के प्रतिबिम्ब हैं इसलिये तुम न तो अपने लिए कोई चिन्ता करोगे और न दूसरों के लिए। तुम स्वयं कहोगे कि सारी सृष्टि का काम ईश्वरीय विधान के साथ चल रहा है। नम्र और शानी होकर तुम उन सबसे मित्रता करोगे जिनसे लोग शत्रुता करते होंगे। तुम उन्हें प्यार करोगे जब दूसरे उनसे घृणा करते होंगे, तुम उन्हें क्षमा प्रदान करोगे जब दूसरे उनसे कड़ाई के साथ पेश आते होंगे, तुम उनकी बात मानोगे जब दूसरे उनको फटकारते रहते होंगे, और उनके लिए तुम स्वयं अपनी हानि करोगे जब दूसरे उनसे लाभ उठाते होंगे। ऐसे-ऐसे कर्मों से दूसरे बली होते हुए भी कमजोर रहेंगे और तुम कमजोर होते हुए भी बली होगे। तुम्हारा उन पर प्रभाव पड़ेगा। इसलिए जब ईश्वर किसी की रक्षा करना चाहता है तो उसे नम्र और शानी बना देता है।

जुलाई ४

सचाई के रास्ते पर चलने वाला मनुष्य अजेय होता है। सम्भवतः कोई भी विरोधी न तो उसे जीत सकता है और न उसको हानि पहुँचा सकता है। उसका सत्य और उसकी पवित्रता उसके लिए कवच का काम करती है। उसे किसी दूसरे कवच के पहनने की आवश्यकता नहीं होती। जिस प्रकार बुराई भलाई पर हावी नहीं हो सकती उसी प्रकार उस पर बेईमान मनुष्य हावी नहीं हो सकता। निन्दा, ईर्ष्या, घृणा और मनोमालिन्य वहाँ तक पहुँच नहीं सकते और न उसका कुछ बिगाड़ सकते हैं। जो उसको हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं उनको अन्त में स्वयं कलंकित होना पड़ता है।

सचाई के रास्ते पर चलने वाला मनुष्य अपने मनोभावों को छिपाता नहीं और न छिपकर काम करता है। वह निर्भय और साहसी होता है और कोई विचार ही मन में नहीं लाता जिसे वह दूसरों से न कह सके। उसका निश्चय दृढ़ होता है। उसका शरीर स्वस्थ होता है। उसकी वाणी सीधी सादी और निर्दोष होती है। वह सबसे आँख मिलाकर बातचीत करता है। जब वह किसी को धोखा नहीं देता तो वह किसी से घबड़ा कैसे सकता है।

जुलाई ५

दिनको ईश्वरीय प्रकाश मिल चुका है और जो आसमान की बादशाहत में रहते हैं उन्हें जगत की सारी वस्तुओं में प्रेम दिखलाई पड़ता है। वे समझते हैं कि प्रेम ही से जीव जगत और यह जगत की उत्पत्ति होती और प्रेम ही से उनका पालन पोषण भी होता है। प्रेम ही उनकी रक्षा करता और प्रेम हो उनको जीवन दान देता है। उनके लिए प्रेम जीवन का नियम ही नहीं है प्रत्युत वह जीवन का विधान और स्वयं जीवन ही है। प्रेम को वे ईश्वरीय आज्ञा समझते हैं और इस प्रकार उसका पालन करके स्वयं मोक्ष के भागी होते हैं और दूसरों के भाग्य का भी निर्माण करते हैं। प्रेम में शान्ति है, अशान्ति का नाम तक नहीं है। मनुष्य न तो ऐसा कोई विचार मन में लावे और न कोइ ऐसा काम ही करे जिसमें प्रेम न हो। ऐसा करने से वह सब कष्टों से बच जायगा और उसका जीवन सुखी और शान्त हो सकेगा।

जुलाई ६

जिसे प्रेम का तत्त्व मालूम हो गया वह उसके स्थायी सुख का आनन्द लेने लगता है। उसको हृदय से प्रेम करना चाहिये। उसे साक्षात् प्रेम की ही मूर्ति मानना चाहिए। जो प्रेम की भावना से काम करता है उसे न तो कोई अपने से अलग करता है और न उसे किसी आपत्ति का सामना करना पड़ता है क्योंकि प्रेम ही ज्ञान है और प्रेम ही शक्ति है। जो प्रेम करना जानता है वह आपत्तियों को दूर कर सकता है, विफलता को सफलता में परिणत कर सकता है और दुःखमय परिस्थितियों को सुखमय बना सकता है।

इन्द्रियों को वश में करके मनुष्य प्रेम कर सकता है और जैसे-जैसे वह इस मार्ग पर चलता है वैसे-वैसे उसमें ईश्वरीय प्रकाश उत्पन्न होता है जिसकी अन्तिम सीढ़ी प्रेम ही होती है। इस प्रकार जब उसे प्रेम-रूपी ईश्वरीय शक्ति प्राप्त हो जाती है तब वह निर्भय हो जाता है।

जुलाई ७

उत्कृष्ट जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें पूरी स्वतंत्रता होती है—दासता की गन्ध तक नहीं रहती। यह पूरी स्वतंत्रता ईश्वर की आज्ञा मानने से मिलती है। जो ईश्वर की आज्ञा मानता है और उसके विधान में सहयोग देता है वह अपने मन और संसार को अपनी मुट्ठी में कर लेता है। मनुष्य ऊँची वस्तु को छोड़कर तुच्छ वायु ग्रहण कर सकता है किन्तु ऊँची वस्तु पर तुच्छ वस्तु कभी हावी नहीं हो सकती। जिसको ईश्वरीय प्रकाश मिल जाता है और जो अपने को स्वतंत्र समझता है उसे तुच्छ वस्तु त्याग कर ऊँची वस्तु को अपनाना चाहिए। ऐसा कर लेने पर लोग उसे 'संयमी' कहेंगे और उसे पूर्ण स्वतंत्रता का अनुभव होगा।

इन्द्रियों के वश में रहना ही दासता है और उनको वश में रखना ही स्वतंत्रता है। जो इन्द्रियों का दास है वह उस दासता को पसन्द करता

है, क्योंकि वह समझता है कि यदि इस दासता को छोड़ दूँगा तो जीवन का आनन्द जाता रहेगा, इस प्रकार वह जीवन में असफल रहता है और जीवन भर इन्द्रियों का दास ही बना रहता है।

जुलाई ८

जब हमारे हृदय में कठोरता होती है तब हम बाहरी लोगों पर भी कठोर होते हैं। बाहर की कठोरता भीतरी कठोरता के साथ परछाईं की तरह नाचा करती है। युगों तक गुलाम लोगों ने स्वतंत्रता की पुकार की और उनकी स्वतंत्रता के लिए मनुष्यकृत हजारों विधान बने तब भी उनको स्वतंत्रता नहीं मिली। उनको स्वतंत्रता तो केवल उन्हीं ईश्वरकृत विधानों से मिलेगी जो उनके हृदयों पर अंकित हैं। वे एक बार जब भीतरी स्वतंत्रता प्राप्त कर लेंगे तो अत्याचार की परछाईं फिर पृथ्वी को अन्धकारमय न कर सकेगी। यदि मनुष्य अपने पर अत्याचार करना छोड़ दे तो वह दूसरों पर अत्याचार न करेगा। मनुष्य बाहरी स्वतंत्रता के लिए तो विधान बनाते हैं किन्तु उनके हृदय तो गुलाम ही बने रहते हैं, उन पर स्वतंत्रता के विधान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मनुष्यकृत विधान के द्वारा मनुष्य बाहरी स्वतंत्रता प्राप्त कर लेता है किन्तु भीतर से गुलाम ही बना रहता है। जब मनुष्य अपने हृदय के विकारों को निकाल फेंकता है तब वह बाहर और भीतर दोनों ओर से स्वतंत्र हो जाता है।

जुलाई ९

महात्मा हमेशा नेक और सरल होता है। उसे ईश्वर की ओर से अपार शक्ति मिलती है जो उसके हृदय में हमेशा रहती है। वह पवित्र स्थानों में रहता है। वह शुद्ध आत्माओं से बातें करता और देवदूतों के साथ उठता बैठता है। उसके ऊपर ईश्वर का हाथ रहता है और वह स्वर्ग की हवा में साँस लेता है।

जो महात्मा होना चाहता है उसे पहले नेक होना चाहिये। महात्मा बनने की इच्छा कर लेने से कोई महात्मा नहीं हो सकता। उसमें तो उसका

पतन हो जायगा। महात्मा अपने आप बनता है। किसी वस्तु की इच्छा न करके पुरुष महात्मा होता है। महात्मा बनने की इच्छा करके मनुष्य अपनी तुच्छता, धृष्टता और अहंकार प्रकट करता है। महात्मा वह है जो एकान्त में रहे और जिसमें अपना स्वार्थ रत्ती भर भी न हो। तुच्छ मनुष्य अधिकार का भूखा रहता है। महात्मा अधिकार की चिन्ता स्वप्न में भी नहीं करता। वह स्वयं अधिकारपूर्ण एक अफसर बन जाता है जिसकी कचहरी में लोग अपील करते हैं।

जुलाई १०

यदि तुम सत्य का प्रचार करोगे तो अपने को भूल कर स्वयं सत्य-स्वरूप हो जाओगे। इस सत्य के प्रचार से जब तुम्हें मनुष्य के हृदय की नेकी और पवित्रता का ज्ञान होगा तब तुम्हारा जीवन प्रेममय हो जायगा। जो तुम सबसे प्रेम करोगे तो किसी में तुमको कोई दोष न दिखलाई पड़ेगा। तुम धुले हुए शब्द मुँह से निकालोगे किन्तु वे दूसरों के लिए उपदेश का काम करेंगे और तुम्हारे आचरण से दूसरों को शक्ति मिलेगी। यद्यपि तुम्हारे उत्कृष्ट विचार और निस्वार्थ काम मनुष्यों की दृष्टि में नहीं आते किन्तु वे युगों तक उत्सुक अज्ञानी पुरुषों का प्रभावित करते रहेंगे।

जो सत्य के मार्ग पर चलता है और त्याग की भावना रखता है उसे संसार के सर्वोत्तम पदार्थ मिलते हैं। वह ईश्वर से सम्बन्ध स्थापित करता है और महात्माओं की मंडली में प्रविष्ट हो जाता है।

जुलाई ११

विचार बीज के सदृश होते हैं और पक जाने पर उन फलों के बीजों को लोग फिर से बोते हैं। इसी प्रकार विचार मन में पनपते हैं, उनसे प्रेरित होकर मनुष्य अच्छे या बुरे काम करते हैं और फिर उन कामों से विचार उत्पन्न होकर दूसरों पर अपना प्रभाव डालते हैं। इस प्रकार विचारों की शृंखला अटूट चलती रहती है। उपदेशक बीज बोने वाला

एक आध्यात्मिक खेतिहर होता है। जो उससे उपदेश ग्रहण करता है वह एक किसान है जो मन रूपी अपने खेत में उपदेशक की तरह बीज बोना सीखता है। विचार की वृद्धि पौधे की वृद्धि है। यदि बीज समय पर बोया जाय तो उसमें से ज्ञान का पौधा निकलता और बुद्धि का फल लगता है।

जुलाई १२

एक बड़े उपदेशक ने अपने शिष्यों से कहा था, "हमेशा जागरूक रहो।" यदि कोई अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहता है तो उसे इस उपदेश के अनुसार चलना चाहिये। यह उपदेश जितना लाभदायक एक महात्मा के लिए है उतना ही एक व्यापारी के लिए भी है। निरंतर जागरूक रहना ही उद्देश्य की पूर्ति करना है। उसी उपदेशक ने यह भी कहा था, "यदि मनुष्य कोई काम करना चाहता है तो उसे तत्काल परिश्रम के साथ शुरू कर देना चाहिये।" काम का फल तुरन्त होता है। अतएव यदि काम सावधानी से शीघ्र किया जायगा तो हमको सफलता अवश्य मिलेगी। जो शक्ति हमारे पास है यदि हम उसका पूर्ण उपयोग करेंगे तो हमें और भी अधिक शक्ति प्राप्त होगी। केवल वही पुरुष शक्ति और मुक्ति उपलब्ध कर सकता है जो परिश्रम के साथ कोई काम करता है।

जुलाई १३

शान्ति से ही महान शक्ति मिलती है। जब मन में दृढ़ता होती है, उसमें अनुशासन होता है और उसकी विचारधारा सुव्यवस्थित होती है तब शान्ति मिलती है। शान्त मनुष्य को अपने कर्तव्य का पूर्ण ज्ञान रहता है। वह कहता है थोड़े से शब्द किन्तु उसके वे शब्द कड़े और प्रभावशाली होते हैं। उसकी योजनायें सुव्यवस्थित होती हैं और मशीन की तरह काम करती हैं। वह दूर तक की सोचता है और अपने काम को धुन के साथ करता है। कठिनाइयों की वह परवाह नहीं करता। वह जानता है कि शत्रु के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये, इसलिए वह

पतन हो जायगा। महात्मा अपने आप बनता है। किसी वस्तु की इच्छा न करके पुरुष महात्मा होता है। महात्मा बनने की इच्छा करके मनुष्य अपनी तुच्छता, धृष्टता और अहंकार प्रकट करता है। महात्मा वह है जो एकान्त में रहे और जिसमें अपना स्वार्थ रत्ती भर भी न हो। तुच्छ मनुष्य अधिकार का भूखा रहता है। महात्मा अधिकार की चिन्ता स्वप्न में भी नहीं करता। वह स्वयं अधिकारपूर्ण एक अफसर बन जाता है जिसकी कचहरी में लोग अपील करते हैं।

जुलाई १०

यदि तुम सत्य का प्रचार करोगे तो अपने को भूल कर स्वयं सत्य-स्वरूप हो जाओगे। इस सत्य के प्रचार से जब तुम्हें मनुष्य के हृदय की नेकी और पवित्रता का ज्ञान होगा तब तुम्हारा जीवन प्रेममय हो जायगा। तो तुम सबसे प्रेम करोगे तो किसी में तुमको कोई दोष न दिखलाई पड़ेगा। तुम तुले हुए शब्द मुँह से निकालोगे किन्तु वे दूसरों के लिए उपदेश का काम करेंगे और तुम्हारे आचरण से दूसरों को शक्ति मिलेगी। यद्यपि तुम्हारे उत्कृष्ट विचार और निस्वार्थ श्रम मनुष्यों की दृष्टि में नहीं आते किन्तु वे युगों तक उत्सुक अज्ञानी पुरुषों को प्रभावित करते रहेंगे।

जो सत्य के मार्ग पर चलता है और त्याग की भावना रखता है उसे संसार के सर्वोत्तम पदार्थ मिलते हैं। वह ईश्वर से सम्पर्क स्थापित करता है और महात्माओं की मंडली में प्रविष्ट हो जाता है।

जुलाई ११

विचार बीज के सदृश होते हैं और पक जाने पर उन फलों के बीजों को लोग फिर से बोते हैं। इसी प्रकार विचार मन में पनपते हैं, उनसे प्रेरित होकर मनुष्य अच्छे या बुरे काम करते हैं और फिर उन कामों से विचार उत्पन्न होकर दूसरों पर अपना प्रभाव डालते हैं। इस प्रकार विचारों की यह सत्ता अटूट चलती रहती है। उपदेशक बीज बोने वाला

एक आध्यात्मिक खेतिहर होता है। जो उससे उपदेश ग्रहण करता है वह एक किसान है जो मन रूपी अपने खेत में उपदेशक की तरह बीज बोना सीखता है। विचार की वृद्धि पौधे की वृद्धि है। यदि बीज समय पर बोया जाय तो उसमें से ज्ञान का पौधा निकलता और बुद्धि का फल लगता है।

जुलाई १२

एक बड़े उपदेशक ने अपने शिष्यों से कहा था, "हमेशा जागरूक रहो।" यदि कोई अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहता है तो उसे इस उपदेश के अनुसार चलना चाहिये। यह उपदेश जितना लाभदायक एक महात्मा के लिए है उतना ही एक व्यापारी के लिए भी है। निरंतर जागरूक रहना ही उद्देश्य की पूर्ति करना है। उसी उपदेशक ने यह भी कहा था, "यदि मनुष्य कोई काम करना चाहता है तो उसे तत्काल परिश्रम के साथ शुरू कर देना चाहिये।" काम का फल तुरन्त होता है। अतएव यदि काम सावधानी से शीघ्र किया जायगा तो हमको सफलता अवश्य मिलेगी। जो शक्ति हमारे पास है यदि हम उसका पूर्ण उपयोग करेंगे तो हमें और भी अधिक शक्ति प्राप्त होगी। केवल वही पुरुष शक्ति और मुक्ति उपलब्ध कर सकता है जो परिश्रम के साथ कोई काम करता है।

जुलाई १३

शान्ति से ही महान शक्ति मिलती है। जब मन में दृढ़ता होती है, उसमें अनुशासन होता है और उसकी विचारधारा सुव्यवस्थित होती है तब शान्ति मिलती है। शान्त मनुष्य को अपने कर्तव्य का पूर्ण ज्ञान रहता है। वह कहता है थोड़े से शब्द किन्तु उसके वे शब्द बड़े और प्रभावशाली होते हैं। उसकी योजनायें सुव्यवस्थित होती हैं और मशीन की तरह काम करती हैं। वह दूर तक की सोचता है और अपने काम को धुन के साथ करता है। कठिनाइयों की वह परवाह नहीं करता। वह जानता है कि शत्रु के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये, इसलिए वह

उसे अपना मित्र बना लेता है और उससे लाभ उठाता है। एक सेनानायक की तरह वह आने वाले संकटों का अनुमान कर लेता है। वह प्रत्येक आपत्ति का सामना करने के लिए पहले से ही तैयार रहता है। अपने ध्यान के समय वह भविष्य की आपत्तियों का कारण समझ लेता है और उसे दूर करता है। उसे कोई सहसा धोखा नहीं दे सकता। वह किसी काम में जल्दबाजी नहीं करता। वह फूंक फूंक कर कदम रखता है और उसे अपनी दृढ़ता पर विश्वास होता है।

जुलाई १४

मन की सच्ची शान्ति सुख से बैठे रहने की शान्ति से बिलकुल भिन्न है। शरीर की फुर्ती और चंचल चित्त की एकाग्रता से मन की शान्ति प्राप्त होती है। घबराहट और घोश में मन चचल हो जाता है। चंचल मन में न तो कोई जिम्मेदारी होती है और न कोई शक्ति। ऐसा पुरुष क्रोधी और चिड़चिड़ा हो जाता है। उसका कोई प्रभाव दूसरों पर नहीं पड़ता। वह उनका घृणा पात्र बन जाता है, कृपापात्र नहीं। वह आश्चर्य करता है कि इस आराम तलब पड़ोसी ने इतनी उन्नति कैसे कर ली और इसकी इतनी चाह क्यों है और मैं घोर परिश्रम करके भी मोल लेता हूँ किन्तु मुझे कोई नहीं पूछता, उल्टे लोग मुझसे घृणा करते हैं। वास्तव में बात यह है कि उसका पड़ोसी आराम तलब नहीं है प्रत्युत शान्त है और बड़ी लगन से अपना काम करता है। वह स्वावलम्बी और धीर है। उसे अधिक काम मिलता है जिसे वह बड़ी चतुराई से करता है। इसलिए वह अपने काम में हमेशा सफल होता है और लोगों में उसकी चाह रहती है। किन्तु दूसरा मनुष्य चचल है। उसकी शक्ति का उचित उपयोग नहीं होता। इसीलिए वह असफल रहता है।

जुलाई १५

जो दीन पुरुष अपने धन को स्थिर रखना चाहता है उसे धीरे-धीरे अपनी वेष भूषा बदलनी चाहिये। जनता को दिखलाने के लिए अपने सामर्थ्य से अधिक इतराना नहीं चाहिये। धीरे-धीरे बदलने में जो मजा है वह एकाएक बदल देने में नहीं है। इसमें कोई आपत्ति भी नहीं होती और लोग खराब समय आने पर उँगली भी नहीं उठाते। जो पुरुष समझता है कि डींग मारने और इतराने से लोग हमारा सम्मान करेंगे वह वास्तव में भारी भूल है। वह एक प्रकार से अपने को धोखा दे रहा है और विनाश की ओर जा रहा है। किसी भी दिशा में धीरे-धीरे जो उन्नति की जाती है वह स्थायी होती है किन्तु अपनी पदवी का जो झूठा विज्ञापन करता फिरता है उसका शीघ्र ही विनाश होता है।

जुलाई १६

यदि तुम कीमती कपड़े या कीमती गहने पहिनोगे तो तुमको लोग गँवार और अशिक्षित समझेंगे। सुशील और सुशिक्षित मनुष्य साधारण वस्त्र पहिनते हैं और गहनों तथा कपड़ों का रुपया बचाकर अपने पढ़ने लिखने और धर्म के कार्यों में खर्च करते हैं। वे शिक्षा और आत्मोन्नति को गहने और कपड़ों से अधिक आवश्यक समझते हैं। वे रुपया बचाकर साहित्य, कला और विज्ञान की उन्नति में लगाते हैं। कपड़े और गहनों की अपेक्षा मनुष्य की शोभा उसके शुद्ध मन और सदाचार में है। जिसमें विद्या है और जिसमें सदाचार है, उसका आदर लोग स्वयं करते हैं। उसे अपने सम्मान के लिये कीमती कपड़े या कीमती गहनों की आवश्यकता नहीं हुआ करती।

जुलाई १७

जो मनुष्य सवेरे तड़के उठकर दिन का कार्यक्रम बनाता है और उसी के अनुसार काम करता है वह उस मनुष्य से अधिक सफल और बुद्धिमान है जो देर से सोकर उठता है और तुरन्त जलपान करने लगता है। जलपान के पहले एक घंटा बचाकर अपने कार्यक्रम पर विचार करने से मनुष्य के काम भली-भांति पूरे होते हैं। इस विधि से मनुष्य का मन शांत और शुद्ध रहता है और वह अपनी ताकत को अधिक जोरदार बना सकता है। प्रातः ८ बजे के पहले भी सफलता प्राप्त की जाती है वह स्थायी और सर्वोत्तम होती है। जो प्रातःकाल ६ बजे अपने काम में लग जाता है वह उस मनुष्य से हर बात में कहीं बढ़ा रहता है, जो ८ बजे सोकर उठता है। शर्त यही है कि उसकी अन्य परिस्थितियाँ भी उसके अनुकूल हों।

जुलाई १८

छोटे से छोटा काम करने का भी सही मार्ग एक ही होता है और गलत मार्ग अनेक होते हैं। मनुष्य को चाहिये कि वह बुद्धिमानी से उस सही मार्ग की खोज कर ले और उसके अनुसार लगकर काम करे। मूर्ख लोग अनेक गलत मार्गों में घबड़ाकर भटकते फिरते हैं और बतलाने पर भी सही मार्ग को नहीं अपनाते। वे समझते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं। परिणाम यह होता है कि घमंड में चूर रहने के कारण वे कुछ भी नहीं सीख पाते। विचार-हीनता और अयोग्यता सब जगह प्रायः दिखलाई पड़ती है। विचारशील और योग्य पुरुषों के लिए संसार में काम की कमी नहीं है, क्योंकि ऐसे पुरुष बहुत कम मिलते हैं। दूकान के मालिक इस बात का भलीभांति प्रमाण दे सकते हैं। एक कुशल श्रमजीवी अथवा एक कुशल वक्ता की हर जगह पूछ होती है और उसके लिये हर समय स्थान खाली रहता है।

जुलाई १९

जिस प्रकार पानी का बुलबुला देर तक नहीं ठहर सकता उसी प्रकार छल भी बहुत समय तक नहीं चल सकता। छली मनुष्य जल्दी-जल्दी छल से धन कमा लेता है किन्तु वह धन शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। छल से न तो कभी लाभ हुआ है और न होने को है। छल द्वारा प्राप्त धन थोड़े समय तक टिकता है। इसके बाद मूल को भी लेकर नष्ट हो जाता है। छल केवल अधर्मी पुरुष ही नहीं करते किन्तु बिना परिश्रम के, जाने या अनजाने, जो द्रव्य एकत्र करने की कोशिश करते हैं, वे भी छल ही कर रहे हैं। जो मनुष्य बिना परिश्रम किये धन इकट्ठा करते हैं, वे ठग हैं। वे चोरों और लुच्चों की संगति में पड़ जाते हैं और आगे या पीछे अपने मूलधन से भी हाथ धो बैठते हैं।

जुलाई २०

पूर्ण और सबल होने के लिये मनुष्य जीवन के हर पहलू में सचाई से काम ले। वह सचाई ऐसी हो कि प्रलोभन उपस्थित होने पर कभी डिगने न पावे। एक बार प्रलोभन में फँस जाने से मनुष्य हर बार प्रलोभन के फेर में पड़ सकता है। दबाव में आकर और जीवन एवं मरण का प्रश्न समझकर यदि वह किसी प्रकार भी झूठ से समझौता कर लेता है तो वह सचाई को खो बैठता है और झूठ के जाल में अपने को फंसा देता है।

जो मनुष्य अपने मालिक की अनुपस्थिति में उसी प्रकार सचाई से काम करता है जिस प्रकार उसकी उपस्थिति में, वह कभी छोटे पद पर नहीं रह सकता; अपने काम की सचाई के बल पर वह उन्नति के उच्च शिखर पर शीघ्र ही पहुँच जाता है।

जुलाई २१

ईमानदार मनुष्य को सफलता अवश्य ही मिलती है। बेईमान मनुष्य को एक दिन पछताना और दुःख उठाना पड़ता है, किन्तु ईमानदार को पछताने और दुःख उठाने की नौबत नहीं आती। यदि शारीरिक शक्ति, मितव्ययिता और व्यवस्था के अभाव में ईमानदार मनुष्य कभी असफल भी होता है तो उसकी असफलता उसको इतना दुःख नहीं देती जितना बेईमान मनुष्य को देती है, क्योंकि ईमानदार का यह संतोष रहता है कि मैंने अपने किसी मित्र को धोखा नहीं दिया। हृदय शुद्ध होने के कारण आपत्काल में भी ईमानदार मनुष्य को संतोष रहता है।

जुलाई २२

अभेद्यता हमारा एक महान रक्षक है, किन्तु वह उसी मनुष्य में पाई जाती है जिसकी सचाई निर्दोष और अचल है। जो छोटी-छोटी बातों में भी सचाई का पूरा ध्यान रखता है वह अपनी अभेद्यता को बदनामी, निन्दा और धोखे के समय भी कायम रखता है। जो मनुष्य किसी एक बात में भी बेईमानी से लाभ उठा लेता है वह धोखा खाता है और उसका असत्य, उसको खा लेता है। जो बिल्कुल सच्चा है उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकता और वह असीम साहस तथा स्थिर चित्तवृत्ति से विरोध और बाधा का डट कर मुकाबला करता है। विशुद्ध और ऊँची नैतिकता से जो बल और शांति मनुष्य के मन और हृदय को मिलती है वह बल और शांति उसे अपनी प्रतिभा, बुद्धि एवं अन्य कुशलता के द्वारा भी नहीं मिल सकती।

जुलाई २३

प्रत्यय दया भावना और सहानुभूति में अन्तर है। दया भावना एक ऐसे फूल की तरह नष्ट हो जाती है जिसमें रस नहीं होती और जिसमें न बीज होते हैं और न फल लगते हैं। किसी मित्र से जुदा होने के समय या बाहर से आये हुए अशुभ समाचार को सुनकर फूट-फूट कर रोने समना सहानुभूति नहीं है, इसी प्रकार दूसरों पर किये जाते हुए अत्याचार और अन्याय को देख कर द्रवीभूत हो जाने को भी सहानुभूति नहीं कहते। जो अपनी स्त्री को गाली देता है, बच्चों को पीटता है, नौकरों से बुरा व्यवहार करता है, और पड़ोसियों को बुरा भला कहता है और उनको हानि पहुँचाता है, वह उन दीन और दुखी मनुष्यों से किस प्रकार प्रेम कर सकता है जो उसके प्रभाव के बाहर होते हैं। बाहरी अत्याचार और अन्याय के प्रति जो वह क्रोध करता है वह उसका निरा ढोंग है।

जुलाई २४

सहानुभूति द्वारा हम सब के हृदयों तक पहुँच जाते हैं। हमारा उनसे आध्यात्मिक गठबंधन हो जाता है और जब उनको कोई कष्ट होता है तो उसका अनुभव हम भी करते हैं। इसी प्रकार जब उनको सुख मिलता है तो उसका भी अनुभव हम ही करते हैं। लोग जब उनसे घृणा करते हैं अथवा उनको तंग करते हैं तो हम भी उनके साथ गढ़े में गिरते हैं और उनके अपमान एवं दुःख का अनुभव करते हैं। जिसके हृदय में एकता उत्पन्न करने वाली सहानुभूति की भावना होती है वह न तो दुरात्मा और पतित हो सकता है और न अपने मित्रों की विनाशकारी आलोचना ही कर सकता है, क्योंकि हृदय में दया होने के कारण वह उनके दुःख में सम्मिलित रहता है।

जुलाई २५

मनुष्य को लोभ, नीचता, ईर्ष्या, अहंकार और शंका से होशियार रहना चाहिए, क्योंकि यदि ये हमारी असावधानी से हमारे भीतर घुस गये तो हमारा सर्वनाश कर देंगे। ये केवल धन-दौलत को ही नष्ट नहीं करते वरन् चरित्र की खूबियों और हमारे सुख को भी नष्ट कर देते हैं। मनुष्य को उदार, दानी, महानुभाव और विश्वस्त होना चाहिये। उसे अपने विचार प्रकट करना चाहिए। मित्रों को भी स्वतंत्र विचारों को कहने और स्वतंत्र होकर काम करने का अवसर देना चाहिए। यदि वह ऐसा करेगा तो मान, धन और सफलता उसके घर के भीतर मित्रों और मेहमानों की तरह प्रवेश करेंगे।

जुलाई २६

जिसको नम्र होने की पूर्ण युक्ति मालूम हो गई है वह कभी किसी से झगड़ा नहीं करता। वह किसी को बुरी बात नहीं कहता। या तो वह उससे विरक्त हो जाता है अथवा वह उससे बोलता है तो बहुत ही नम्र शब्दों में। उसकी इस नम्रता का प्रभाव उस पर क्रोध से भी अधिक पड़ता है। नम्रता से बुद्धि आती है। बुद्धिमान मनुष्य अपने क्रोध को तो शान्त करता ही है, वह दूसरों पर भी क्रोध नहीं करता। वह उन टंटों और बखेड़ों से बचा रहता है जिनसे असंयमी पुरुष हमेशा परेशान रहते हैं। जब कि असंयमी पुरुष मन ही मन व्यर्थ ही कुढ़ता रहता है, वह एकदम शान्त रहता है। इस शान्ति के बल पर वह जीवन संग्राम में युद्ध करके विजयी होता है।

जुलाई २७

हम वास्तव में जो कुछ हैं उसी तरह हमें रहना चाहिए। जो हम नहीं हैं उसे हमें नहीं दिखाना चाहिए। यदि हम अधर्मी हैं तो हमें धर्मात्मा होने का ढोंग नहीं रखना चाहिए। उसी प्रकार यदि हम पतित हैं तो हमें महात्मा बनने का ढकोसला नहीं करना चाहिए। पाखंडी समझता है कि मैं संसार को और उसके ईश्वरीय विधान को धोखा दे सकता हूँ किन्तु ऐसा होता नहीं है। हां, वह अपने को अवश्य धोखा दे रहा है और उस कपट के लिये उसे ईश्वर की ओर से उचित दण्ड भी भोगना पड़ता है। लोग जानते भी हैं कि भारी दुष्टों का विनाश होता है। जिस प्रकार दुष्टों का विनाश होता है उसी प्रकार पाखंडियों का भी विनाश होता है, क्योंकि उनके मन से सद्भावना निकल जाती और दुष्टों की तरह उनके भी गन्दे विचार हो जाते हैं और उन्हीं की तरह वे भी मृगतृष्णा में पड़े-पड़े दुख उठाया करते हैं।

जुलाई २८

जब भलाई की भावना मन में स्थान बना लेती है तो बुराई की भावनाएं मन को छोड़ कर भाग जाती हैं। ये सुखद और शान्तिदायक भलाई की भावनाएं हमें उस समय मिलती हैं जब हम पाप करना छोड़ देते हैं, जब हम दुखी नहीं होते, जब हम प्रलोभनों में नहीं फँसते और जब हमें उन परिस्थितियों में भी अपार आनन्द मिलता है जिनमें हमें पहले अत्यन्त दुख मिला करता था। उपरोक्त भावनाएँ हमें उस समय प्राप्त होती हैं जब हमारे हृदय पर दूसरों की बुराइयों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जब हमारे चरित्र में अधिक धैर्य और अधिक कोमलता आती है, और जब हमारे हृदय से काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, ईर्ष्या, अपमान, चिन्ता—ये सब विकार निकल जाते हैं।

जुलाई २९

जो अत्यन्त सदाचारी है वह अत्यन्त सुखी है। जिस उत्कृष्ट सुख को महात्मा ईसा ने बताया है, वह सुख उनको मिलता है जिनमें सदाचार है जिनमें क्षमा है, जिनके हृदय शुद्ध हैं और जो शांति की स्थापना करते हैं। उच्चकोटि के सदाचार से मनुष्य को केवल सुख ही नहीं मिलता प्रत्युत वह स्वयं सुख की मूर्ति होता है। अत्यन्त सदाचारी मनुष्य कभी दुखी हो ही नहीं सकता। दुख का कारण हमारे अहंकार में है, हमारे उत्कृष्ट गुणों में नहीं। वह मनुष्य दुखी हो सकता है जिसमें सांसारिक गुण है किन्तु जिसमें दैवी गुण है वह कभी दुखी नहीं हो सकता। सांसारिक गुणों में अहंभाव है और इसीलिये उनमें दुख है किन्तु दैवी गुणों में अहंभाव रहता ही नहीं, इसलिये उनमें सुख है।

जुलाई ३०

कितने आश्चर्य की बात है कि मनुष्य विपत्तों में फँसे रहते हैं तब भी शान्ति की चाहना करते हैं। वे टंटा बखेड़ा करते हैं और तब भी शान्ति चाहते हैं। यह उनकी भारी मूर्खता है। यह उनका भारी आध्यात्मिक अज्ञान है। वे ईश्वरीय विधानों की प्रारम्भिक बातों से भी अपरिचित हैं। घृणा और प्रेम अशान्ति और शान्ति एक साथ हृदय में नहीं रह सकते। जब एक प्रवेश करता है तो दूसरा निकल भागता है। जो दूसरों से घृणा करता है उससे दूसरे भी घृणा करते हैं। जो दूसरों से विरोध करता है उससे दूसरे लोग भी विरोध करते हैं। विरोध करने वाले का यह देख कर न तो आश्चर्य करना चाहिए और न दुख ही कि लोगों में फूट पड़ गई है। उसको समझना चाहिए कि फूट का बीज वह स्वयं बो रहा है। उसे अपने में ही अशान्ति का अनुभव होना चाहिए।

जुलाई ३१

यदि मनुष्यों की समझ में आ जाय कि दूसरों के साथ बुराई करेंगे तो वे भी उनके साथ बुराई अवश्य करेंगे, वे दूसरों से घृणा करेंगे तो दूसरे भी उनसे घृणा करेंगे, और वे दूसरों के साथ भलाई करेंगे तो दूसरे उनके साथ कभी कोई बुराई न करेंगे तो उनके हृदय शुद्ध और उनके काम निर्दोष हो जायँ और वे अपने सब अनिष्टकारी मनोविकारों को दूर कर दें।

यदि लोगों की समझ में यह आ जाय कि जो हृदय पाप करता है उसे दुखी होना पड़ता है, और घृणा करने वालों को दिन-रात रोना पड़ता है उन्हें निद्रा नहीं आती और वे अशान्त रहते हैं, तो वे अधिक नम्र और दयालु हो जायँ।

अगस्त १

प्रेम से वस्तुओं का परिज्ञान होता है। जिसने अपनी इन्द्रियों को इस प्रकार वश में कर लिया है कि उसके मन में सिवाय प्रेम के कुछ रहता ही नहीं उसमें ईश्वरीय परिज्ञान होता है और वह भले और बुरे की पहचान कर सकता है। ऐसा मनुष्य बहुत ही सज्जन और बुद्धिमान होता है। वह दिव्य होता है, ज्ञानी होता है और ईश्वर भक्त होता है जिसमें सज्जनता हो, जिसमें प्रखर धैर्य हो और जिसमें अधिक नम्रता हो। वही सबसे अधिक बुद्धिमान पुरुष है। उसने ईश्वर का साक्षात् कर लिया है और वह हमेशा उसी के संपर्क में रहता है इसलिये उसकी संगति करो। जिनको आध्यात्मिक ज्ञान हो जाता है वे ईश्वर को भली-भाँति पहचानते हैं और उसी की तरह वे संसार की माया से सर्वथा अलग रहते हैं।

अगस्त २

जो बुराई और कलह से अपने को अलग रखता है और जिसे अपने ही भीतर आनन्द मिलता है वह संसार के असली तत्त्व को समझता है। वह उन ईश्वरीय विधानों को भी समझता है जिन्हें निरी बुद्धि से नहीं समझा जा सकता। जब तक मनुष्य को अपने भीतर आनन्द नहीं मिलता तब तक उसे सच्ची शान्ति नहीं मिलती। जिसे अपने भीतर आनन्द मिलता है, उसमें चाहे शिक्षित लोगों की-सी प्रखर बुद्धि न हो किन्तु है वह सच्चा बुद्धिमान। उसने अपने हृदय को शुद्ध कर लिया है और अपने जीवन को ईश्वर के ढांचे में ढाला है इसलिये वह अत्यन्त सुखी है।

मनुष्य को अपने भीतर आनन्द की खोज करनी चाहिये। वही *आनन्द सब कलहों को दूर कर के सब प्राणियों को एकता के सूत्र में* बांधता है और इसी आनन्द के सामने संसार के सारे प्रश्न हल हो जाते हैं।

अगस्त ३

ईश्वर का दर्शन कोरी गप नहीं है किन्तु सच्चा अनुभव है जो चिर-काल के अभ्यास और हृदय की शुद्धता से मिलता है। जब मनुष्य इस पांच भौतिक शरीर को ही सब कुछ नहीं समझता, जब वह भूख-प्यास को अपने वश में कर लेता है, जब वह अपनी इच्छाओं को शुद्ध कर लेता है, जब वह अपनी भावनाओं को अपने वश में रखता है और जब उसका मन चंचलता को छोड़कर शांत हो जाता है तभी उसे ईश्वर के दर्शन होते हैं और तभी उसे वास्तव मन की सरलता और शान्ति मिलती है।

मनुष्य जीवन की समस्याओं पर सोचते-सोचते थक कर बुड्ढे हो जाते हैं तब भी जीवन-पर्यन्त वे उन्हें हल नहीं कर पाते। वे संसार के माया-विलासों में इतने डूबे रहते हैं कि जीवन की समस्याओं को हल करने का कोई उपाय ही उनकी समझ में नहीं आता।

अगस्त ४

जब जीवन की पचीदी समस्याओं के हल करने में मनुष्य की आँखों के सामने अंधकार छा जाता है तो वह भूल करता है, किन्तु सत्य के मार्ग पर चलने से उसमें दैवी नम्रता आती है और वह भूलों से बचा रहता है।

स्वार्थ ही मनुष्य को 'सत्य' से अलग कर देता है और केवल अपने ही सुख के लिये प्रयत्न करने में वह चिरस्थायी और अत्यन्त पवित्र सुख को खो बैठता है। कार्लाइल कहते हैं "सांसारिक सुख के ऊपर भी एक स्थायी सुख है। सांसारिक सुख के बिना वह अपना काम चला सकता है किन्तु उस ऊँचे स्थायी सुख के बिना वह सुखी नहीं हो सकता।" विषयों को छोड़कर ईश्वर से प्रेम करो। उसी में सच्चा सुख है और उसी से तुम्हारे जीवन की सारी समस्यायें हल हो जायेंगी। जो ईश्वर से प्रेम करता है उसका कल्याण होता है।

जो साधारण श्रेणी के मनुष्यों से अलग होकर अहंभाव का परित्याग कर देता है और विषयों में नहीं लिप्त होता उसके जीवन की सारी समस्यायें हल हो जाती हैं। वह एकदम सरल हो जाता है और उन भूलों को नहीं करता जिन्हें मूर्ख किया करते हैं।

अगस्त ५

जब मनुष्य विषयों को छोड़ देता है, जब वह सन्मार्ग पर चलकर भूलें नहीं करता, जब वह पक्षपात नहीं करता और जब वह स्वार्थ को मन से निकाल देता है तब उसे ईश्वर का ज्ञान होता है। जब वह स्वर्ग और नरक के झंझटों से मुक्त हो जाता है और जब वह अनन्त जीवन की भी परवाह नहीं करता तब वह जीवन और मरण का भय छोड़कर स्वर्गीय सुख को प्राप्त करके अमर हो जाता है, अपना सर्वस्व देकर वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है और शांत होकर ईश्वर की गोद में सोता है।

जिसका स्वार्थ इतना नष्ट हो जाता है कि उसे जीने और मरने की भी परवाह नहीं रहती वही ईश्वर की बादशाहत में प्रवेश करता है। जो स्वार्थ को छोड़कर ईश्वर और उसके विधान पर विश्वास करता है उसी को स्थायी शांति मिलती है।

अगस्त ६

प्रेम की भावना, जिससे जीवन पूर्णता को प्राप्त करता है, मनुष्य जीवन का सार है। इस संसार में ज्ञान प्राप्त करने का महान उद्देश्य यही है।

परीक्षा और प्रलोभन के समय मनुष्य की कैसी दशा होती है? बहुत से मनुष्य कहते हैं कि 'सत्य' हमको मिल गया किन्तु वे हमेशा दुख, निराशा और मनोविकारों से परेशान रहते हैं और पहली ही परीक्षा के समय असफल हो जाते हैं। जिस मनुष्य को 'सत्य' की प्राप्ति हो जाती है वह अपने पथ पर दृढ़ रहता है और विषयों तथा मनोविकारों के फंदों में नहीं पड़ता।

मनुष्य कुछ अस्थिर सिद्धान्तों को बना लेते हैं और उन्हीं को 'सत्य' कहते हैं। किन्तु 'सत्य' बनाया नहीं जा सकता। वह अकथनीय और मनुष्य की बुद्धि के परे है। अभ्यास से उसका केवल अनुभव होता है। शुद्ध जीवन हृदय और पूर्ण जीवन में उसका केवल प्रतिबिम्ब पड़ता है।

अगस्त ७

बहस-मुबाहिसे से अथवा विद्वत्तापूर्ण लेखों से सत्य का अस्तित्व सिद्ध नहीं किया जा सकता। यदि मनुष्य सत्य को धैर्य क्षमा और सहानुभूति में नहीं देख सकता तो वह बहस-मुबाहिसों द्वारा नहीं दिखलाई पड़ सकता।

विषयी लोग जब एकान्त में बैठते हैं तब शान्त रहते ही हैं। इसी प्रकार जब उदारता के साथ नम्रता का बर्ताव किया जाता है तो वे नम्र और दयालु रहते ही हैं किन्तु इन लोगों को सत्य' नहीं मिलता। 'सत्य' उसे ही मिलता है जो परीक्षा के समय अपने धैर्य और शान्ति को कायम रखता है और जो विकट परिस्थितियों में भी अपनी नम्रता को नहीं खोता। 'सत्य', क्षमा, नम्रता आदि दैवी गुण हैं। अतएव ये गुण उसी को मिलते हैं जो ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर लेता है जो स्वार्थ और विषय वासनाओं का छोड़ देता है और जो ईश्वर के अपरिवर्तनशील विधान को समझता और उसी के अनुसार चलकर शान्ति प्राप्त करता है।

अगस्त ८

प्रेम के ईश्वरीय विधान की पूर्ति करने के लिये मनुष्य को बारबार जन्म लेना होता है और दुख उठाना पड़ता है। जब उस विधान की पूर्ति हो जाती है तो दुख नष्ट हो जाता है और जीवन मरण के बन्धन से छूटकर आत्मा परमात्मा में विलीन हो जाती है।

प्रेम का यह विधान सब के लिये समान होता है और उसकी सब से ऊँची भावना मनुष्य-मात्र की सेवा करने में दृष्टिगोचर होती है। जब मन पवित्र होकर इस 'सत्य' का अनुभव कर लेता है तो उसे सबसे अन्तिम, सब से बड़ा और सबसे पवित्र त्याग करना पड़ता है और यह त्याग उस आनन्द का है जो इस 'सत्य' के प्राप्त करने से मिलता है। इस त्याग की बदौलत वह जीव, जो देवगति को प्राप्त हो चुका है, नीच से नीच योनियों में रहता है और सारी मानवजाति की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता है।

अगस्त ९

सन्त, महात्मा और उद्धारक का सब से बड़ा गुण यह होता है कि वे अत्यन्त नम्र होते हैं और कोई काम अपने स्वार्थ से नहीं करते। काम करते समय उन्हें अपने शरीर तक का भान नहीं रहता इसलिए उनके काम पवित्र और स्थायी होते हैं। वे दूसरों को अपनी वस्तु देते हैं किन्तु उनकी वस्तु लेते नहीं। उन्हें न भूत की चिन्ता होती है न भविष्य की। वे वर्तमान में काम करते हैं, और कोई पुरस्कार नहीं चाहते।

जब किसान खेत को जोतकर उसमें बीज बो देता है तो वह समझता है कि जो कुछ मुझे करना था वह मैं कर चुका। फल मेरे हाथ में नहीं है। ईश्वर जो चाहेंगे करेंगे। मेरी चाह से फल में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। इसी प्रकार जिसे 'सत्य' का ज्ञान हो जाता है वह नेकी, पवित्रता, प्रेम और शान्ति के बीज बोता फिरता है और फल की परवाह नहीं करता। वह समझता है कि ईश्वरीय विधान के अनुसार जो कुछ परिणाम होना है वह समय आने पर आप से आप होकर रहेगा। वह विधान रक्षा भी करता है और नाश भी।

अगस्त १०

सन्त, महात्मा और उद्धारकों ने जो काम किया है वह आप भी कर सकते हैं, यदि आप उनके बताये हुये त्याग और सेवा के मार्ग पर चलें। 'सत्य' अत्यन्त सरल होता है। वह कहता है "स्वार्थ को और उससे उन सब अवगुणों को जिनसे तुम्हारा पतन होता है छोड़कर मेरी शरण आओ तो मैं तुम्हें शांति दूँगा"। संसार के सारे शास्त्र उस मनुष्य से 'सत्य' को नहीं छिपा सकते जो सचाई के साथ 'सत्य' की खोज कर रहा है। 'सत्य' शिक्षित और अनपढ़ दोनों जान सकते हैं। जब मनुष्य भूल करता है अथवा स्वार्थ से प्रेरित होकर काम करता है तो 'सत्य' उससे अनेक रूपों में छिपा रहता है, किन्तु उसकी चमक में कोई अन्तर नहीं पड़ सकता। जो स्वार्थहीन हैं उन्हीं को 'सत्य' की चमक दिखलाई पड़ती है। पेचीदा सिद्धान्तों के बनाने अथवा केवल खयाली दर्शनशास्त्रों के पढ़ने से 'सत्य' का अनुभव नहीं होता। जब हम हृदय को पवित्र करते हैं और जब हम अपने जीवन को निर्दोष बनाते हैं तब हमें 'सत्य' का अनुभव होता है।

अगस्त ११

हमारे पवित्र हृदय के भीतर ही शान्ति का घर है, बुद्धि का मन्दिर है और अमरत्व का निवासस्थान है। हृदय के भीतर ही तुम को शांति और ईश्वरीय ज्ञान मिल सकता है, अन्यत्र नहीं। यदि तुम वहाँ एक मिनट, एक घंटा या एक दिन रहो तो वहीं रहना पसन्द करोगे।

तुम्हारे पाप, तुम्हारे दुःख, तुम्हारे भय और तुम्हारी चिन्तायें सब तुम्हारी पैदा की हुई हैं। तुम चाहो तो उन्हें छोड़ सकते हो और चाहो तो उन्हीं में चिपटे रह सकते हो। तुम चाहो तो उन्हीं में फँसे रह कर दुःख उठा सकते हो और तुम चाहो तो उनसे निकल कर स्थायी सुख का अनुभव कर सकते हो। अपने पाप को तुम स्वयं ही छोड़ सकते हो दूसरे नहीं। महात्मा नेक मार्ग पर चल कर बता सकते हैं कि तुम भी अपने

हित के लिये इसी मार्ग पर चलो, किन्तु तुम्हीं को उस मार्ग पर चल कर अपना हित करना है। जिन बन्धनों से तुम्हारी आत्मा बंधी हुई है और जिन बंधनों से तुमने अपनी शान्ति भंग कर रक्खी है उन बंधनों को अपने ही परिश्रम से तोड़कर तुम मोक्ष और शान्ति प्राप्त कर सकते हो।

अगस्त १२

ऐ उपदेशक! यदि तूने मनुष्यों को सत्य मार्ग दिखाने का भार अपने ऊपर लिया है तो जरा अपने हृदय को टटोल! क्या तूने पहले अपनी समस्याओं का निवारण किया है? क्या तूने स्वयं अपने को दुख की अग्नि से मुक्त कर लिया है? क्या तूने अपने हृदय से भ्रम को निकाल दिया है? क्या तूने अपने मन को इतना पवित्र बना लिया है कि उसमें कोई अशुद्ध विचार आ नहीं सकता?

ऐ उपदेशक! क्या तू संसार को प्रेम का पाठ पढ़ाना चाहता है? तो क्या अपनी ओर देख कि तुझे जीवन में कभी निराशा तो नहीं हुई? तुझे रात भर दुःख के आँसू तो नहीं बहाने पड़े? क्या तू चिन्ता और दुःख से मुक्त हो चुका है? तू जब अन्याय होते देखता है, लोगों को घृणा करते देखता है अथवा उनको जब अथक परिश्रम करते देखता है तो क्या तेरा जी करुणा से भर आता है?

ऐ उपदेशक! तू संसार को शान्ति देना चाहता है तो क्या तूने पहले अपने को संसार के झगड़ों से मुक्त कर लिया है? क्या तूने पहले अपनी अशान्ति को दूर कर ली है? क्या तेरा हृदय शुद्ध हो चुका है? और क्या उसमें केवल सत्य, प्रेम और शान्ति का ही निवास है?

अगस्त १३

अपने नौकरों के साथ दया का बर्ताव करो और उनकी प्रसन्नता एवं आराम का सदा ख्याल रक्खो। उनके स्थान में अपने को रख कर जितना काम तुम कर सको उतना ही उनसे लो। मालिक की यह अपूर्व नम्रता धन्य है जिससे प्रभावित होकर नौकर अपने हित को अपने मालिक के हित के सामने बिलकुल भूल जाता है। और मालिक की इस अपूर्व

नम्रता से भी ऊँची उसके दिव्य हृदय की कोमलता को शतबार धन्य है जिससे प्रभावित होकर वह अपने नौकरों के सुख और आराम का हमेशा ध्यान रखता है। इस प्रकार के व्यवहार से मालिक की प्रसन्नता दसगुनी बढ़ती जायगी और उसे अपने नौकरों के विरुद्ध शिकायत का कोई अवसर न मिलेगा। एक बहुत ही बड़े कारखाना के एक प्रसिद्ध मालिक ने कहा था, "मेरा सम्बन्ध मजदूरों के साथ बहुत ही अच्छा रहता है। मुझे किसी को निकालने की आवश्यकता नहीं पड़ती। तुम पूछोगे, क्यों? कारण यह है कि मैं उनके साथ वैसा ही बर्ताव करता हूँ जैसा मैं उनसे चाहता हूँ।"

अगस्त १४

जिस प्रकार चढ़ता हुआ सूर्य अन्धकार का नाश कर देता है उसी प्रकार शुद्ध और श्रद्धालु हृदय से निकले हुए उत्कृष्ट विचार कुत्सित वासनाओं को निर्मूल कर देते हैं।

जहाँ सच्ची श्रद्धा और खरी पवित्रता होती है वहाँ स्वास्थ्य है, वहीं सफलता है और वहीं शक्ति है। ऐसे स्थान में रोग, असफलता और दुःख नहीं रह पाते, क्योंकि वहाँ उनको जीवित रहने के लिये भोजन नहीं मिलता।

वैज्ञानिकों का ध्यान अब इस ओर तीव्र गति से खिंच रहा है कि शरीर पर विचारों का बहुत ही अधिक प्रभाव पड़ता है। यह पुराना ख्याल कि मनुष्य का शरीर उसके भाग्य का निर्णय करता है, शीघ्रता से हट रहा है और उसके स्थान में लोगों की यह उत्कट धारणा होने लगी है कि मनुष्य का शरीर उसके विचारों के अधीन है। मनुष्य के विचारों की शक्ति ही उसके शरीर को बना और बिगाड़ सकती है।

अगस्त १५

यदि काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या और चिन्तायें तुम्हारे मन को दूषित किये रहें और तुम पूर्ण स्वस्थ रहना चाहो तो यह बिल्कुल असम्भव है, क्योंकि रोग के बीज तो तुम स्वयं अपने मन में बो रहे हो, मन की इस विकृत अवस्था से बुद्धिमान लोग हमेशा सतर्क रहते हैं, क्योंकि वे उसे एक गन्दी नाली अथवा संक्रामक रोग द्वारा दूषित घर से भी अधिक भयानक समझते हैं।

यदि तुम रोग मुक्त होकर पूर्ण स्वास्थ्य का आनन्द लेना चाहते हो तो अपने मन और विचारों की व्यवस्था ठीक करो। प्रसन्नता और प्रेम पैदा करने वाले विचारों को अपने मन में स्थान दो। प्रेम का अमृत अपनी नसों में बहने दो, तुम्हें औषधि की आवश्यकता न पड़ेगी। ईर्ष्या, शत्रुता, चिन्ता, घृणा और स्वार्थ का नष्ट करने से तुम्हारी मन्दाग्नि, पित्त, कम्पन और गठिया के रोग नष्ट हो जायंगे।

अगस्त १६

यदि तुम शान्ति का तेल विषयों के क्षुब्ध पानी में डाल दो तो विपत्ति के तूफान इस संसार-समुद्र में तुम्हारी जीवन नौका का कुछ न बिगाड़ सकेंगे। और यदि यह जीवन नौका प्रसन्नता और पूर्ण श्रद्धा से खेई जाय तो यह अवश्य ही किनारे सकुशल लग जायगी और उस पर आक्रमण करने वाली आपदाएँ नष्ट हो जायगी। श्रद्धा के बल से कठिन काम भी सफल होता है। काम की सफलता के लिये आवश्यक है कि तुम ईश्वर में, उसके विधान में, अपने काम में और अपनी शक्ति में श्रद्धा (विश्वास) रक्खो। यदि तुम सफलता चाहते हो और गिरना नहीं चाहते तो श्रद्धा की चट्टान पर अपने जीवन का महल बनाओ।

अगस्त १७

अपने हृदय से स्वार्थ को निकाल कर उसमें पवित्रता, श्रद्धा, एकाग्रता और प्रेम भरो तो तुम्हारा नाम और यश बढ़ेगा और तुमको स्थायी सफलता मिलेगी।

यदि तुम अपनी वर्तमान दशा से सन्तुष्ट नहीं हो और तुम्हारा हृदय ठीक-ठीक काम नहीं कर रहा है, तब भी साहस और परिश्रम से अपना काम करते जाओ। इस बात का विश्वास करके कि अच्छा समय कभी न कभी अवश्य आवेगा, अपने हृदय को भविष्य की आशा से परिपूर्ण रक्खो, ताकि जब अच्छा समय आवे तो अपनी वर्तमान विकट अवस्था से तुम उसमें अपना कदम रख सको और अपनी बुद्धि और सूझबूझ से काम करके नई परिस्थिति से लाभ उठा सको।

जिस प्रकार का काम हो उसे तुम एकाग्र मन से करो और अपनी सारी शक्ति उसमें लगा दो। छोटे-छोटे कामों को यदि तुम दिलचस्पी से करोगे तो तुम्हारे बड़े बड़े काम अपने आप अच्छे हो सकेंगे।

अगस्त १८

एक नवयुवक है जिसको मैं जानता हूँ। उसको एक बार आपदाओं ने बुरी तरह आ घेरा। उसके मित्रों ने उसे समझाना शुरू किया और कहा कि तुम ऐसा काम क्यों कर रहे हो जिससे तुम पर विपत्तियों पर विपत्तियाँ आ रही हैं। उसे छोड़ क्यों नहीं देते? नवयुवक ने कहा "मुझे अपने काम पर इतना विश्वास है कि यद्यपि मुझे इस समय सफलता नहीं मिल रही है, किन्तु वह समय जरूर आवेगा जब मेरी सफलता को देख कर आप लोग आश्चर्य करेंगे।" उसको अन्त में उसी काम में सफलता मिली। उसने दुनियाँ को दिखला दिया कि मुझमें वह शक्ति मौजूद है जिसके द्वारा विपत्तियों को छिन्न-भिन्न करके मैं सफलता के उच्च शिखर पर पहुँच सकता हूँ।

यदि तुम में यह शक्ति नहीं है तो उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करो। इस शक्ति को धीरे-धीरे प्राप्त करके तुम अन्त में बुद्धिमान हो जाओगे। झूठी गप हांकना, निन्दा करना, कहकहा लगाकर हंसना, दिल्लगी करना और केवल हंसने के लिए किसी की बुराई करना आदि अवगुण जो अभी तक तुम्हारी आदत बने हुए हैं, छोड़ दो। इनमें तुम्हारी शक्ति का नाश होता है।

अगस्त १९

इच्छाओं की पूर्ति क्षणिक और भ्रमात्मक होती है। वे कभी शान्त नहीं होतीं। उनका पेट क्रमशः और भी अधिक बढ़ता जाता है। इच्छा समुद्र की तरह अथाह होती है। उसकी पूर्ति एक बार हुई नहीं कि उसकी चिल्लाहट और भी अधिक बढ़ जाती है। वह अपने भक्तों को हमेशा तंग किये रहती है। अन्त में उनको शारीरिक और मानसिक वेदना पहुँचाती है, जिसके कारण उन्हें महान कष्ट सहन करना पड़ता है। इच्छा नरक है, जिसमें नाना प्रकार की यातनाएँ भरी हुई हैं। इच्छा का परित्याग कर देने से स्वर्ग मिलता है और नाना प्रकार के सुख मिलते हैं।

मैंने अपनी आत्मा को यह जानने के लिये भेजा कि मृत्यु के बाद क्या होता है? मेरी आत्मा ने लौटकर मुझे उत्तर दिया कि मैं ही स्वर्ग हूँ और मैं ही नरक हूँ।

अगस्त २०

यदि तुम अपने स्वार्थ की पूर्ति में ही लगे रहोगे तो अपने को नरक में ही डालते जाओगे। स्वार्थ को छोड़कर स्वर्ग में प्रवेश करो। स्वार्थी मनुष्य अन्धा होता है। उसका अपना कोई मत नहीं होता और न उसमें कोई योग्यता ही होती है। वह दिन प्रति दिन दुख के गड्ढे में गिरता जाता है। शुद्ध बोध, शुद्ध मति और शुद्ध ज्ञान पवित्रात्मा को ही मिलते हैं। जब इन गुणों द्वारा तुम अपनी शुद्धता का अनुभव करोगे

तो तुमको सच्चा सुख मिलेगा। जब तक तुम अपने स्वार्थ में पड़ कर अपने ही लिए सुख की चेष्टा करोगे तब तक तुम्हें सुख के दर्शन न होंगे, तुम दुख के बीज बोते जाओगे। जितना अधिक स्वार्थ को भूल कर तुम लोक सेवा करोगे उतना ही अधिक तुम्हें सुख मिलेगा।

अगस्त २१

आध्यात्मिक ध्यान ईश्वर को प्राप्त करने का सुगम मार्ग है। यह वह गुप्त सीढ़ी है, जिसके द्वारा मनुष्य पृथ्वी से आकाश में चढ़ सकता है और दुष्ट से सन्त और सुखी हो सकता है। प्रत्येक सन्त ने उसका प्रयोग किया है और प्रत्येक पापी को भी आगे या पीछे उसी का प्रयोग करना पड़ेगा। जिसने संसार के विषयों से ऊब कर ईश्वर के मार्ग में कदम रक्खा है, उसे भी इसी सीढ़ी का प्रयोग करना पड़ेगा। बिना उसकी सहायता के तुम में न तो ईश्वर की भावना उत्पन्न हो सकती है न तुम्हें शान्ति ही मिल सकती है। बिना उसकी सहायता के न तो किसी को अक्षय यश मिल सकता है और न 'सत्य' के मार्ग पर चलने का अकथनीय निर्मल आनन्द।

अगस्त २२

दिन का कोई समय ध्यान करने के लिये चुन लो और उसे केवल इसी काम के लिये सुरक्षित रक्खो। उस समय कोई दूसरा काम न करो। ध्यान करने के लिए सबसे उत्तम समय प्रातःकाल का है। उस समय प्रत्येक वस्तु में शान्ति होती है और तुम संसार की चहल-पहल से बचे रहते हो। रात भर सोने के कारण मनोविकार शान्त रहते हैं, चिन्तायें ठंडी पड़ जाती हैं और मन की दशा ऐसी उत्कृष्ट होती है कि मनुष्य आध्यात्मिक बातों को सोच सकता और ग्रहण कर सकता है। हाँ, प्रातःकाल उठने के लिये तुम्हें अपना आलस्य को हटाना होगा। यदि नहीं हटाओगे तो तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती जो जीवन के लिये इतनी आवश्यक है।

अगस्त २३

यदि तुम्हें घृणा और क्रोध तंग कर रहे हों तो तुम नम्रता और क्षमा पर ध्यान लगाओ, जिससे धीरे-धीरे तुम्हें अपनी घृणा और क्रोध का अच्छी तरह पता चल जाय। ध्यान करते-करते तुम में प्रेम, नम्रता और क्षमा के भाव उत्पन्न हो जाएँगे और तुम्हारी घृणा और तुम्हारा क्रोध नष्ट हो जायगा। आगे चल कर प्रेम का ईश्वरीय विधान भी तुम्हें मालूम हो जायगा जिसके बल पर जीवन की आपत्तियों को तुम शान्तिपूर्वक सह सकोगे। अपने विचार, शब्द और काम में प्रेम का पुट देकर तुम अधिक नम्र, अधिक प्रेमी और अधिक दिव्य बन सकोगे। ध्यान के द्वारा ही तुम अपनी भूलों, कुत्सित वासनाओं और कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर सकोगे। ध्यान द्वारा जब तुम्हारे सब पाप धुल जायँगे तो तुम्हारी अन्तरात्मा बिल्कुल शुद्ध हो जायगी।

अगस्त २४

'ध्यान' के अभ्यास से तुमको अधिक बुद्धि मिलती है और तुमको अपनी चंचल एवं दुःखपूर्ण कुत्सित वासनाओं को छोड़ने का अवसर भी मिलता है। ध्यान के अभ्यास से तुममें दृढ़ता और विश्वास आता है, तुम्हारे सिद्धान्त अटल हो जाते हैं और तुमको स्वर्गीय सुख का अनुभव होता है।

'ध्यान' के लिए यह आवश्यक है कि हम ईश्वर के विधानों को जानें। विधानों की जानकारी प्राप्त कर लेने से हम उन पर और उनके निर्माता ईश्वर पर विश्वास करेंगे। ध्यान का उद्देश्य ही यह है कि हम 'सत्य' और ईश्वर को समझें तथा पूर्ण दिव्य शान्ति प्राप्त करें।

'ध्यान' के अभ्यास से अपनी स्वार्थपूर्ण कुत्सित वासनाओं को छोड़ो, झूठे देवी-देवताओं और दलबन्दियों से अपना सम्बन्ध तोड़ लो, मूर्खतावश जिस धार्मिक ढोंग में पड़े हुए हो उसे दूर करो और इस प्रकार अपनी आत्मिक उन्नति करो।

अगस्त २५

जब तुमको विश्वास होगा कि मनुष्य पूर्ण पवित्र जीवन व्यतीत कर सकता है और ऐसे जीवन की तुम प्रतिदिन आकांक्षा करोगे और ऐसा ही जीवन बनाने का तुम नित्य 'ध्यान' करोगे। इससे तुम्हारा आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और तुम्हें ऐसे-ऐसे अनुभव होन लगेंगे जिनको देखकर तुम्हें बड़ा सुख मिलेगा। धीरे धीरे जब तुम्हें विश्वप्रेम का अनुभव होगा और उसके विधान पर विश्वास करोगे तो तुम्हें गहरी शान्ति और अपूर्व सुख मिलेगा। उस समय तुम पुरानी बातों को भूल जाओगे और उनके स्थान में नई-नई बातें तुम्हारे मन में उत्पन्न होने लगेंगी। यह माया का परदा, जो अधर्मियों को इतना घना और अभेद्य मालूम होता है, तुम्हारी आँखों के सामने से हट जायगा और संसार का वास्तविक स्वरूप तुम्हें दिखलाई पड़ने लगेगा। तुम अपने को अमर समझने लगोगे। मृत्यु से तुम कभी घबड़ाओगे नहीं, क्योंकि तुमको अब इस बात का ज्ञान हो जायगा कि मैं तो अमर हूँ—मैं कभी मर नहीं सकता।

अगस्त २६

मनुष्य के हृदय पर अधिकार जमाने के लिए दो मालिक हमेशा एक दूसरे से लड़ाई करते रहते हैं। एक मालिक का नाम है राक्षस 'अहङ्कार' और दूसरे का नाम है देवता 'सत्य'। राक्षस अहंकार वह शैतान है जिसके शस्त्र काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, ईर्ष्या आदि होते हैं। जिनके द्वारा मनुष्य अंधकूप में गिरता है और देवता 'सत्य' के शस्त्र नम्रता, धैर्य, पवित्रता, त्याग, प्रेम आदि होते हैं जिनसे मनुष्य को ईश्वरीय प्रकाश मिलता है। इन दोनों मालिकों में बराबर युद्ध होता रहता है किन्तु दोनों का अधिकार हृदय पर नहीं हो सकता। ऐसा भी नहीं हो सकता कि हृदय दोनों मालिकों में बराबर-बराबर बाँट दिया जाय। महात्मा ईसा का कथन है कि, "एक मनुष्य दो मालिकों की सेवा एक साथ नहीं कर सकता। वह या तो राक्षस अहङ्कार की सेवा करेगा या देवता 'सत्य' की।"

अगस्त २७

यदि तुम 'सत्य' को जानना चाहते और उसका अनुभव करना चाहते हो तो तुम्हें अधिक से अधिक त्याग करना होगा। याद रक्खो अहंभाव के अच्छी तरह नष्ट हो जाने पर ही हमें 'सत्य' के दर्शन होंगे।

अमर महात्मा ईसा ने स्पष्ट कहा था, 'जो मेरा शिष्य होना चाहता है उसे प्रतिदिन त्याग करना होगा।' क्या तुम त्याग करने के लिए तैयार हो? क्या तुम अपने विषयों और सुख के सामान को छोड़ने के लिए तैयार हो? क्या तुम अपना अहंभाव छोड़ने के लिए तैयार हो? यदि हाँ तो तुम 'सत्य' के साम्राज्य में कठिनाइयों के रहते हुए भी प्रवेश कर सकोगे और तुमको वह शान्ति मिलेगी जिससे संसार वंचित है। जब तुम्हें अपने शरीर की भी सुधि न रहे और तुम्हारा अहंभाव सर्वथा नष्ट हो जाय तब तुम समझो कि हमें 'सत्य' के दर्शन हो गए। संसार के सारे धर्म इसी 'सत्य' को बताने के भिन्न-भिन्न मार्ग हैं।

अगस्त २८

जब मनुष्य कुकर्मों में लिप्त होकर अपने असली स्वरूप को भूल जाते हैं और अपवित्र होकर 'सत्य' मार्ग पर चलना छोड़ देते हैं तो 'सत्य' के परखने और एक दूसरे की जाँच करने का वे अपना एक अलग कृत्रिम मापदंड स्थिर करते हैं। इस प्रकार उनमें एक ही बात के लिए सदा मतभेद रहता है जिसके कारण उनमें आपस में बड़ी शत्रुता रहती है। परिणाम यह होता है कि ऐसे मनुष्यों को जीवन भर दुख उठाना पड़ता है।

भाइयो, क्या तुम सचमुच 'सत्य' का अनुभव करना चाहते हो? यदि करना चाहते हो तो उसका एक ही मार्ग है। वह यह है कि तुम अपने अहंभाव को भूल जाओ और काम, क्रोध, लोभ, मद, ईर्ष्या, स्वार्थ, हृदय की संकीर्णता आदि अवगुण का बिल्कुल नाश कर दो जिनमें तुमने अभी तक अपने को बुरी तरह डाल रक्खा है। जब तुमको

इन अवगुणों से मुक्ति मिल जायगी तो 'सत्य' के दर्शन आपसे आप हो जायेंगे। अपने ही धर्म को सब से बड़ा धर्म समझना छोड़ दो और नम्र होकर उदार बनना सीखो। संसार में रहकर भी न रहना सबसे बड़ा ज्ञान है।

अगस्त २९

'सारे जगत का क्रम ईश्वरीय विधान से चल रहा है' इसे तुम जब भली-भाँति समझ लोगे तो उस विधान का ख्याल रखकर ही अपने सब काम करोगे। उस विधान के अनुकूल चलने से जिस प्रकार हमें न्याय, शक्ति और प्रेम मिलता है उसी प्रकार उसके प्रतिकूल चलने से हमें अत्याचार, अशान्ति शत्रुता आदि नाना प्रकार की आपत्तियों का सामना करना पड़ता है। जब इन बातों का ज्ञान तुम्हें हो जायगा तो तुम शक्तिमान होकर अपने जीवन को ऊँचा बना सकोगे और तुम्हें स्थायी शक्ति तथा सुख मिलेगा। हर हालत में अपने मन को शान्त रखने का अभ्यास करो। वास्तव में यही ईश्वरीय विधान है। इसका अभ्यास करने से तुम्हारी सारी आपत्तियाँ भाग जायेंगी और लौटकर फिर कभी वापस नहीं आयेंगी।

अगस्त ३०

कदाचित् तुम यह सोच रहे हो कि कोई मित्र या सहायक न होने से हम बड़े ही दीन हैं और हमारी दशा अत्यन्त शोचनीय है। तुम अपने इस बोझ को हल्का करने का प्रयत्न भी बड़ी उत्सुकता के साथ करते हो किन्तु तुम्हारा यह बोझा हल्का नहीं होता प्रत्युत उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। तब तुम अपनी इस शोचनीय अवस्था का दोष अपने कुल, माता-पिता, अपने मालिक और ईश्वर पर मढ़ने लगते हो किन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं है। इनमें से किसी के कारण भी तुम दीन नहीं हुए हो। तुम्हारी दीनता का कारण तुम्हारे भीतर ही है और जहाँ कारण है वहाँ उसका इलाज भी है।

सितम्बर १

पुष्ट मस्तिष्क वाले लोग अपने शरीर की चिन्ता नहीं करते। वे काम में इतने संलग्न रहते हैं कि उन्हें अपने शरीर की ओर ध्यान देने की सुध भी नहीं रहती। वे अपने मन को विचारवान और दृढ़ बनाते हैं जिससे उनका शरीर आप से आप हमेशा स्वस्थ रहता है। यदि हम शरीर की कोई परवाह नहीं करते तो कोई हर्ज नहीं, किन्तु हम अपने मन को तो स्वस्थ रखने का प्रयत्न करते ही हैं। स्वस्थ मन ही शरीर स्वस्थ रखने का सबसे उत्तम साधन है।

अस्वस्थ मन अस्वस्थ शरीर से कहीं अधिक शोचनीय है। अस्वस्थ मन से शरीर भी अस्वस्थ हो जाता है। बिगड़ा हुआ शरीर इतना दयनीय नहीं है जितना बिगड़ा हुआ मन। ऐसे रोगी देखने में आते हैं जिनका मन यदि सबल, निस्स्वार्थ और सुखी बना दिया जाय तो उनका शरीर पूर्ण स्वस्थ हो सकता है।

सितम्बर २

कारण से कार्य होता है। यदि धन से दुराचार और गरीबी से अपमान होता तो प्रत्येक धनी दुराचारी और प्रत्येक गरीब अपमानित होता।

पापी तो पाप करेगा ही, चाहे वह धनी हो या गरीब अथवा दोनों के बीच की श्रेणी का। उसी प्रकार पुण्यात्मा भी हमेशा पुण्य के ही काम करेगा, चाहे वह धनी हो या गरीब अथवा दोनों के बीच की श्रेणी का। अधिक धन और अधिक गरीबी से समय आने पर भीतर की भरी हुई बुराई दूर हो सकती है, किन्तु वे बुराई को पैदा नहीं कर सकते।

गरीबी का सम्बन्ध मन से होता है, धन से नहीं। जब तक मनुष्य को अपना धन बढ़ाने का लोभ रहेगा तब तक उसे अपने को गरीब ही समझना चाहिये क्योंकि लोभ मन की गरीबी ही है।

सितम्बर ३

प्रकृति की शक्तियाँ सबल और आश्चर्यजनक होती हैं। इसी प्रकार मन की शक्तियाँ भी सबल और आश्चर्यजनक होती हैं किन्तु मन की शक्तियाँ प्रकृति की शक्तियों से कहीं अधिक सबल और आश्चर्यजनक होती हैं। मन की चेतन शक्तियाँ प्रकृति की अंधी और मशीन की तरह काम करने वाली शक्तियों को अपने वश में किये रहती हैं। अतएव भावना, इच्छा, मन और बुद्धि की शक्तियों को समझकर उनको समय के साथ काम में लाने से मनुष्यों और राष्ट्रों के भाग्य का निर्माण होता है।

जो प्रकृति की शक्तियों को समझ कर उन पर अधिकार रखता है वह प्रकृति का वैज्ञानिक है, किन्तु जो मन की शक्तियों को समझ कर उन पर अधिकार रखता है वह दैवी वैज्ञानिक है। जिस प्रकार के नियमों से प्रकृति के सारे काम होते हैं उसी प्रकार के नियमों से मन के भी सारे काम होते हैं।

सितम्बर ४

संसार का काम नितान्त न्याय के साथ चल रहा है। मानव जीवन के सब कामों का संचालन नितान्त न्याय के साथ होता है। ईश्वरीय विधान के अनुसार ही मनुष्य का जीवन प्रभावित होता है और उसे दुःख या सुख झेलना पड़ता है। मनुष्य काम करने के लिए स्वतन्त्र है। अच्छा या बुरा काम करना उसके हाथ में है किन्तु एक बार जब उसने कोई काम शुरू कर दिया तो उसके परिणाम को वह बदल नहीं सकता, वह उसके हाथ में नहीं है। किस प्रकार के विचारों को मनुष्य अपने मन में स्थान दे और किस प्रकार के काम करे, इसकी उसे पूरी स्वतन्त्रता है किन्तु उन विचारों और उन कामों के फलों पर उसका कोई अधिकार नहीं। फलों का निर्णय तो ईश्वरीय विधान ही किया करता है।

मनुष्य काम करने के लिये पूर्ण स्वतन्त्र है किन्तु उसका परिणाम उसके हाथ में नहीं है। परिणाम तो अवश्यम्भावी है। उसे न तो वह बदल सकता है, न मिटा सकता है और न उसके प्रभाव से अपने को बचा ही सकता है। बुरे विचारों और कामों से दुःख मिलता है तथा उत्तम विचारों और कामों से सुख।

सितम्बर ५

जीवन गणित के एक प्रश्न की तरह है। जिस विद्यार्थी को उसे हल करने की विधि नहीं मालूम, उसे वह बड़ा ही कठिन और गूढ़ जान पड़ता है, किन्तु जब हल करने की विधि उसे मालूम हो जाती है तो वही प्रश्न जो शुरू में बड़ा कठिन जान पड़ता था अब उसके लिये सरल हो जाता है। उस प्रश्न को अनेक प्रकार से करने का प्रयत्न दूसरे विद्यार्थी करते हैं किन्तु उसका हल गलत ही होता रहता है। जब हल करने की ठीक विधि मालूम हो जाती है तभी वह प्रश्न हल होता है। इसी प्रकार मनुष्य जीवन के प्रश्न को हल करने का प्रयत्न अनेक विधियों से करता है किन्तु जब तक उसे हल करने की ठीक विधि नहीं मालूम होती तब तक वह भटकता ही रहता है और उसकी अशान्ति बढ़ती जाती है। किन्तु जिस समय उसे ठीक विधि मालूम हो जाती है उसी समय उसके जीवन का प्रश्न हल हो जाता है और उसे शान्ति प्राप्त हो जाती है।

सितम्बर ६

मानव-जीवन कपड़े के एक टुकड़े की तरह है और अनेक व्यक्ति उस कपड़े के तागों की तरह हैं। तागे एक दूसरे से उलझते नहीं, सब अपने-अपने स्थान में डटे रहते हैं। उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य अपने ही कर्मों का अच्छा या बुरा फल भोगता है, दूसरे के कर्मों का नहीं। प्रत्येक व्यक्ति का काम सरल और निश्चित होता है और उसमें व्य-वस्था होती है। हमारे काम देखने में बड़े पेचीदे मालूम होते हैं फिर

भी वे एक सूत्र में बंधे होते हैं। मनुष्य के काम की प्रतिक्रिया होती रहती है। कर्म फल कारण और कार्य का चक्र चलता रहता है लेकिन जिस क्रम हमने किया है ठीक उसी अनुपात से हमें उसका फल भी मिलता है।

सितम्बर ७

मनुष्य के बुरे कामों से उसमें बुराई आती है और जब उसके कर्म अच्छे हो जाते हैं तो वह बुराई दूर हो जाती है। रूमी कहता है "ऐ मनुष्य, तू बुराई के उद्गम स्थल को मत ढूंढ। बुराई का उद्गम स्थल तू स्वयं ही है।"

कारण से कार्य होकर ही रहेगा। कार्य कारण से भिन्न नहीं हो सकता। इमर्सन कहता है, "जीवन के प्रत्येक भाग में न्याय की व्यवस्था है। उसे कोई टाल नहीं सकता।"

कारण और कार्य साथ-साथ चलते हैं। वे एक दूसरे से विलग नहीं हो सकते। उनमें चोली और दामन का सम्बन्ध है। जिस समय मनुष्य के मन में कोई बुरा काम करने का विचार उत्पन्न होता है उसी समय वह अपने मन को हानि पहुँचाता है इस विचार के आने के पहले मनुष्य जैसा पहले था वैसा नहीं रह जाता। वह थोड़ा निकृष्ट और दुःखी हो जाता है। ऐसे ऐसे बुरे विचारों के बारम्बार आने से तो वह नितान्त निकृष्ट और दुःखी हो जाता है।

सितम्बर ८

मनुष्य का सबसे मुख्य धर्म है अपनी 'इच्छाशक्ति' को प्रबल बनाना। चरित्र की दृढ़ता और स्थिरता को 'इच्छाशक्ति' कहते हैं। सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों हितों के लिये प्रबल 'इच्छाशक्ति' की अत्यन्त आवश्यकता है। बिना प्रबल 'इच्छाशक्ति' के मनुष्य को दुःखी रहना पड़ेगा और वह उस सहायता से वंचित हो जायगा जो उसे भीतर से मिलती है।

'इच्छाशक्ति' को प्रबल बनाने का मार्ग अत्यन्त सुलभ और सरल है किन्तु मनुष्य ने उसे स्वयं पेचीदा बना रक्खा है, क्योंकि 'इच्छाशक्ति' को प्रबल बनाने की ओर उसका ध्यान ही नहीं रहता।

सितम्बर ९

इच्छा-शक्ति को प्रबल बनाने के लिये निम्नलिखित सात नियमों का पालन करना आवश्यक है :—

१—बुरी आदतों को छोड़ो।

२—अच्छी आदतें डालो।

३—हर समय अपना कर्तव्य सावधानी से पालन करो।

४—जो कुछ भी करना है, उसे दिल लगाकर तुरन्त कर डालो।

५—जीवन के कुछ सिद्धान्त बना लो और उन्हीं के अनुसार चलो।

६—जिह्वा को वश में रक्खो।

७—मन को वश में रक्खो।

सितम्बर १०

जो अपने ऊपर संयम नहीं रखता और 'इच्छाशक्ति' को प्रबल करने के लिये किसी जादू की खोज में रहता है तथा स्वयं कोई प्रयत्न नहीं करना चाहता, वह अपने को धोखा देता है और जितनी भी 'इच्छाशक्ति' उसके पास है उसे वह कमजोर बना रहा है।

बुरी आदतों को हटाने से जो प्रबल 'इच्छाशक्ति' हमें प्राप्त होती है उसके द्वारा हम अच्छी आदतें भी डालते हैं। जिस प्रकार बुरी आदतों के हटाने के लिये दृढ़ निश्चय और बुद्धि की आवश्यकता होती है उसी प्रकार अच्छी आदतें डालने के लिये भी दृढ़ निश्चय और बुद्धि की आवश्यकता है। ऐसा करने के लिये मनुष्य हमेशा अपने मन से काम ले और अपने ऊपर लगातार चौकसी रक्खे।

सितम्बर २३

मनुष्य के हृदय की खराबी ही उसे प्रलोभन में फँसाती है। मनुष्य के हृदय में जितनी अधिक खराबी होगी उतना ही अधिक वह प्रलोभनों में फँसेगा। जब हृदय से खराबी दूर कर दी जाती है और जब हृदय पवित्र हो जाता है तो प्रलोभन की ओर आकृष्ट होने वाली कोई चीज हृदय में रह नहीं जाती, इसलिये जो वस्तु उसे पहले अच्छी लगती थी वह अब फीकी मालूम होने लगती है और फिर वह प्रलोभनों में नहीं फँसता। ईमानदार मनुष्य अवसर पाकर भी चोरी नहीं करता और शाकाहारी प्राकृतिक चिकित्सक न तो कभी शराब पीता है और न निकृष्ट भोजन अपने पेट में भरता है। हृदय की शुद्धता के कारण जिसका मन शान्त है उसे क्रोध कभी आ नहीं सकता। लम्पट की भूख्ता और उसका जादू उस मनुष्य का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते जिसका हृदय शुद्ध हो गया है।

सितम्बर २४

जो मनुष्य इस शंका से कि उसके भोगविलास की सामग्री और उसका धन नष्ट हो जायगा, 'सत्य' का मार्ग छोड़ देता है उसको लोग हानि पहुँचाते हैं, अपमानित करते हैं, लूट लेते हैं और कुचल डालते हैं; क्योंकि उसने पहले अपनी आत्मा को हानि पहुँचाई है, अपमानित किया है, लूटा है और कुचला है। किन्तु धर्मात्मा और ईमानदार मनुष्य की ऐसी दशा नहीं हो सकती, क्योंकि वह अपनी आत्मा को कभी धोखा नहीं देता और हमेशा 'सत्य' के मार्ग पर चलता है। मारपीट से अथवा हथकड़ी बेड़ियों से मनुष्य गुलाम नहीं बनता, वह गुलाम बनता है अपनी आन्तरिक बुरी भावनाओं से।

सितम्बर २५

जब किसी ईमानदार मनुष्य की कठिन परीक्षा होती हो तो उसे अत्यन्त प्रसन्न होना चाहिये। उसे यह देखकर खुश होना चाहिये कि जिन सिद्धान्तों के अनुसार मैं अभी तक चल रहा था उनमें मेरी कितनी दृढ़ता है। उसे सोचना चाहिये, "आज मुझे अपनी योग्यता दिखाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है और आज मेरे 'सत्य' की अग्नि-परीक्षा है। मेरा संसार भले ही नष्ट हो जाय किन्तु अपने 'सत्य' को मैं नहीं छोड़ सकता।" ऐसा विचार कर वह बुराई के बदले भलाई करेगा और बुराई करने वाले के साथ भी दया का बर्ताव करेगा।

चुगली करनेवालों और बुराई करनेवालों को अल्पकाल के लिये सफलता भले ही मिल जाय किन्तु 'न्याय का विधान' अपना काम करके रहेगा। ईमानदार मनुष्य को कुछ समय तक सफलता भले ही न मिले परन्तु वह अजेय है और इस लोक या मरने के बाद परलोक में ऐसा कोई शस्त्र नहीं जो उसको हानि पहुँचा सके।

सितम्बर २६

मनुष्य का मन और उसका जीवन बिल्कुल सुलझा हुआ होना चाहिये। उसमें यदि कभी मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक गड़बड़ी पड़ जायें तो उसे दूसरों की तरह आपदाओं के आने पर घबड़ा न जाना चाहिये और न मन में शंका आदि किसी प्रकार का विकार पैदा होने देना चाहिये। उसे हर एक कठिनाई झेलने के लिये तैयार रहना चाहिये। किन्तु बिना विवेक के कठिनाइयों को झेलने का बल उसे प्राप्त नहीं हो सकता और विवेक लगातार मन के विश्लेषण से ही मिल सकता है।

सितम्बर २७

जिस मनुष्य को अपने विचारों और अपनी स्थिति का ज्ञान नहीं है उसे विवेक प्राप्त करने के लिये आन्तरिक बल की वृद्धि करनी होगी।

सत्य को समझने और उसे प्राप्त करने के लिये मनुष्य को निभयता के साथ अपनी कमजोरियों को हृदय से निकालनी होगी।

जैसे-जैसे सत्य की खोज होगी वैसे वैसे वह अधिक साफ दिखलाई पड़ेगा। परीक्षा करने अथवा विश्लेषण करने से 'सत्य' की कोई हानि नहीं होती।

असत्य की जितनी परीक्षा की जायगी उतनी ही उसमें और भी अधिक अन्धकार बढ़ता जायगा किन्तु सत्य के प्रकाश के प्रवेश करते ही यह अन्धकार टिक नहीं सकता।

जो जितना अधिक अपनी कमजोरियों पर ध्यान से विचार करता है उसे उतना ही अधिक विवेक मिलता है। जिसे विवेक मिल जाता है वह अमर 'सत्य' की खोज कर लेता है।

सितम्बर २८

सब कार्यों की जड़ विश्वास है। जो विश्वास मन और हृदय में स्थान बना लेता है वही जीवन में प्रस्फुटित होता है। जिस मनुष्य के मन में जैसा विश्वास होता है उसी के अनुरूप वह सोचता, काम करता और जीवित रहता है। मनुष्य का मन गणित के नियमों के समान ऐसा बना हुआ है कि एक ही समय में दो विरोधी विचार उसमें नहीं रह सकते। न्याय और अन्याय, घृणा और प्रेम, शान्ति और अशान्ति सत्य और असत्य एक ही समय में दोनों साथ साथ नहीं रह सकते। मनुष्य इनमें से एक ही में विश्वास कर सकता है दोनों में नहीं। उसके दैनिक काम से यह मालूम होता जाता है कि वह किस में विश्वास कर रहा है।

सितम्बर २९

जो मनुष्य अपने साथियों द्वारा किये गये अन्याय पर क्रोध करता है, जो सोचता है कि मेरे साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया गया और जिसे इस बात की शिकायत रहती है कि दुनिया में न्याय नहीं हो रहा है, वह अपने व्यवहार से सिद्ध करता है कि वह 'अन्याय' में विश्वास करता है। वह चाहे जितना बने और कहे कि मेरा विश्वास 'अन्याय' पर नहीं है किन्तु उसके हृदय में यही भावना रहती है कि दुनिया में चारों ओर गड़बड़ी, उपद्रव और अन्याय ही अन्याय है। इसका परिणाम यह होता है कि उसका चरित्र गिर जाता है और वह दुःख तथा अशान्ति से परेशान रहता है।

जिस मनुष्य का प्रेम में और उसके स्थायित्व में विश्वास है वह हर परिस्थिति में प्रेम से ही काम लेता है उससे हटता नहीं और शत्रु या मित्र दोनों पर समान रूप से प्रेम की वर्षा करता है।

सितम्बर ३०

जिन मनुष्यों का विश्वास सत्य की महत्ता पर है, जो पवित्रता और पूर्णता पर विश्वास करते हैं और जो सोचते हैं कि दुनिया में अच्छाई ही अच्छाई है वे न तो जीवन में कोई भूल चूक करते हैं और न कोई पाप और बुराई ही। वास्तव में उनका विश्वास ही उनके चरित्र में दिखलाई पड़ता है। यदि मनुष्य हमेशा विषय वासना में फँसा रहता है तो हमें इस बात के जानने से क्या लाभ कि वह किस धर्म को मानता है? अथवा यदि वह यह विश्वास करे कि महात्मा ईसा ईश्वर थे, वे लोगों के लिये सूली पर चढ़ गये तो इस बात के जानने से हमें क्या लाभ? जानने की बात तो यह है कि उस मनुष्य का चरित्र कैसा है और परीक्षा के समय उसका व्यवहार कैसा रहता है? इन प्रश्नों के उत्तर से ही हमें मालूम हो जायगा कि वह शैतान के धर्म को मानता है अथवा ईश्वर के धर्म को।

अक्टूबर १

जो मनुष्य उत्तम कार्यों में अपना हित समझता है वह उनसे प्रेम करता और उन्हीं में लिप्त रहता है। जो मनुष्य अपवित्र और स्वार्थपूर्ण कार्यों में अपना हित समझता है वह उनसे प्रेम करता है और उन्हीं में लिप्त रहता है। वृक्ष की पहचान उसके फलों से होती है।

ईश्वर, महात्मा ईसा या इंजील पर विश्वास करना एक बात है और जीवन के कार्य करना दूसरी बात। अतएव किसी धर्म विशेष पर विश्वास करना मनुष्य के लिये उतना महत्वपूर्ण नहीं जितना उसके शुद्ध विचार, उसका शुद्ध मन और उसके उत्कृष्ट कार्य। मनुष्य के विचारों, उसके शुद्ध मन और उसके कार्यों से ही पता चलता है कि उसके विश्वास का आधार सच्चा धर्म है अथवा झूठा धर्म है।

दो प्रकार के विश्वास मनुष्य के जीवन को पूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। कुछ तो नेकी में विश्वास करते हैं और कुछ बदी में।

अक्टूबर २

बहुत से ऐसे सज्जन हैं जो कहते हैं कि हम इतने दृढ़ हैं कि कभी किसी प्रलोभन में पड़ ही नहीं सकते। किन्तु जब किसी प्रलोभन में एका-एक पड़ जाते हैं तो उनको बड़ा आश्चर्य होता है। परन्तु इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। कारण स्पष्ट है। कुछ वर्ष पहले एक अशुद्ध विचार मनुष्य के मन में उत्पन्न हो गया और वह विचार दो चार बार उसके मन में आया। इस प्रकार उस अशुद्ध विचार ने उसके हृदय में घर कर लिया। उस विचार में उसे आनन्द आने लगा और इस कारण वह विचार उसके मन में अनेक बार आने लगा। धीरे-धीरे वह अशुद्ध विचार प्रबल होता गया और उसकी जड़ मजबूत हो गई। अन्त में उसने मनुष्य के मन को विकृत कर दिया और वह प्रलोभन में एकाएक फँस गया। अब आप ही बताइये कि इसमें आश्चर्य की क्या बात है? विकृत विचार अनेक वर्षों के बाद भी मनुष्य का पतन करते हैं।

अक्टूबर ३

कोई चीज ऐसी नहीं है जो प्रकट न हो। इसी प्रकार कोई ऐसा विचार नहीं जो किसी न किसी रूप में प्रकट न हो। यदि यह विचार उत्कृष्ट है तो उससे अच्छा काम होता है और यदि यह निकृष्ट है तो उससे बुरा काम होता है। एक मनुष्य महात्मा होता है, क्योंकि वह अपने मन में उत्तम उत्तम विचारों को स्थान देता है और उनको अच्छे अच्छे साधनों द्वारा पुष्ट करता है। दूसरा मनुष्य विषयी होता है, क्योंकि वह विषयों को मन में स्थान देता है और लगातार विषयों द्वारा ही उनकी पुष्टि करता है।

मनुष्य को यह न सोचना चाहिये कि मैं अवसर से लाभ उठाकर अपने पापों और प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर सकता हूँ। वह उन पर केवल अपने पवित्र विचारों द्वारा ही विजय प्राप्त कर सकता है।

अक्टूबर ४

तुम स्वयं मन में अपने विचार लाते हो, अतएव अपने जीवन को बनाने वाले तुम स्वयं हुए। वास्तव में विचार ही मनुष्य को बनाता और वही मनुष्य को बिगाड़ता है। केवल उसी में जीवन को आगे बढ़ाने की शक्ति है, किन्तु तुम ऐसा न सोचकर अपने जीवन के परिणाम को देखते हो और समझते हो कि यह परिणाम एकाएक अपने आप पैदा हो गया। जीवन में कोई परिणाम अपने आप नहीं पैदा होता। विचारों की अच्छाई या बुराई से ही अच्छे और बुरे परिणाम पैदा होते हैं। मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही वह बनता है।

यदि तुम्हारे मन में शांति और प्रेम है तो तुम्हारा जीवन सुखी होगा। इसी प्रकार यदि तुम्हारे मन में अशांति और घृणा है तो तुम्हारा जीवन दुखी होगा। बुराई करोगे तो दुख पाओगे और भलाई करोगे तो सुख पाओगे।

अक्टूबर ५

जो विषयों में फँसा है उसके ऊपर जब कोई विपत्ति आती है तो वह कहने लगता है कि ईश्वर ने मेरे साथ अन्याय किया है, किन्तु जो विषयों से परे है उसके ऊपर कभी विपत्ति आ जाने पर वह कहता है कि ईश्वर ने मेरे साथ न्याय किया है। उसकी धारणा होती है कि मनुष्य अपने कार्यों का फल भोगता है अतएव अन्याय का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। वह सोचता है कि यदि मैं अपने को धोखा न दूँ तो संसार में मुझे कोई भी धोखा नहीं दे सकता। दूसरे जब उसको दुख देते हैं तो उसका उन पर कुछ असर नहीं होता।क्योंकि वह सोचता है कि मैंने पहले दूसरों को दुख दिया था, इसलिये मैं भी अब दुख पा रहा हूँ। वह सब चीजों को अच्छी दृष्टि से देखता है और अपने शत्रुओं से भी प्रेम करता है। वह उनका भी भला चाहता है जो उसके साथ बुराई करते हैं। वह सोचता है कि इन्हीं सज्जनों के द्वारा मैं उस भोग को भोग रहा हूँ जिसका मैंने ईश्वर का विधान तोड़कर, अपने को अधिकारी बना रक्खा है।

अक्टूबर ६

जिस प्रकार अणुओं से शरीर और ईटों से घर बनता है उसी प्रकार विचारों से मनुष्य का मन बनता है। एक मनुष्य यदि दूसरे से नहीं मिलता-जुलता तो उसका कारण यही है कि प्रत्येक मनुष्य अपने भिन्न भिन्न विचारों से अपने भिन्न-भिन्न चरित्र का निर्माण करता है। यह एक प्रसिद्ध कहावत है कि "मनुष्य जैसा मन में सोचता है वैसा ही बनता है।" एक प्रकार के विचार मनुष्य के मन में जब अपनी जड़ जमा लेते हैं तो उनका बदलना कठिन हो जाता है। वे उसी समय हटाये जा सकते हैं जब मनुष्य उनको हटाने का प्रयत्न दृढ़ता के साथ करे और अपने ऊपर पूर्ण अनुशासन रक्खे। जिस प्रकार अच्छा सामान लगाने से अच्छा घर बनता है और अच्छी खाद देने से अच्छा वृक्ष तैयार होता है उसी प्रकार अच्छे विचारों से मनुष्य का अच्छा चरित्र और अच्छा मन बनता है।

अक्टूबर ७

जिस प्रकार अनेक पुष्ट ईंटों से एक स्थायी और सुन्दर घर बनता है, उसी प्रकार उत्कृष्ट अनेक विचारों से मनुष्य के स्थायी और सुन्दर चरित्र का निर्माण होता है। घर बनवा कर जब उसका मालिक उसमें रहता है तो उसे परम सुख मिलता है, इसी प्रकार अपने उत्कृष्ट चरित्र का निर्माण करके मनुष्य जब संसार में विचरता है तो उसे परम सुख मिलता है। सच तो यह है कि यदि मनुष्य अपने घर रूपी चरित्र का निर्माण करना चाहता है तो उसे मजबूत ईंटों रूपी पुष्ट, स्वतंत्र, निस्स्वार्थ और ऊँचे विचारों को ही मन में स्थान देना चाहिये। इस नवीन मंदिर को बनाने के लिए उसे अपने दकियानूसी बेकार विचारों को नष्ट करना पड़ेगा।

ऐ मेरी आत्मा! जैसे जैसे द्रुतगति से समय बीतता जाता है वैसे वैसे तुझे अपने भाग्य मंदिर को और भी अधिक दृढ़ और भव्य बनाते रहना चाहिए।

अक्टूबर ८

यदि कोई अपने जीवन को सफल, दृढ़ और आदर्श बनाना चाहता है जो संसार के तूफान रूपी संकटों से उसकी रक्षा करे और उसे प्रलोभन से बचावे तो उसे चार गुणों का पालन दृढ़ता से करना चाहिये। वे चार गुण हैं—न्याय, ईमानदारी, सचाई और दया। जिस प्रकार चौकोनिया की सहायता से घर बनता है उसी प्रकार इन चार नैतिक गुणों से मनुष्य का चरित्र बनता है। यदि मनुष्य इन गुणों की परवाह न करके अन्याय, बेईमानी, धोखा, और अत्याचार से जीवन में सुख और सफलता प्राप्त करना चाहे तो उसे उसी प्रकार निराश होना पड़ेगा जिस प्रकार राज को यदि वह ठीक ठीक हिसाब न लगा'कर बिना चौकोनिया की सहायता से घर बनाना शुरू करे, अन्त में निराश होना पड़ता है।

अक्टूबर ९

जो ऊपर कहे हुए चार गुणों को अपने जीवन का सर्वस्व समझता है, जो उन्हीं पर चलकर अपने चरित्र की इमारत बनाता है; जिसके विचार, जिसकी बातें और जिसके कर्म उनसे भिन्न नहीं होते और जो उन्हीं को सामने रखकर संसार का व्यवहार और अपने कर्तव्य का पालन करता है उसकी सचाई क्रमशः मजबूत होती जाती है और उसे उत्तरोत्तर जीवन में बल मिलता रहता है। वह एक ऐसा सुन्दर और मजबूत मन्दिर बना रहा है जिसमें बैठकर वह सुख और शान्ति का अनुभव कर सकता है।

अक्टूबर १०

जब मनुष्य अपने विषयासक्त जीवन को अत्यन्त पवित्र और उत्कृष्ट बनाना चाहता है तो ऐसा करने के लिये उसमें एक उत्कृष्ट इच्छा पैदा हो जाती है। जब उसे ऐसे जीवन को पाने की धुन लग जाती है तो वह 'ध्यान' का अभ्यास करता है।

बिना उत्कट इच्छा के 'ध्यान' नहीं हो सकता। आलस्य और उपेक्षा उसके लिये घातक हैं। जितना गम्भीर मनुष्य का स्वभाव होगा उतना ही अधिक वह 'ध्यान' का अभ्यास सफलतापूर्वक कर सकेगा। मनुष्य की उत्कट इच्छा जितनी अधिक जाग्रत होगी उतना ही अधिक उसको 'ध्यान' में सफलता मिलेगी।

अक्टूबर ११

चित्त की एकाग्रता से मनुष्य बुद्धि की ऊँची चोटी को पार कर सकता है, किन्तु 'सत्य' की दैवी चोटी को नहीं पार कर सकता। 'सत्य' की चोटी को पार करने के लिये उसे 'ध्यान' करने की आवश्यकता है। एकाग्रता से मनुष्य को आश्चर्य जनक बुद्धि और शीघ्र की महान शक्ति मिल सकती है। 'ध्यान' से उसे दैवीशक्ति और बुद्ध भगवान की पूर्ण शान्ति प्राप्त हो सकती है। एकाग्रता जब पराकाष्ठा को पहुँच जाती है तो वह हमारे लिये शक्ति का काम करती है और ध्यान जब पराकाष्ठा को पहुँच जाता है तो वह हमारे लिये बुद्धि का काम करता है। एकाग्रता से विज्ञान, कला, व्यापार आदि जीवन के कारबार का ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु 'ध्यान' से स्वय जीवन का ज्ञान होता है। संसार के सन्त, ऋषि और उद्धारक बहुत ही पवित्रता और बुद्धिमत्ता से जीवन व्यतीत करते थे। उनको ईश्वर का प्रकाश प्राप्त था। वे लोग 'ध्यान' के द्वारा सन्त, ऋषि और उद्धारक हो सके हैं। 'सत्य' से इतना गहरा प्रेम करो कि उसी में डूब जाओ।

अक्टूबर १२

शुरू-शुरू में जब हम प्रातःकाल 'ध्यान' करने बैठते हैं तो आध घन्टे से अधिक नहीं बैठ सकते किन्तु इस आध घन्टे में जो पवित्र ज्ञान हमें मिलता है उसके बल पर हम दिन भर अपना काम किया करते हैं। इसलिये 'ध्यान' से मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन बनता है। जैसे-जैसे उसके 'ध्यान' का अभ्यास बढ़ता जाता है वैसे-वैसे वह अधिक मजबूत, अधिक पवित्र, अधिक शान्त और अधिक बुद्धिमान हो जाता है। इसलिये वह हर हालत में अपने कर्तव्य का पालन सुचारु रूप से कर सकता है। ध्यान से दो लाभ होते हैं —

(१) पवित्र वस्तुओं को बार बार मनन करने से हमारा हृदय पवित्र होता है।

(२) हृदय की पवित्रता को जीवन के कार्यों में लगाने से हमें ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होता है।

अक्टूबर १३

ध्यान के समय मन में पवित्र विचारों को स्थान देने से मनुष्य की विचार करने की शक्ति पवित्र और परिमार्जित होती है जिससे प्रेरित होकर वह उत्तम-उत्तम काम और अपने कर्त्तव्य का पालन पवित्रता के साथ करता है। बराबर पवित्र विचारों को मन में स्थान देने के कारण उसके विचार हमेशा के लिए पवित्र हो जाते हैं और वह सारे कामों को इसी पवित्रता के साथ करता है।

अनेक मनुष्यों के मन म दुर्व्यसन, काम, क्रोध, मोह, लोभ, बचैनी, चंचलता, दुःख आदि अनेक विचार होते हैं किन्तु जब एक मनुष्य 'ध्यान' का अभ्यास करने लगता है तो वह अपने ऊँचे विचारों द्वारा इन विकारों को वश में कर लेता है।

अक्टूबर १४

अमीर और गरीब दोनों को स्वार्थ के कारण दुःख उठाना पड़ता है, कोई बच नहीं सकता। अमीरों को एक विशेष प्रकार का दुःख होता है। गरीबों को भी एक विशेष प्रकार का दुःख होता है। इसके अलावा अमीरों की सम्पत्ति बराबर घट रही है और गरीबों की बराबर बढ़ रही है। आज का गरीब कल का अमीर हो रहा है और आज का अमीर कल का गरीब हो रहा है। भय भी मनुष्य के पीछे परछाईं की तरह लगा रहता है। जो मनुष्य केवल अपना पेट भरने के लिये धन इकट्ठा करता है उसे यह भय रहता है कि कहीं कोई उठा न ले जाय, उसी प्रकार जो गरीब केवल अपना पेट भरने के लिय इकट्ठा करता है उसे भी यह भय रहता है कि हमारे धन को कोई ले न जाय और हम बिल्कुल दरिद्र न हो जायें। इसके अलावा इस उपद्रवी संसार में जो भी हैं उन सबको मृत्यु का भय परेशान करता रहता है।

अक्टूबर १५

मनुष्य को तीन दरवाजों में होकर अवश्य गुजरना होता है जहाँ उसे हार खानी होती है। पहला दरवाजा 'इच्छा' का है, दूसरा 'निन्दा' का है और तीसरा 'अहंभाव' का। 'ध्यान' के अभ्यास द्वारा वह अपने मन में इच्छाओं का विश्लेषण करता है और उनके प्रभाव को अपने जीवन और चरित्र पर देखता है। इसके अनन्तर उसको मालूम होता है कि बिना इच्छाओं के छोटे मनुष्य अपना, अपने पड़ोसियों का और परिस्थितियों का दास बना रहता है। ऐसा मालूम करके वह इच्छा के दरवाजे में घुसता है और आत्मानुशासन द्वारा सबसे पहले अपनी आत्मा को शुद्ध करता है।

अक्टूबर १६

मनुष्य विषय वासनाओं को छोड़ प्रेम और बहादुरी के साथ अपने उद्देश्य की पूर्ति करता हुआ आगे बढ़ता जाय। वह अपने ऊपर न तो मित्रों की तीव्र आलोचना का प्रभाव पड़ने दे और न मनाभिकारों से ही विचलित हो। इस प्रयत्न में वह कभी ठोकर खायगा और कभी गिरेगा किन्तु उसे इसकी परवाह न करके उत्तरोत्तर आगे को बढ़ते ही रहना चाहिए और अपने मन में सोचते रहना चाहिये कि मैं कितना आगे बढ़ आया हूं। आपत्तियों के बीच यदि उसने कुछ भी पवित्रता प्राप्त कर ली है और अपने उद्देश्य में यदि उसने कुछ भी कदम बढ़ाया है तो उसे सन्तोष करना चाहिये, निराश न होना चाहिये।

अक्टूबर १७

भीतरी ज्ञान प्राप्त कर लेने के अनन्तर नम्रता का उज्ज्वल वस्त्र धारण करके मनुष्य अपनी सारी शक्तियों को उन धारणाओं में लगाता है जिन पर अभी तक वह बड़ी श्रद्धा के साथ विश्वास करता था। वह अब समझता है कि अपरिवर्तनशील और शाश्वत 'सत्य' क्या है तथा सत्य के विषय के उसके अनेक परिवर्तनशील विचार क्या हैं। उसे मालूम होता है कि भलाई, पवित्रता, दया और प्रेम को अभी उसने गलत समझ रक्खा था किन्तु उनके असली तत्त्व को उसने अब समझ लिया है। अतएव वह अपनी गलत धारणाओं को छोड़ देता है और ईश्वरीय विधानों को समझकर उन पर विश्वास करता है। अब तक वह दूसरों के सामने अपनी धारणाओं को अधिक महत्त्व देता था किन्तु अब वह उन्हें निरर्थक समझता है।

अक्टूबर १८

जो पक्का इरादा कर लेता है कि मैं अब संसार की चमक दमक और माया जाल में न फंसूंगा वह अपने इरादे की दृढ़ता से जीवन की नकली वस्तुओं में न फंसकर असली वस्तुओं को ग्रहण करता है। संसार में मुझे किस प्रकार रहना चाहिये, इसकी खोज वह कर लेगा और उसी प्रकार का जीवन व्यतीत करेगा। वह न तो कामुक और हठी होगा और न कभी गलत रास्ते पर चलेगा। अपने हृदय में ही ईश्वर के निवास स्थान का पता लगाकर वह पवित्र, शान्त, शक्तिशाली और बुद्धिमान हो जायगा और लगातार स्वर्गीय जीवन व्यतीत करेगा जिसको उसने अब खूब समझ लिया है।

अक्टूबर १९

मनुष्य इच्छाएँ इसलिये करते हैं कि उनकी पूर्ति से उन्हें सुख मिलता है लेकिन उनका अन्त अत्यन्त दुखदाई और निष्फल होता है। वे तर्क वितर्क इस वास्ते करते हैं कि तर्क वितर्क कर के वे लोगों को अपनी बुद्धि का परिचय देना चाहते हैं किन्तु उसका अन्त भी अपमान जनक और दुखद होता है। जब ऊँची से ऊँची इच्छा और अधिक से अधिक अभिमान करके मनुष्य थक जाता है और उसे शान्ति नहीं मिलती, तब वह सदुपदेश सुनने और देवी जीवन व्यतीत करने की इच्छा करता है। जिन्होंने अपने को संयम की फांसी के तख्ते पर लटका दिया है वे ही अपना चरित्र बदल सकते हैं और जिन्होंने अहंकार छोड़ दिया है वे ही अमर जीवन प्राप्त करके हमेशा चमकते हैं।

अक्टूबर २०

अपवित्र मनुष्य पवित्र बनने का विचार कर ले तो पवित्र बन सकता है, कमजोर यदि सबल बनने का विचार कर ले तो सबल बन सकता है, इसी प्रकार मूर्ख बुद्धिमान बनने का विचार करले तो बुद्धिमान बन सकता है। सारी चीजें मनुष्य के लिए साध्य हैं। जिनको वह चाहे स्वयं चुन ले। आज वह यदि अज्ञान की चीजें चुनता है तो कल ज्ञान की चुनेगा। वह माने चाहे न माने किन्तु उसे अपना उद्धार स्वयं करना होगा। वह अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर नहीं डाल सकता। किसी भी धार्मिक छल से वह अपने जीवन के देवी सिद्धान्त को धोखा नहीं दे सकता। ऐसा करेगा तो उसकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो जायगी और उसकी विचार-शक्ति कुण्ठित हो जायगी। उसे अपने उद्धार का काम स्वयं करना होगा। जो उसे स्वयं करना है उसे, उसके लिए, ईश्वर भी न करेगा।

अक्टूबर २१

मनुष्य शक्ति के लिए एक पन्थ से दूसरे पन्थ में घूमता फिरता है किन्तु उसे असली तत्व नहीं मिलता। वह शान्ति के लिए देश-देशान्तर की यात्रा करता है किन्तु उससे भी उसे शान्ति नहीं मिलती। याद रक्खो, वह जब तक अपने ही भीतर स्थित 'सत्य' की खोज नहीं कर लेगा तब तक उसे कदापि शान्ति नहीं मिल सकती। जब वह अपने मन और हृदय को दोषों से शुद्ध कर लेता है तब उसे शान्ति मिलती है और उसका प्रभाव उसके कर्मों और कुटुम्बियों पर पड़ता है।

जब मनुष्य के पापों का बोझ इतना भारी हो जाय कि वह उसे उठा न सके तो उसे ईश्वर की शरण जाना चाहिये जो उसी के हृदय के भीतर एक सिंहासन पर बैठा रहता है। ऐसा करने से उसका बोझ हलका हो जायगा और उसकी गणना देवताओं में होगी।

अक्टूबर २२

मनुष्य जब भूतकाल और भविष्य की बात सोचने लगता है तो वह वर्तमान काल की बात से उदासीन हो जाता है। वह यह भूल जाता है कि भूत और भविष्य को छोड़ कर मुझे वर्तमान में ही काम करना चाहिये। उसको सब चीजें केवल वर्तमान में ही मिल सकती हैं। जिसमें मार्ग दिखलाने की बुद्धि नहीं होती और जो नकली चीज को असली समझता है वह कहा करता है, "यदि मैं इस काम को पिछले सप्ताह, गत मास अथवा गत वर्ष करता तो आज मेरी अवस्था कहीं अच्छी होती अथवा जो कुछ करना है वह मुझे मालूम है, उसे मैं कल करूँगा।" वह अभागा नहीं जानता कि भूत और भविष्य में कुछ रक्खा नहीं है। सब कुछ वर्तमान ही है और उसी में काम करना चाहिये। सौ बात की बात तो यह है कि न तो भूत कोई चीज है और न भविष्य ही। ये केवल स्वप्न हैं। जो उनमें विचरण करता है वह असली तत्व को खो देता है।

अक्टूबर २३

भूत और भविष्य की परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़कर और भूत तथा भविष्य के हवाई किले बनाना छोड़कर सामने निश्चल आशा और वर्तमान में अपनी दैवी शक्ति द्वारा काम करो।

जो तुम भविष्य में बनने की आशा कर रहे हो वह तुम आज ही बन सकते हो। तुम बराबर अपने काम को स्थगित करते हो इसलिये तुम्हें सफलता नहीं मिलती। यदि तुममें किसी काम को स्थगित करने की शक्ति है तो उस काम को सफल बनाने की भी शक्ति है। इस सत्य को समझने से प्रतिदिन तुम्हारा बल बढ़ेगा और जिस बात को तुम असंभव समझते थे वह तुम्हारे लिये संभव हो जायगी।

वर्तमान में काम करने से तुम्हारा घर सारी अभीष्ट वस्तुओं से भर जायगा। तुम सब कुछ जानते हो यह समझकर वर्तमान में काम करो।

अक्टूबर २४

किसी काम को कल के लिये मत टालो। जो भविष्य में अपनी उन्नति को सोचता है वह वर्तमान काल में बराबर असफल होता है।

तुमने भूतकाल में जो पाप किया था उसे भूल जाओ और यह ध्यान रक्खो कि अब तुमसे कोई पाप न होगा। जब तुम भूतकाल के पापों की ओर ध्यान ले जाते हो तो अपनी आत्मा को इतना कमजोर बनाते हो कि वह पाप करने लगे।

मूर्ख मनुष्य अपने काम को बराबर टालता जाता है। वह कहता है, "मैं कल से सुबह उठा करूँगा। मैं कल अपने ऋण को अदा कर दूँगा।" किन्तु बुद्धिमान मनुष्य वर्तमान के महत्त्व को भलीभाँति जानता है। वह कहता है, "मैं आज ही से सुबह उठूँगा। मैं अपने ऋण को आज ही अदा करूँगा।" वह अपने काम को उसी दम करता है इसलिये उसे उत्तरोत्तर सफलता, शक्ति और शांति मिलती है।

अक्टूबर २५

भविष्य के कामों को छोड़ कर हमें वर्तमान के कामों में जी जान से जुट जाना चाहिये जिससे आगे चलकर पछताना न पड़े।

जिस मनुष्य को आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता और जो इसी शरीर को सब कुछ समझता है वह कहा करता है, "इतने वर्ष पूर्व मैं पैदा हुआ था और जब मरे दिन पूरे हो जायेंगे तो मर जाऊँगा" ऐसा वह अपनी अज्ञता से कहता है। वास्तव में हम तो अमर हैं तो फिर हमारे लिये जन्म और मृत्यु का कोई प्रश्न ही नहीं पैदा होता। मनुष्य का यह अज्ञान जब नष्ट हो जायगा तब वह समझेगा कि जीवन यात्रा में हमें जो यह शरीर मिला है उसकी दो अवस्थायें जन्म और मृत्यु हैं। हमारे जीवन का न तो प्रारंभ है और न अन्त।

अक्टूबर २६

जीवन को खण्ड-खण्ड करके न व्यतीत करो। उसे संपूर्ण इकाई बनाकर व्यतीत करो। ऐसा करने पर इस संपूर्ण जीवन की सरलता तुम्हें ज्ञात होगी। एक खण्ड जीवन अखण्ड जीवन के महत्त्व को कैसे समझ सकता है। किन्तु सपूर्ण जीवन खण्ड जीवन को सरलता से समझ सकता है। पापी व्यक्ति पवित्रता के मूल को नहीं समझ सकता, किन्तु पवित्र आत्मा पाप को सरलता से समझ सकता है। जो बड़ा होना चाहता है उसे छोटे को छोड़ देना चाहिये। किसी भी स्वरूप में एक वृक्ष नहीं दिखलाई पड़ता प्रत्युत वृक्ष में सारे स्वरूप निहित हैं। किसी भी रंग में चमकता हुआ प्रकाश नहीं बंधता प्रत्युत चमकते हुए प्रकाश में सब रंग भरे हुए हैं। यदि मनुष्य अपने अहंभाव के अनेक स्वरूपों को नष्ट कर दे तो पूर्णता के वृक्ष को समझ सकता है।

अक्टूबर २७

यदि तुम मनुष्य जाति में अपने अस्तित्व को मिला दो तो स्वर्गीय शांति यहीं उत्पन्न कर सकते हो। सबके साथ खूब प्रेम करो तो तुम्हारे काम स्थायी होंगे और तुमको स्थायी सुख और शांति मिलेगी।

मनुष्य का जीवन पहले अज्ञान से बड़ा विषम होता है किन्तु पीछे से वही जीवन ज्ञान होने पर अत्यन्त सरल हो जाता है। जब मनुष्य को मालूम हो जाता है कि बिना अपने को समझे संसार को ठीक ठीक नहीं समझा जा सकता तो वह इस ढंग से जीवन व्यतीत करने लगता है कि उसमें सरलता आने लगती है। वह पहले अपने हृदय का विश्लेषण करता है फिर अपना विश्लेषण करता और तत्पश्चात् जगत् का करता है।

अक्टूबर २८

जो काम क्रोध मोह और लोभ को नहीं छोड़ सकता वह न तो कुछ जानता है और न जान सकता है। उसे व्यक्तियों में लाग शिक्षित भले ही कहें किन्तु है वह अज्ञानी ही।

यदि मनुष्य ज्ञान की कुंजी मालूम करना चाहता है तो मालूम कर सकता है। तुम स्वयं पापी नहीं हो और न तुम्हारे जीवन का कोई भाग ही पापमय है। पाप एक तरह के रोग हैं जिनसे तुम प्रेम करते हो। उनसे प्रेम करना छोड़ दो तो वे तुम्हें छोड़ देंगे। उनको निकालकर फेंक दो तो तुमको अपनी असलियत मालूम हो जायगी। तुम स्वयं जान जाओगे कि मैं अजेय हूँ, अमर हूँ और ईश्वर का एक अंश हूँ।

अक्टूबर २९

जिसके चरित्र में ईश्वर की कृपा से सरलता या शुद्धि है उस पुरुष में नम्रता, धैर्य, प्रेम, दया और बुद्धि ये प्रधान गुण पाये जाते हैं। मूर्ख इस बात को नहीं समझता किन्तु बुद्धिमान जानता है। मूर्ख कहा करता है, "कोई मनुष्य न तो बुद्धिमान है और न पूर्ण ज्ञानी हो सकता है। वह जीवन भर चाहे ज्ञानियों के बीच में ही क्यों न रहे परन्तु उन्नति नहीं कर सकता।" नम्रता को कायरता, धैर्य, प्रेम और दया को कमजोरियाँ तथा बुद्धिमानी को वह मूर्खता समझता है। जो पूर्ण ज्ञानी हो चुका है उसी में शुद्ध विवेक मिलता है। अर्धज्ञानी में शुद्ध विवेक नहीं मिल सकता। पूर्ण ज्ञानी होने से पहले मनुष्य को अपना मत किसी के चरित्र के बारे में प्रगट नहीं करना चाहिये।

अक्टूबर ३०

जो समझता है कि मेरे दिल में ईश्वर का निवास है वह सबके दिलों का ज्ञान लेता है और जो अपने विचारों पर अधिकार रखता है वह सब के विचारों को जान लेता है। इसलिये नेक पुरुष को अपनी रक्षा करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह दूसरों को अपने विचारों का बना लेता है। और इस प्रकार सबसे उसकी मैत्री रहती है।

जब मनुष्य नेक और ईश्वर भक्त हो जाता है तो उसकी सारी समस्यायें हल हो जाती हैं। इसलिये नेक और ईश्वर भक्त मनुष्य को 'मायानाशक' कहते हैं। जो व्यक्ति पाप ही नहीं करता उसके सामने कोई समस्या खड़ी ही कैसे हो सकती है ? नेक अशान्त मनुष्य, यदि तुम अपने ही भीतर मग्न, रह कर आत्म चिन्तन करो और उसी विचार में मस्त रहो तो तुम नेक और ईश्वर भक्त हो जाओगे तथा माया के परदे को फाड़कर पूर्णज्ञानी की तरह धैर्यवान, शान्त और यशस्वी हो सकोगे क्योंकि विशुद्ध ईश्वर-भक्ति और वास्तविक सरलता दोनों एक ही वस्तु हैं।

अक्टूबर ३१

मनुष्य की बुद्धिमानी इसी में है कि वह बाहरी चीजों से मन को हटाकर अपने भीतर लगावे। ऐसा कर लेने पर मनुष्य में समानता आ जाएगी चाहे वह अमीर हो अथवा गरीब। न तो अमीर को उसका बल नष्ट कर सकेगा और न गरीब अपनी शांति को भङ्ग कर सकेगा। जिस अमीर ने अपने हृदय की कलुषता को नष्ट कर दिया उसे उसका ऐश्वर्य कलुषित नहीं कर सकता। इसी प्रकार जिस गरीब ने अपनी आत्मा का सम्मान रख लिया उसकी गरीबी उसको अपमानित नहीं कर सकती।

जो बाहरी चीजों या घटनाओं का दास नहीं बनता किन्तु उनको अपना शिक्षक समझता है वह बुद्धिमान है। बुद्धिमान के लिये सारी घटनायें शिक्षक हैं क्योंकि उसकी निगाह कभी बुराई पर नहीं जाती। वह सब चीजों से लाभ उठाकर उनको अपने पैरों के नीचे दबा लेता है। वह अपनी भूलों की जानकारी कर लेता है और उनसे शिक्षा लेता है। उसका विश्वास है कि ईश्वर के विधान में कोई भूल नहीं हो सकती।

नवम्बर १

मनुष्य को बल, बुद्धि, शक्ति और ज्ञान भीतर से मिलता है, बाहर से नहीं ये गुण उसको आज्ञापालन, नम्रता और उत्कट इच्छा द्वारा ही प्राप्त होते हैं। उसे ईश्वरीय नियम का पालन करना और विषयों से घृणा करनी चाहिये। जो दूसरों का आदेश नहीं मानता, उनके अनुभव से लाभ नहीं उठाता, उनकी नसीहत को नहीं मानता, और मनमानी करता है उसका पतन निश्चित है। एक शिक्षक ने अपने शिष्यों से एक बार कहा था, "शिष्यों, तुममें से वे ही उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँच सकते हैं जो अपने ऊपर भरोसा रखते हैं, जो अपना मार्ग स्वय खोजते हैं, जिनको किसी बाहरी सहायता की आवश्यकता नहीं होती, जो 'सत्य' के मार्ग पर चलकर उसी के द्वारा मोक्ष पाने की इच्छा रखते हैं और जो सीखने के लिये हमेशा लालायित रहते हैं।"

नवम्बर २

मनुष्य जब बुद्धि और एकाग्रता से काम लेता है तो उसके विचार जोरदार होते हैं और उसे सब चीजों से लाभ होता है। प्रतीव केन्द्रित विचार ही तो उद्देश्य हैं। एकाग्रता द्वारा मनुष्य की सारी मानसिक शक्तियाँ एक विशेष उद्देश्य की पूर्ति में लग जाती हैं और बीच-बीच में आने वाले विघ्न नष्ट हो जाते हैं। सफलता के मंदिर में उद्देश्य ही मुख्य बुनियादी पत्थर है। यह मनुष्य की शक्तियों को बटोर कर एक स्थान में एकत्र करता है। खाली विचारों, चलायमान मन को लहरों खाली इच्छाओं और कच्चे प्रस्तावों का उद्देश्य की सिद्धि में कोई स्थान नहीं होता। दृढ़ता के साथ जब मनुष्य अपने उद्देश्य की सिद्धि में लग जाता है तो उसे अजेय शक्ति मिलती है और वह छोटी छोटी बातों की परवाह न करके विजय की ओर बढ़ता चला जाता है।

नवम्बर ३

जिसने अपनी आत्मा का साक्षात् कर लिया उसके सामने शंका, चिन्ता और कष्ट का अस्तित्व नहीं रह जाता। दुःख भी उसके समीप नहीं आ सकता। जिसने अपनी आत्मा का साक्षात् कर लिया उसे ईश्वरीय विधान की जानकारी हो जाती है और वह इस नतीजे पर पहुँचता है कि संसार में यदि कोई वस्तु है तो वह प्रेम है। घृणा को मन से हटा कर वह सबके साथ प्रेम का बर्ताव करता है जिससे उसकी रक्षा चारों ओर से स्वयं होती है और उसका हर प्रकार का लाभ अपने आप होता है। वह अपनी सारी शक्तियों को जनता की सेवा में लगा देता है जिससे उसको सुख ही सुख मिलता है।

नवम्बर ४

मारी से मारी, तूफान के सामने पहाड़ माथा नहीं झुकाता प्रत्युत पशु और पक्षियों को शरण देता है। मनुष्य भी उसे पैरों से कुचलते हैं किन्तु उनकी भी वह रक्षा करता है और उन्हें अपनी गोद में विचरण करने देता है। नम्र मनुष्य भी पहाड़ की ही तरह काम करता है। वह विघ्न-बाधाओं से घबड़ाता नहीं और छोटों को शरण देता है। यद्यपि लोग उससे घृणा करते हैं किन्तु वह उनसे प्रेम करता है और उनकी रक्षा करता है।

जिस प्रकार मौन रह कर पहाड़ यशस्वी होता है उसी प्रकार नम्र मनुष्य भी मौन रह कर यशस्वी होता है। पहाड़ की तरह उसकी दया का भी क्षेत्र विस्तृत होता है। पहाड़ का ढाँचा, घाटियों और कोहरों के बीच में रहता है किन्तु उसकी चोटी पर शांति विराजती है। इसी प्रकार नम्र मनुष्य का पंच भौतिक शरीर विघ्न बाधाओं के बीच रहता है किन्तु उसके मन में शांति विराजती है।

नवम्बर ५

नम्र मनुष्य अँधेरे में भी चमकता है और एकान्त में भी उन्नति करता है। नम्र मनुष्य कभी धमण्ड नहीं करता, कभी अपना प्रचार नहीं करता और न सयप्रियता चाहता है। नम्र मनुष्य और भी अधिक नम्र बनने का अभ्यास करता है। कोई उसे देखता है और कोई उसे नहीं देखता है। आध्यात्मिक लोग उसे पहचान सकते हैं। जिनमें आध्यात्मिकता नहीं है और जो संसार के रागरंग में फँसे हुए हैं वे उसे पहचान नहीं सकते। इतिहास भी नम्र मनुष्य की परवाह नहीं करता। वह तो युद्धों और महत्वाकांक्षी पुरुषों का विवरण देता है। नम्र मनुष्य बिल्कुल शान्त और सीधा होता है। इतिहास सांसारिक गुणों का बखान करता है, स्वर्गीय गुणों का नहीं। नम्र मनुष्य यद्यपि एकान्त में रहता है, किन्तु संसार से छिपा नहीं रहता। संसार से अलग रहकर भी वह चमकता रहता है और उससे अपरिचित लोग भी उसका गुणानुवाद सुनकर उसकी प्रशंसा करते हैं।

नवम्बर ६

जो समझता है कि दूसरे मुझे हानि पहुँचा सकते हैं इसलिये उनसे बचने का मुझे भी उपाय करना चाहिये, वह 'नम्रता' और जीवन के तत्व को नहीं समझता। जो यह सोचता है कि अमुक ने मुझे गाली दी, अमुक ने मुझे पीटा, अमुक ने मुझे हराया और अमुक ने मुझे लूट लिया वह कभी घृणा करना छोड़ नहीं सकता क्योंकि घृणा से घृणा नष्ट नहीं की जा सकती। घृणा तो प्रेम से ही नष्ट की जा सकती है। तुम कहते हो कि मेरे पड़ोसी ने मुझे व्यर्थ गाली दी है, मैंने कुछ किया नहीं था। तो इससे क्या? क्या झूठा दोष तुमको हानि पहुँचा सकता है? जो असत्य है वह असत्य ही रहेगा और वह शीघ्र ही समाप्त हो जायगा। 'असत्य' निर्जीव होता है और सिवाय उसके किसी को हानि नहीं पहुँचा सकता जो कहता है कि वह मुझे हानि पहुँचावेगा। यदि तुम्हारा पड़ोसी झूठमूठ तुम्हारी बुराई कर रहा है तो इससे तुम्हारी कोई हानि नहीं होती, किन्तु यदि तुम उसका विरोध करो तो तुम्हें हानि पहुँच सकती है। ऐसा करके तुम अपने जीवन की शक्ति का बलिदान अपने पड़ोसी के झूठपन पर कर रहे हो, इसलिये तुम्हें दुखी होकर हानि उठानी पड़ती है।

नवम्बर ७

उद्देश्य-पूर्ति के लिये बुद्धि की आवश्यकता होती है। उद्देश्य छोटे भी होते हैं और बड़े भी और उनमें उसी प्रकार से बुद्धि भी लगानी पड़ती है। जिसका मस्तिष्क विशाल है उसका उद्देश्य बड़ा होगा, जिसका मस्तिष्क कमजोर है उसका कोई उद्देश्य ही न होगा। चंचल मस्तिष्क वाला इधर उधर बहता फिरता है।

जिन लोगों ने मनुष्य जाति की उन्नति की है उनके उद्देश्य अत्यन्त ऊँचे थे। जिस प्रकार रोमन जाति ने उन्नति की उसी प्रकार उच्च उद्देश्य वाले भी अपना मार्ग निश्चित कर लेते हैं और उसी के पीछे मर मिटते हैं। जाति के बड़े-बड़े नेता बौद्धिक और आध्यात्मिक सुझाव देते हैं और जनता उनके पीछे चलती है।

नवम्बर ८

कमजोर मनुष्य को अधिक सफलता नहीं मिलती, क्योंकि वह अपने अभिप्राय को दूसरों से ठीक तौर पर नहीं कह सकता। झूठे मनुष्य को भी अधिक सफलता नहीं मिलती, क्योंकि वह दूसरों को प्रसन्न करने के लिये अपने निश्चय को छोड़ देता है। चंचल मनुष्य को भी सफलता नहीं मिलती, क्योंकि डाँवाडोल मन से वह अपने उद्देश्य की सिद्धि करना चाहता है।

जिसने अपने उद्देश्य को सिद्ध करने का पक्का इरादा कर लिया है, वही विजयी होता है और उसी को सफलता, बड़प्पन और शक्ति मिलती है। वह न तो किसी की चापलूसी करता है और न दूसरों की टीका टिप्पणियों से घबड़ाता है।

पक्का इरादा करने वाला मनुष्य सैकड़ों को उत्साहित करता है, आपदाओं से घिर जाने पर वह और भी अधिक चाव से काम करता है, भूल, हानि और दुख से वह घबड़ाता नहीं है, और असफलताओं को सफलता की सीढ़ी के डंडे समझता है, क्योंकि उसको अपनी अन्तिम सफलता का पूरा विश्वास रहता है।

नवम्बर ९

संसार के जितने दुखी मनुष्य होते हैं उनमें टालमटोल करने वाला सब से गया बीता होता है, वह सुख की इच्छा से कठिन से कठिन कर्मों को, जिनमें परिश्रम करना पड़ता है, टालता रहता है। इसलिये वह सदा बेचैन और अशान्त रहता है। उसका हृदय उसे कोसता है और वह अपनी हिम्मत तथा स्वाभिमान खो बैठता है। कारलाइल ने ठीक कहा है, "जो अपनी शक्ति भर परिश्रम नहीं करता उसे बेमौत मरने देना चाहिये।" यह एक नैतिक सिद्धान्त भी है कि जो आलस्य से अपने को बचाता है और अपनी शक्ति भर श्रम नहीं करता उसका पहले चरित्र नष्ट होता है और फिर उसका शरीर और उसकी परिस्थितियाँ

नवम्बर ६

जो समझता है कि दूसरे मुझे हानि पहुँचा सकते हैं इसलिये उनसे बचने का मुझे भी उपाय करना चाहिये, वह 'नम्रता' और जीवन के तत्त्व को नहीं समझता। जो यह सोचता है कि अमुक ने मुझे गाली दी, अमुक ने मुझे पीटा, अमुक ने मुझे हराया और अमुक ने मुझे लूट लिया वह कभी घृणा करना छोड़ नहीं सकता क्योंकि घृणा से घृणा नष्ट नहीं हो सकती। घृणा तो प्रेम से ही नष्ट की जा सकती है। तुम कहते हो कि मेरे पड़ोसी ने मुझे व्यर्थ गाली दी है, मैंने कुछ किया नहीं था। तो इससे क्या? क्या झूठा दोष तुमको हानि पहुँचा सकता है? जो असत्य है वह असत्य ही रहेगा और वह शीघ्र ही समाप्त हो जायगा। 'असत्य' निर्जीव होता है और सिवाय उसके किसी को हानि नहीं पहुँचा सकता जो कहता है कि यह मुझे हानि पहुँचावेगा। यदि तुम्हारा पड़ोसी झूठमूठ तुम्हारी बुराई कर रहा है तो इससे तुम्हारी कोई हानि नहीं होती, किन्तु यदि तुम उसका विरोध करो तो तुम्हें हानि पहुँच सकती है। ऐसा करके तुम अपने जीवन की शक्ति का बलिदान अपने पड़ोसी के झूठपन पर कर रहे हो, इसलिये तुम्हें दुखी होकर हानि उठानी पड़ती है।

नवम्बर ७

उद्देश्य-पूर्ति के लिये बुद्धि की आवश्यकता होती है। उद्देश्य छोटे भी होते हैं और बड़े भी और उनमें उसी प्रकार से बुद्धि भी लगानी पड़ती है। जिसका मस्तिष्क विशाल है उसका उद्देश्य बड़ा होगा, जिसका मस्तिष्क कमजोर है उसका कोई उद्देश्य ही न होगा। चंचल मस्तिष्क वाला इधर उधर भटका फिरता है।

जिन लोगों ने मनुष्य जाति की उन्नति की है उनके उद्देश्य अत्यन्त ऊँचे थे। जिस प्रकार रोमन जाति ने उन्नति की उसी प्रकार उच्च उद्देश्य वाले भी अपना मार्ग निश्चित कर लेते हैं और उसी के पीछे मर मिटते हैं। जाति के बड़े-बड़े नेता बौद्धिक और आध्यात्मिक सुझाव देते हैं और जनता उनके पीछे चलती है।

नवम्बर ८

कमजोर मनुष्य को अधिक सफलता नहीं मिलती, क्योंकि वह अपने अभिप्राय को दूसरों से ठीक तौर पर नहीं कह सकता। झूठे मनुष्य को भी अधिक सफलता नहीं मिलती, क्योंकि वह दूसरों को प्रसन्न करने के लिय अपने निश्चय को छोड़ देता है। चचल मनुष्य को भी सफलता नहीं मिलती, क्योंकि डाँवाडोल मन से वह अपने उद्देश्य की सिद्धि करना चाहता है।

जिसने अपने उद्देश्य को सिद्ध करने का पक्का इरादा कर लिया है, वही विजयी होता है और उसी को सफलता, बड़प्पन और शक्ति मिलती है। वह न तो किसी की चापलूसी करता है और न दूसरों की टीका टिप्पणियों से घबराता है।

पक्का इरादा करने वाला मनुष्य सेकड़ों को उत्साहित करता है, आपदाओं से घिर जाने पर वह और भी अधिक चाव से काम करता है, भूल, हानि और दुख से वह घबड़ाता नहीं है, और असफलताओं को सफलता की सीढ़ी के डंडे समझता है, क्योंकि उसको अपनी अन्तिम सफलता का पूरा विश्वास रहता है।

नवम्बर ९

संसार के जितने दुखी मनुष्य होते हैं उनमें टालमटोल करने वाला सब से गया बीता होता है, वह सुख की इच्छा से कठिन से कठिन कर्मों को, जिनमें परिश्रम करना पड़ता है, टालता रहता है। इसलिये वह हमेशा बेचैन और अशान्त रहता है। उसका हृदय उसे कोसता है और वह अपनी हिम्मत तथा स्वाभिमान खो बैठता है। कारलाइल ने ठीक कहा है, "जो अपनी शक्ति भर परिश्रम नहीं करता उसे बमौत मरने देना चाहिये।" यह एक नैतिक सिद्धान्त भी है कि जो कर्तव्य से अपने को बचाता है और अपनी शक्ति भर काम नहीं करता उसका पहले चरित्र नष्ट होता है और फिर उसका शरीर और उसकी परिस्थितियाँ

भी। जीवन और श्रम दोनों पर्यायवाची हैं। जिस समय मनुष्य शारीरिक या मानसिक परिश्रम से जी चुराता है, उसी समय से उसका पतन शुरू हो जाता है।

नवम्बर १०

सांसारिक सफलता से मनुष्य को क्षणिक सुख मिलता है, किन्तु आध्यात्मिक सफलता से स्थायी, निश्चित और गहरा सुख मिलता है। जब अनेक बार कोशिश करने और असफल होने पर अन्त में मनुष्य के चरित्र का स्थायी दोष नष्ट हो जाता है तो उसे अपार सुख मिलता है और भविष्य में न तो उसे ही परेशानी होती है और न संसार के लोगों को ही। जो धर्मात्मा होना चाहता है वह हमेशा अपने चरित्र के सुधारने में जुटा रहता है और पग-पग पर उसे आत्मसंयम का आनन्द चखने को मिलता है। यह आनन्द उससे कभी विलग नहीं होता प्रत्युत उसके आध्यात्मिक स्वभाव का एक अंग बन जाता है।

नवम्बर ११

जब तुम्हारा जी चाहता है तो तुम घूमने निकल जाते हो। जब तुम प्रेम करते हो तो दूसरे तुम्हारी ओर खिंचते हैं। जो भी तुम इस समय हो, अपने विचारों से बने हो और आगे भी जो कुछ तुम होगे अपने विचारों से बनोगे। अपने विचारों के परिणाम से तुम बच नहीं सकते। भलाई इसी में है कि तुम दुःख उठाकर सबक सीखो और विचारों को अपने वश में करके सुखी बनो।

प्रेम का परिणाम हमेशा अच्छा होता है। उससे तुमको शांति मिलेगी। स्थायी और केन्द्रीभूत विचार को प्रेम कहते हैं। यदि तुम्हारे प्रेम का उद्देश्य अच्छा हुआ तो तुमको सुख मिलेगा किन्तु यदि बुरा हुआ तो दुःख मिलेगा।

तुम अपने विचारों को बदल कर अपनी दशा में सुधार कर सकते हो। तुम सबल हो, निर्बल नहीं।

नवम्बर १२

प्रकृति की हर बात और हर क्रिया से बुद्धिमान मनुष्य को शिक्षा मिलती है। कोई ऐसा प्राकृतिक विधान नहीं जो गणित की तरह ठीक ठीक अपना प्रभाव मनुष्य के मन और हृदय में न डालता हो। महात्मा ईसा की कहावतें इस सची बात के उदाहरण हैं और वे प्रकृति की बातों को देख कर ही कही गई हैं। मन में आध्यात्मिक बीज बोने की एक विधि होती है जिसका परिणाम बीजों की अच्छाई और बुराई पर निर्भर है। विचार, वचन और कर्म बीज हैं जो बोये जाते हैं। प्रकृति के अचल सिद्धांतों के अनुसार हमें उनके फल भी मिलते हैं।

जो मनुष्य घृणा के विचार मन में बोता है उससे लोग घृणा करते हैं। जो मनुष्य प्रेम के विचार मन में बोता है उससे लोग प्रेम करते हैं।

नवम्बर १३

किसान भूमि में बीज बोता है और उन्हें प्रकृति के भरोसे छोड़ देता है। यदि वह बीज को अपने ही पास रक्खे रहे तो वे खराब हो जायगे और उनसे पैदा होने वाली फसल से भी हाथ धोने पड़ेंगे। बीज जब बोये जाते हैं तो वे खप तो जाते हैं किन्तु उनसे कहीं अधिक उनकी संख्या उत्पन्न हो जाती है। उसी प्रकार जीवन में भी हम देकर पाते हैं और त्याग करके धनी होते हैं। विद्वान मनुष्य यदि अपनी विद्या दूसरों को यह समझ कर न दे कि मेरी विद्या पाने का कोई पात्र ही नहीं है तो या तो उसमें विद्या है ही नहीं, वह केवल अपनी विद्या का बहाना करता है और यदि है तो उससे वह यदि वंचित नहीं हो चुका है तो अब हो जायगा। किसी चीज को जमा करने से उसका विनाश होता है। किसी चीज का केवल अपने लिये रखना न रखने के बराबर है।

नवम्बर १४

यदि मनुष्य दुखी हो, विचलित हो, कष्ट में हो अथवा अशांत हो
तो उसे अपने मन में सोचना चाहिये कि मैं अभी तक कैसे मानसिक बीज
बोता रहा हूँ और दूसरों के प्रति मेरा बर्ताव कैसा रहा है। मैंने दुःख,
निन्दा, और कष्ट के कौन-कौन से बीज बोये हैं जिनका दुःख अब मैं
भुगत रहा हूँ। जब ये मालूम हो जाय तब से 'सत्य' के बीज बोकर
'प्रेम' के बीज उसे बोना चाहिये।

उसे किसान से बुद्धिमानी की शिक्षा लेनी चाहिये और दया, नम्रता
तथा प्रेम के बीज बोना चाहिये।

नवम्बर १५

हम ऐसे युग में पहुँच गये हैं जब लोगों ने झूठे देवताओं यानी प्रभ
मानवी स्वार्थ और मानवी कुल के देवताओं की पूजा करना छोड़ दिया
है। अब केवल 'सत्य' के देवता का प्रचार होने लगा है और उनके
प्रकाश के सामने स्वार्थ एवं कुल के देवता अपनी अपनी कुर्सी छोड़कर
भाग रहे हैं।

लोगों का ऐसे देवता से अब विश्वास उठ गया है जो स्वेच्छाचारी
और अवैध है तथा जो अपनी मौज की इच्छा-पूर्ति के लिये ईश्वरीय
विधान को भ्रष्ट कर रहा है। उनके हृदय में अब सच्चे देवता का
प्रकाश फैलने लगा है। वे अपने स्वार्थ और आनन्द को छोड़कर ज्ञान
शुद्धि और मोक्ष के लिये ईश्वर पर विश्वास करने लगे हैं।

नवम्बर १६

ईश्वर की शरण में आकर मनुष्यों की शङ्कायें दूर हो जाती हैं और वे फिर न तो घबड़ाते हैं और न किसी बात से निराश होते हैं। क्योंकि उनको मालूम हो जाता है कि ईश्वर जो कुछ करता है वह ठीक करता है, जिन नियमों से वह क्रमबद्ध संसार को चला रहा है वे सब ठीक हैं और यदि भूल-चूक होती है तो वह हमसे ही होती है। उन्हें यह भी मालूम हो जाता है कि हमारा उद्धार हमारे ही हाथों में है, हमारे प्रयत्नों में है और हमारे ही अच्छे कर्मों में है। यह समझ कर वे फिर सुस्त नहीं बैठे रहते, तुरन्त ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करके अपने सांसारिक बन्धन को तोड़कर मोक्ष के अधिकारी हो जाते हैं।

नवम्बर १७

ठीक-ठीक सिखना, ठीक-ठीक सोचना, ठीक-ठीक बोलना और ठीक ठीक काम करना, ये 'सत्य' के बच्चे हैं जो इस संसार में अपना अपना काम कर रहे हैं। इन्हीं की बदौलत हम में बहुत से पैगम्बर भी मौजूद हैं जो जनता में अपना प्रभाव डाला करते हैं। दुनिया के लोग अब आन्तरिक आनंद का अनुभव करने लगे हैं और इसलिये अपने जीवन को इस सुखी बनाने की उत्सुकता और आशा उनके हृदय में बार बार उठती है। विचित्रता तो यह है कि वे लोग भी अपने जीवन को निर्दोष, और उच्च बनाने की उत्सुकता का अनुभव कर रहे हैं जो अध्यात्म विचारक पुस्तकों को न कभी पढ़ते हैं और न सुनते हैं।

ईश्वरीय नियम मनुष्य के जीवन में सदा अपना काम किया करता है। मनुष्य ने उस नियम का अब समझ लिया है, इसलिये उसने अब त्याग के सच्चे मार्ग पर चलकर ईश्वर के घर की खोज कर ली है।

नवम्बर १८

हृदय शुद्ध हो, मन शुद्ध हो, सब के लिये हृदय में प्रेम हो और अपनापन मिट जाय, यही ईश्वरीय नियम है। प्रेम चाहता है कि मुझे सब अपनावें किन्तु उसे सब लोग अपनाते नहीं हैं। प्रेम सब की बपौती है, इस पर किसी का भी अधिकार हो सकता है। यदि तुम चाहो तो आज से ही उसे अपना सकते हो।

क्या ही सुन्दर 'सत्य' होता है, जिसे अपनी बपौती समझ कर लोग स्वीकार करते हैं और आसमान की बादशाहत में प्रवेश करते हैं!

कैसा निकृष्ट असत्य होता है जिसे अपने स्वार्थ के लिये लोग अपनाते हैं और दुख उठाते हैं।

यदि तुम दिन रात अपने ही स्वार्थ में चिपटे रहते हो तो सत्य का प्रकाश और तुम्हारी शुभ भावनायें नष्ट हो जायँगी और तुम्हें महान दुःख होगा। याद रक्खो, "जैसा मनुष्य बोता है वैसा ही काटता है।"

नवम्बर १९

यद्यपि हमें धर्म भी दिखलायी पड़ता है और अधर्म भी, परन्तु जगत में कहीं भी अधर्म नहीं है। जिस भावना से मनुष्य जगत को देखता है और उसका अन्दाजा लगाता है उसी के अनुसार उसको धर्म अथवा अधर्म दिखलाई पड़ता है। जिस मनुष्य के हृदय में विकार भरे हुए हैं उसे हर जगह अधर्म ही दिखलाई पड़ता है। जिस मनुष्य ने अपने हृदय से विकार निकाल दिये हैं, उसे जीवन के प्रत्येक भाग में धर्म ही धर्म दिखलाई पड़ता है।

अधर्म एक स्वप्न है जो दूषित हृदय वाले पुरुषों को सत्य मालूम होता है। जिन्होंने अपना और पराया भाव छोड़ दिया है और जिनके हृदय शुद्ध हो गये हैं उन्हें धर्म साफ-साफ दिखाई देता है जो कि एक सच्ची वस्तु है।

नवम्बर २०

जो व्यक्ति कहता है कि मेरा तिरस्कार किया गया, मुझे हानि पहुँचायी गई, मेरा अपमान किया गया और मेरे साथ दुर्व्यवहार किया गया उसको सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता। अहंभाव के कारण वह 'सत्य' के सिद्धान्तों से अनभिज्ञ रहता है और हमेशा पापाचारों में फँसे रहने के कारण दुखी रहता है।

जो विषयों में फँसे हुए हैं उनके प्रति बड़े जोर की प्रतिक्रियाएँ होती रहती हैं। इसलिए उनका जीवन अत्यन्त कष्टमय होता है। क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, काम का परिणाम होता है और कारण से कार्य होता है। इन सबके ऊपर ईश्वरीय नियम गणित की यथार्थता के साथ अपना काम जोरों से कर रहा है और बड़ी बारीकी के साथ कारण और कार्य की देख-भाल करके उन्हें ठीक करता रहता है।

नवम्बर २१

काम और क्रोध में पड़ कर लोग बहुत बुरी तरह से कष्ट झेल रहे हैं। उनसे निकलने का उन्हें कोई मार्ग ही नहीं सूझता। याद रक्खो, घृणा से घृणा पैदा होती है, क्रोध से क्रोध पैदा होता है और झगड़े से झगड़ा होता है। जो मनुष्य किसी को मारता है वह स्वयं मारा जाता है और जो चोरी करता है, वह स्वयं लूटा जाता है। दूसरे को कलंकित करने वाला स्वयं कलंकित किया जाता है, जो दूसरों की निन्दा करता है वह स्वयं निन्दित होता है और जो दूसरों का अपमान करता है उसे स्वयं अपमानित होना पड़ता है।

इस प्रकार हत्यारा अपने ही हथियार से अपने को मारता है। अन्यायी का कोई रक्षक नहीं होता। झूठ बोलने वाले को अच्छी निगाह से कोई नहीं देखता। लुटेरे की बड़ी दुर्गति होती है।

नवम्बर २२

काम क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या और अहंकार को छोड़कर सदाचारी मनुष्य शांति प्राप्त करता है और फिर भगवत रूप हो जाता है। जिस प्रकार एक मनुष्य पहाड़ के ऊपर चढ़कर नीचे होने वाले झगड़े बखेड़ों को उपहास की दृष्टि से देखता है उसी प्रकार वह षट् विकारों को अपने वश में करके उनकी ताकत पर विचार करता और फिर उनको अपने पास नहीं आने देता। उसके लिए अधम जैसी कोई चीज नहीं रह जाती। एक ओर वह अज्ञान और दुख को देखता है और दूसरी ओर उसे प्रकाश और सुख दिखलाई पड़ता है। वह केवल सुखी और गुलामों से ही सहानुभूति नहीं करता प्रत्युत धोखेबाज और अत्याचारी भी उसकी सहानुभूति के प्रबल इच्छुक रहते हैं। वास्तव में सारा संसार उसकी सहानुभूति चाहता है।

नवम्बर २३

जो अपनी विचार-शक्ति रूपी मशाल लेकर 'सत्य' की खोज करेंगे वे न तो कभी अँधेरे में भटकेंगे और न उनको कभी अशांति ही होगी।

महात्मा ईसा ने कहा है, "आओ हम लोग विचार-शक्ति से काम लें; यदि हम ऐसा करेंगे तो हमारे पाप चाहे जितने लाल हों वे बरफ की तरह सफेद हो जायेंगे।"

हमारे बहुत से भाई-बहिन अपनी विचार-शक्ति से काम नहीं लेते, इसी कारण उन्हें जीवन भर बेहद दुःख उठाना पड़ता है और उसी में वे मर मिटते हैं। वे एक ऐसे भ्रम में पड़े रहते हैं जिसे विचार-शक्ति की एक धूमिल चिनगारी दूर कर सकती है। अतएव जो पाप और सुख की पोशाक के स्थान में सदाचार, पुण्य और सुख की पोशाक पहनना चाहते हैं उन्हें बहुत ही सचाई के साथ अपनी विचार-शक्ति का पूर्ण उपयोग करना चाहिये।

नवम्बर २४

संसार में चिरस्थायी सफलता प्राप्त करने के लिए मनुष्य पहले अपने मन को सुव्यवस्थित करे। गणित में जिस प्रकार दो और दो चार होते हैं उसी प्रकार सुव्यवस्थित मन और सफलता का हिसाब किताब समझना चाहिए। सब कामों के परिणाम हृदय और मन से ही निकला करते हैं। यदि मनुष्य अपने हृदय और मन को अपने वश में नहीं रख सकता तो जीवन के क्रिया कलापों में उसे कोई स्थायी सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। यदि मन और हृदय उसके अधिकार में हों तो संसार में वह उत्तरोत्तर सबल, उपयोगी और विजयी होता जाता है। अभी तक उसका जीवन निरर्थक होता रहा है किन्तु अब उसका जीवन सार्थक हो जाता है और वह अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है। वह अब सुव्यवस्थित मन के भीतर आनन्द से सुरक्षित बैठा रहता है।

नवम्बर २५

जिन इंद्रियों ने मनुष्य को अपने वश में कर रक्खा था उनको वह अपने वश में करके आत्मानुशासन का पाठ प्रारम्भ करता है। वह प्रलोभनों का दमन करता है और अपने स्वाभाविक स्वार्थ-साधन की भावनाओं को रोकता है जिन्होंने उसके ऊपर अभी तक अपना अधिकार जमा रक्खा था। वह उदर-पूर्ति के लिये थोड़ा सा वही भोजन करता है जिससे उसके शरीर को शक्ति मिलती है। वह पेट को इतना ठूँसकर नहीं भर लेता जिससे उसका मन और उसकी इंद्रियां विकृत हो जायँ। वह तो जीवित रहने के लिये खाता है, खाने के लिये जीवित नहीं रहता। वह बहुत समझबूझ कर मुँह से बात निकालता है और काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद और ईर्ष्या को अपने वश में रखता है।

नवम्बर २६

मनुष्य में जैसे-जैसे संयम आता है, वैसे-वैसे वह ईश्वर के समीप पहुँचता है और षट् विकार उसे अधिक तंग नहीं करते। उसका जीवन धार्मिक, शान्त, साहसी और दृढ़ होता जाता है। मनोविकारों का रोकना आत्मानुशासन की प्रथम सीढ़ी है। रोकने के बाद उन्हें शुद्ध करना चाहिए। शुद्ध हो जाने पर वे मनुष्य के हृदय और मन से बिल्कुल अलग रहते हैं। विकारों को रोकने से ही काम नहीं चलता प्रत्युत प्रयत्न इस बात का होना चाहिये कि वे फिर अपना सिर न उठावें। विकारों को रोकने से ही मनुष्य को शान्ति नहीं मिल सकती। शान्ति प्राप्त करने के लिये मनुष्य को विकारों के विषैले दाँत तोड़ देना चाहिये।

नवम्बर २७

चरित्र को पवित्र करने से ही हमारा लाभ होता है और हमें बल तथा अधिकार मिलता है। हमारे विकार वास्तव में नष्ट नहीं होते। वे बदले जा सकते हैं और उनसे फिर हमको मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्ति मिलने लगती है। पवित्र जीवन से हम में शक्ति का संचय होता है। अपवित्र जीवन से हमारी शक्ति का क्षय होता है। अपवित्र पुरुष की अपेक्षा पवित्र पुरुषों में अधिक योग्यता होती है। इस लिये उसको अपने उद्देश्यों में कहीं अधिक सफलता मिलती है। जहाँ अपवित्र पुरुष की हार होती है वहाँ पवित्र पुरुष की विजय होती है, क्योंकि वह निश्चिन्त होकर अपनी शक्ति को शान्ति के साथ काम में लगाता है।

नवम्बर २८

जैसे-जैसे मनुष्य का चरित्र शुद्ध होता जाता है वैसे-वैसे उसके पाप ढीले पड़ते जाते हैं, इसलिये वह उनकी ओर से मुँह फेर लेता है। वे पाप, यदि वह स्वयं चाहें तो, फिर बढ़ सकते हैं। आत्मानुशासन द्वारा जब वह अपने सच्चे ईश्वरीय स्वरूप को समझ लेता है तब प्रतिभा, धैर्य स्वतंत्रता, दया और प्रेम आदि ईश्वरीय गुण उसके चरित्र में साफ साफ दिखलाई पड़ने लगते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य चाहे तो जीवन की चंचलताओं को छोड़कर स्थायी शान्ति के साथ जीवन व्यतीत करता हुआ अमर हो सकता है।

नवम्बर २९

जब मनुष्य किसी बात की प्रतिज्ञा करता है तो उसका यह अर्थ है कि वह अपनी वर्तमान अवस्था से संतुष्ट नहीं है। वह अपने वर्तमान विचारों को बदलना चाहता है। यदि वह ऐसा कर सका तो अपने उद्देश्य में उसको सफलता मिलती है।

महात्मा लोग अपने ऊपर विजय पाने की प्रतिज्ञा करते हैं। उन लोगों ने जो शानदार काम अपने जीवन में करके दिखलाया है वे उसी दृढ़ प्रतिज्ञा के कारण कर सके हैं।

नवम्बर ३०

आधे दिल से और असमय की की हुई प्रतिज्ञा कोई प्रतिज्ञा नहीं है। वह जरा सी कठिनाई के बाद ही टूट जाती है।

मनुष्य को बहुत सोच विचार कर प्रतिज्ञा करनी चाहिये। उसे बहुत ही बारीकी के साथ पहले अपनी परिस्थिति और आनेवाली कठिनाइयों पर विचार करना चाहिये, उसके बाद प्रतिज्ञा करनी चाहिये। प्रतिज्ञा करके तब उसे किसी भी आपत्ति का सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिये। उसे इस बात का विश्वास कर लेना चाहिये कि मैं अपनी प्रतिज्ञा को तौल चुका हूँ, उस पर खूब सोच विचार कर चुका हूँ और उसमें मुझे अब कुछ भी संदेह नहीं है। इस प्रकार की परिपक्व प्रतिज्ञा कभी टूटेगी भी नहीं और उसकी सहायता से समय आने पर मनुष्य के उद्देश्य की पूर्ति ठीक तरह से हो सकेगी

दिसम्बर १

सन्तोष एक गुण है और उसका आध्यात्मिक मूल्य उस समय और भी अधिक बढ़ जाता है जब मन और हृदय को सब कामों में ईश्वरीय पथ प्रदर्शन मिलता है।

सन्तोष का अर्थ यह नहीं है कि हम पुरुषार्थ न करें। सन्तोष का अर्थ तो ऐसा परिश्रम करना है जिसमें चिन्ता न हो। सन्तोष का अर्थ यह नहीं है कि हम अपने पापों और अपने अज्ञान से सन्तुष्ट रहें। सन्तोष का अर्थ यह है कि हम प्रसन्नता पूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करें और प्रत्येक कार्य को सफल बनावें।

ऐसा कहा जा सकता है कि पाप और ऋण में निमग्न एक मनुष्य अपना अधम जीवन सन्तोष के साथ बिता रहा है किन्तु वास्तव में वह अपने धर्म और अपने साथियों के प्रति अपने न्यायोचित कर्तव्य का पालन नहीं कर रहा है। उसमें सन्तोष की भावना नहीं है। परिश्रम के साथ अपने काम को करने के अनन्तर जो शुद्ध आनन्द मिलता है उसका अनुभव पाप और ऋण में डूबा हुआ व्यक्ति नहीं कर सकता।

दिसम्बर २

तीन चीजें ऐसी हैं जिनसे मनुष्य को सन्तुष्ट होना चाहिये (१) रोज होने वाली घटनाओं से; (२) अपने मित्रों और धन से तथा (३) अपने शुद्ध विचारों से। रोज होने वाली घटनाओं से सन्तुष्ट होने पर उसे शोक नहीं होता। अपने मित्रों और धन से सन्तुष्ट रहने पर वह अपने को चिन्ता और दरिद्रता से बचाता है और अपने शुद्ध विचारों से सन्तुष्ट होने पर उसे न तो दुख होता है और न गन्दगी में वह पैर रखता है।

तीन चीजें ऐसी भी हैं जिनसे मनुष्य को सन्तुष्ट नहीं होना चाहिये। (१) अपने ज्ञान से (२) अपने चरित्र से और (३) अपनी आध्यात्मिक अवस्था से। ज्ञान से सन्तुष्ट न होकर वह अपना ज्ञान उत्तरोत्तर चढ़ाता जायगा, अपने चरित्र से सन्तुष्ट न होकर वह हमेशा अपना बल और गुण बढ़ाता जायगा और अपनी आध्यात्मिक अवस्था से सन्तुष्ट न होकर प्रतिदिन उसका विवेक और सुख बढ़ता जायगा।

दिसम्बर ३

संगठन रूप में भ्रातृभाव की स्थापना उस समय तक नहीं हो सकती जब तक उन स्त्रियों और पुरुषों में स्वार्थ की भावना मौजूद है जो भ्रातृभाव का संगठन करना चाहते हैं। भ्रातृभाव संगठन की स्थापना आप भले ही करलें किन्तु स्वार्थ की भावना रहने से उसका काम आगे नहीं बढ़ सकता। संगठित भ्रातृभाव अधिक अंशों में सफल नहीं हुआ है किन्तु व्यक्तिगत रूप से मनुष्य भ्रातृभाव का आनन्द ले सकता है। इस काम के लिये आवश्यक है कि वह बुद्धिमानी से काम ले, पवित्र बने, संसार से प्रेम करे, अपने मन से भिन्नता की भावना निकाल दे और उन दैवी गुणों को अपने चरित्र में वर्ते जिन के बिना भ्रातृभाव केवल एक ढकोसला है।

दिसम्बर ४

नम्रता से शान्ति, त्याग से धैर्य और विवेक, प्रेम से आनन्द और भ्रातृभाव, और दया से विनय तथा क्षमा की प्राप्ति होती है।

जिसमें नम्रता, त्याग प्रेम और दया ये चार गुण होते हैं उसे ईश्वरीय प्रकाश मिलता है। उसे मालूम रहता है कि किस काम का कौन सा फल होगा, इसलिये वह गलत रास्ते पर नहीं जाता। हृदय से ईर्ष्या और द्वेष निकल जाने से वह सब को अपना भाई समझता है। वह उन लोगों को भी अपना भाई समझता है जो विषय और भोगों में फंसे हुए हैं। उसकी विचारधारा केवल एक होती है और वह है सब से प्रेम रखना।

दिसम्बर ५

भ्रातृभाव का प्रचार करने के उपाय और नियम अनेक हैं किन्तु स्वयं भ्रातृभाव अविभक्त और अपरिवर्तनशील है। वह अभिमान और ईर्ष्या को छोड़ने और नेक काम करने तथा शान्ति की आदत डालने से प्राप्त होता है। भ्रातृभाव एक आदत है, कोरा सिद्धान्त नहीं। त्याग और प्रेम उसके दो संरक्षक हैं और शान्ति में उसका निवास स्थान है।

जहां दो में भिन्नता होती है वहीं निर्जीवन होता है और वहीं शत्रुता होती है। आप ही बताइये वहाँ भ्रातृभाव किस प्रकार रह सकता है?

जहाँ दो व्यक्तियों में एक दूसरे से सहानुभूति है, जहाँ वे परस्पर प्रेम करते हैं और जहाँ दोनों एक दूसरे की सेवा करते हैं, लड़ते-भिड़ते नहीं वहाँ सत्य और प्रेम का निवास स्थान है और वहीं 'भ्रातृभाव' है।

दिसम्बर ६

जो हमसे अधिक शुद्ध और ज्ञानी हैं उन्हें हमारी सहानुभूति की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वे सहानुभूति से परे होते हैं। हां, हमें उनका आदर अवश्य करना चाहिये और उनके उच्च जीवन को देख कर हमें भी अपना जीवन उच्च और विशाल बनाना चाहिये। हमसे जिसका चारित्र उच्च है उसे बुरा भला कहने के पहले हमें समझना चाहिये कि क्या हम उस मनुष्य से श्रेष्ठ हैं। यदि हैं तो हमें उसके प्रति सहानुभूति करनी चाहिये और यदि नहीं हैं तो उसे हमें श्रद्धा की दृष्टि से देखना चाहिये।

दिसम्बर ७

जो आघात दूसरों ने हमें पहुँचाया था उन्हें अपने मन से निकाल देना बुद्धिमानी है, किन्तु बुद्धिमानी प्राप्त करने का इससे भी अधिक उच्च और उत्कृष्ट मार्ग है। वह है अपने हृदय और मन को शुद्ध करना जिससे कि हम आघातों को केवल निकाल ही न दें बल्कि उन्हें स्मरण तक न करें। जिस में अहंकार और भेद-भाव होता है उसी हृदय में दूसरों के काम और वर्ताव से आघात पहुँचता है, किन्तु जिसके हृदय से अहंकार और भेदभाव निकल गया है वह कभी सोच ही नहीं सकता कि अमुक ने मेरी हानि की है और और अमुक ने मुझे आघाता पहुँचाया है।

जब मनुष्य का हृदय शुद्ध हो जाता है तो वह चीजों की असलियत को समझता है और असलियत समझने से ईर्ष्या और दुख के स्थान में उसे उदारता और सुख मिलता है। अन्त में उसका जीवन शान्तिपूर्ण हो जाता है।

दिसम्बर ८

जिसके हृदय में क्रोध की लहरें उठा करती हैं उसको न तो शान्ति मिल सकती है और न वह 'सत्य' को समझ सकता है। जो अपने हृदय से क्रोध को निकाल देता है उसे शान्ति मिलती है और वह 'सत्य' को भी समझ लेता है।

जो दोषों को निकालकर अपना हृदय शुद्ध कर लेता है वह कभी क्रोध नहीं करता और न दूसरों से झगड़ा करता है। हृदय में ईश्वरीय प्रकाश होने के कारण वह क्रोध की असलियत को समझता है। उसे मालूम हो जाता है कि अपनी मूर्खता ही से मैं क्रोध कर रहा हूँ। ईश्वरीय ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ उसके लिये पाप करना असम्भव हो जाता है। जो पाप करता है वह अपने को नहीं समझता और जो अपने को समझता है वह पाप नहीं करता।

चरित्रवान पुरुष अपने ऊपर अत्याचार करने वाले पर भी दया का भाव रखता है। कभी-कभी कुछ लोग उसके प्रति गलत धारणा बना लेते हैं किन्तु वह उनकी परवाह नहीं करता। उसका हृदय दया और प्रेम के कारण हमेशा शान्त रहता है।

दिसम्बर ६

जिन विचारों और जिन कामों से मनुष्य को दुखी होना पड़ता है उनकी जड़ में स्वार्थ ही तो होता है। जिन विचारों और जिन कामों से मनुष्य को सुख मिलता है उनकी जड़ में 'सत्य' होता है। ध्यान और अभ्यास से मन सत्य की ओर घुमाया जा सकता है। मौन ध्यान से सदाचार की तैयारी की जाती है और अभ्यास से उसको कार्यरूप में परिणत करके दिखाया जाता है।

'सत्य' पुस्तकें पढ़ने से नहीं मिलता। वह बहस मुबाहिसे से भी नहीं प्राप्त होता। वह तो केवल अभ्यास से मिलता है।

दिसम्बर १०

जो सत्य को पाना चाहता है उसे उसका अभ्यास करना चाहिये। सबसे पहले संयम का पाठ पढ़ो। इसके बाद सदाचार के दूसरे पाठों को सीखते जाओ जब तक कि तुम पूरे सदाचारी न बन जाओ। प्रायः लोगों की यही धारणा होती है कि हमने जो नाना प्रकार की पुस्तकें पढ़ करके अपना एक मत बनाया है वही 'सत्य' है और फिर चारों ओर 'सत्य' के नाम पर वे उसी का ढिंढोरा पीटते फिरते हैं। वे अपने ही निश्चित किये हुये मत को 'सत्य' मानते हैं, दूसरों के निश्चित मत को नहीं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सांसारिक मामलों में वे बहुत ही पटु होते हैं क्योंकि अपने स्वार्थ के लिये वे उनमें फँसे रहते हैं किन्तु आध्यात्मिक मामलों में उनकी बुद्धि काम नहीं देती क्योंकि वे बहुत सी बातें 'सत्य' के नाम से पढ़ते तो हैं किन्तु उनको चरितार्थ नहीं करते।

दिसम्बर ११

प्रेम स्वभावतः किसी धर्म विशेष अथवा सम्प्रदाय की बपौती नहीं है। जो कहते हैं कि केवल हमारे ही धर्म में प्रेम है, दूसरे में नहीं, वे प्रेम को समझते ही नहीं। प्रेम मनुष्य का जीवन है और वह नाना रूपों में अनेक धर्मों में पाया जाता है। वह किसी एक विशेष धर्म में बँधा हुआ नहीं है। प्रेम एक परदार दूत है जिसे कोई सम्प्रदाय पकड़कर बन्द नहीं कर सकता। प्रेम का मुकाबिला न तो किसी बड़े महात्मा का उपदेश और न कोई दर्शनशास्त्र ही कर सकता है। प्रेम मनुष्यमात्र पर किया जा सकता है, चाहे कोई ईमानदार हो अथवा बेईमान, न्यायी हो या अन्यायी, छूत हो वा अछूत। जो प्राणिमात्र पर प्रेम करता है उसी का धर्म सच्चा है और वही दूरदर्शी तथा बुद्धिमान है।

१२ दिसम्बर

वास्तव में हमारे अमर जीवन का तत्व प्रेम ही है। झगड़े-बखेड़े, निन्दा और बुरी भावनाओं के छोड़ने से हमें प्रेम मिलता है। यदि हम इन अवगुणों को दूर नहीं कर सकते तो हमें प्रेम का ढोंग नहीं करना चाहिये। हमें साफ-साफ मान लेना चाहिये कि हम प्रेम नहीं करते हैं। जब हम में इतनी ईमान्दारी आ जायगी तो हम प्रेम के अधिकारी हो जायंगे किन्तु यदि हम प्रेम का निरा ढोंग रचते रहेंगे तो उसके अधिकारी नहीं हो सकेंगे। यदि हम प्रेम पैदा करना चाहते हैं तो अपने साथियों के प्रति बुरी भावनाओं को हमें दूर करना होगा, उनके साथ हमें उदारता का वर्ताव करना होगा और उनके कामों की आलोचना भी हमें उदारता से करनी होगी। यदि उनके विचार भिन्न हैं तो हमें उनको उनके दोषों के लिये क्षमा करना होगा। इस प्रकार हम उनको वह प्यार दे सकेंगे जिसको सन्त पाल ने एक स्थायी वस्तु माना है।

१३ दिसम्बर

मनुष्य के दुष्कर्मों के कारण ही संसार में दुख है। यदि मनुष्य सत्कर्म करने लगें तो संसार में सुख ही सुख हो जाय। दुष्कर्मों से हमें दुख मिलता है और सत्कर्मों से सुख।

मनुष्य को कभी न सोचना चाहिये कि मुझे दूसरों के दुष्कर्मों से दुख मिल रहा है। इससे उनसे शत्रुता हो जाती है और वे उससे घृणा करने लगते हैं। उसे इस बात को अवश्य मान लेना चाहिये कि मेरे दुख का कारण मेरे भीतर है और जब तक मैं उस कारण को दूर न करूँगा तब तक मुझे सुख नहीं मिल सकेगा। उसे अपने दुख का दोष कभी दूसरों के सिर न मढ़ना चाहिये। उसे अपने दुख को दूर करने और सुख को पाने के लिये अपने हृदय के विकारों को ही दूर करना चाहिये और हमेशा 'सत्य' के मार्ग पर चलना चाहिये।

दिसम्बर १४

सत्य के सिद्धान्त खोज और अभ्यास के बाद स्थिर किये गये हैं और उनकी व्यवस्था इस प्रकार की गई है कि उनके अनुसार चलकर साधारण से भी साधारण मनुष्य सरलता के साथ अपना जीवन ऊँचा बना सकता है। उनके अनुयायी बनकर न मालूम कितने स्त्री पुरुषों ने अपने जीवन के स्तर को ऊँचा किया है। यह एक अत्यन्त प्राचीन मार्ग है जिस पर चलकर प्रत्येक सन्त, प्रत्येक बुद्ध और प्रत्येक ईसा ने जीवन की दिव्य पूर्णता प्राप्त की है और भविष्य में भी न मालूम कितने मनुष्य इस मार्ग पर चलकर जीवन की दिव्य पूर्णता प्राप्त करेंगे। किसी भी धर्म का कोई मनुष्य क्यों न हो, यदि वह अपने पापों का प्रक्षालन करके हृदय को शुद्ध करता है तो वह इसी मार्ग पर चल रहा है। लोगों की धारणायें, उनकी ब्रह्मविद्यायें और धर्म बदल सकते हैं किन्तु पाप नहीं बदल सकता, पापों पर विजय प्राप्त करना नहीं बदल सकता और 'सत्य' भी नहीं बदल सकता।

दिसम्बर १५

हमने अनेक भव्य सन्त महात्माओं की सेवा करके उनसे उपदेश ग्रहण किये हैं। हमने भारत और चीन के महात्माओं के उपदेशों को पढ़ा है। हमने महात्मा ईसा के उपदेशों का भी अध्ययन किया है। किन्तु प्रसन्नता की बात यह है कि इन सब महात्माओं के उपदेशों में हमने एक ही प्रकार का 'सत्य' और एक ही प्रकार का ज्ञान पाया है। ये महात्मा इतने बुद्धिमान और पहुँचे हुये हैं कि उन पर हमारी बड़ी श्रद्धा होती है और हम उनके उपदेशों को बार-बार पढ़ना और सुनना चाहते हैं। जिन जिन देशों में वे उत्पन्न हुये उन-उन देशों के निवासियों ने उनसे प्रभावित होकर उनका अधिक से अधिक सम्मान किया और संसार के अन्य भागों के लाखों लोग आज भी उनका सम्मान करते हैं।

दिसम्बर १६

सांसारिक और धार्मिक जीवन में अन्तर है। जो काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद और ईर्ष्या में लिप्त है और उन्हें छोड़ना नहीं चाहता वह सांसारिक है और जो काम, क्रोध मोह, लोभ मद और ईर्ष्या को रोक कर अपने को इनसे अलग रखता है वह धार्मिक है।

धर्मात्मा पुरुष अपने धर्म के अनुसार बुरी इच्छाओं और विषयों को छोड़ देता है। वह मनुष्यों और संसार की वस्तुओं को उनके असली रूप में देखता है और इसीलिये वह बड़ी बुद्धिमानी से अपना काम करता है। वह दूसरों पर अपना दबाव नहीं डालता और न उनसे अपने को श्रेष्ठ समझता है। वह अपने को उनके समान समझता है और उन्हीं की दृष्टि से देखता है।

दिसम्बर १७

जीवन में एकाएक ऐसी बातें हो जाती हैं जिनका हमें पता नहीं और कल क्या होगा इसे भी हम नहीं जानते। आज जो हम हैं वही हमारी दशा, भगवान जाने, कल रहेगी या नहीं। इन सब बातों को देखते हुए यह आवश्यक है कि हम एक ऐसा मार्ग खोज निकालें जिसके अनुसार चलकर हमें जीवन में सुख और शान्ति मिले। 'ईश्वर हर बात में न्याय करता है', इस सिद्धान्त को जानना ही वह मार्ग है। संसार को इस मार्ग की जानकारी धीरे-धीरे अवश्य होगी। मानवीय न्याय ईश्वरीय न्याय से भिन्न है। मानवीय न्याय मनुष्य की अपनी-अपनी बुद्धि और विचारों पर निर्भर है, इसलिये उसमें परिवर्तन है। किन्तु ईश्वरीय न्याय अचल है जिसके अनुसार संसार का हमेशा काम होता है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। ईश्वरीय न्याय गणित की तरह अनिवार्यरूप से काम करता है। जैसे दो-दो मिलकर चार होते हैं वैसे ही मनुष्यों के एक ही प्रकार के विचारों और कामों के लिये ईश्वरीय न्याय सब को समान फल देता है।

दिसम्बर १८

एक प्रकार की परिस्थिति में जो विचार मन में आते हैं या जो काम किये जाते हैं उनके फल एक ही प्रकार के होते हैं। इस आवश्यक ईश्वरीय न्याय के बिना समाज कायम नहीं रह सकता, क्योंकि व्यक्तियों के कामों की प्रतिक्रियाओं के कारण ही समाज का पतन नहीं होने पाता।

किसी मनुष्य को अधिक सुख मिलता है और किसी को कम, यह जो भिन्नता दिखलाई पड़ती है इसका कारण यह है कि मनुष्य के विचारों और कामों पर ईश्वरीय नियम गणित की तरह अचूक ढंग से काम करता है और परिणाम स्वरूप मनुष्य को अधिक या कम सुख या दुःख मिला करता है। यह निर्दोष ईश्वरीय नियम मनुष्य के जीवन को पूर्ण निश्चय के साथ बनाता और बिगाड़ता है। जब मनुष्य इस नियम को जान लेता है तो उसे विवेक और ईश्वरीय प्रकाश मिलता है। तदनन्तर वह सुखी और शान्त होकर जीवन की पूर्णता को प्राप्त करता है।

दिसम्बर १९

सत्य से ही संसार का काम चल रहा है और 'सत्य' की तुलना कोई कर नहीं सकता। यदि यह विश्वास मनुष्य के मन से निकल जाय तो वह बड़े बखेड़े में पड़ जाय और उसे हर बात के लिये 'समय' का मुँह जोहना पड़े। उसकी हालत उस जहाज की तरह हो जाय जिसमें न पतवार है, न नकशा है और न कुतुबनुमा। अपना चरित्र-निर्माण करने का उसके पास न कोई सहारा रह जाय, न उत्तम काम करने का उसमें उत्साह शेष रहे और न उसे अपने चरित्र-निर्माण का ही कुछ ख्याल रहे। उसे न शान्ति मिले और न कोई उसके लिये बन्दरगाह रूपी आश्रय स्थल ही जहाँ भागकर वह अपनी रक्षा कर सके। यदि हम ईश्वर को एक महान् आत्मा ही समझ लें जिसका मन पूर्ण है, जो कभी भूल नहीं कर सकता, और जिसमें कभी परिवर्तन नहीं होता, तब भी इस विश्वास में कमी नहीं आती कि संसार का काम 'सत्य' के सहारे ही चल रहा है।

दिसम्बर २०

फूल धीरे-धीरे बढ़ता है। इसी प्रकार मन का भी विकास धीरे-धीरे होता है, यद्यपि यह विकास साधारण पुरुषों को दिखलाई नहीं पड़ता, किन्तु सच्चे विचारकों और महात्मा लोगों को इस मानसिक विकास का अनुभव होता है। जिस प्रकार एक वैज्ञानिक को मालूम रहता है कि अमुक कारणों का यह फल होता है उसी प्रकार एक महात्मा को भी मालूम हो जाता है कि हमारा मन यदि इधर-उधर जायगा तो उसका फल हमें यह मिलेगा। वह जानता है कि पौधों की तरह मन का भी विकास होता है और जिस प्रकार अच्छे बीज से उन पौधों में अच्छे फूल खिलते हैं उसी प्रकार उत्कृष्ट मन से मनुष्य में बुद्धि और प्रतिभा का विकास होता है। जिनकी पूर्णता के लिये उसे बहुत समय लगाना पड़ता है।

दिसम्बर २१

जिस प्रकार मनुष्य एक साथ दो देशों में निवास नहीं कर सकता, उसे एक में बसने के लिये दूसरा छोड़ना ही पड़ता है, उसी प्रकार मनुष्य सत्य और पाप के दो देशों में एक साथ नहीं रह सकता। जब मनुष्य अपनी जन्मभूमि छोड़कर विदेश में रहने का निश्चय करता है तो उसे अपने मित्रों, सम्बन्धियों और अन्य प्रेमियों को भी छोड़ना पड़ता है। इसी प्रकार जो 'सत्य' के देश में बसना चाहता है उसे अपनी पुरानी आदतों और अपने पापाचारों को अवश्य छोड़ना पड़ेगा। इस प्रकार के त्याग से मनुष्य और मनुष्य जाति दोनों का भला होता है और संसार उसके रहने के लिये एक मनोहर और रमणीक राजप्रासाद बन जाता है।

दिसम्बर २२

जीवन के सम्पूर्ण कारबार से जब हमें सुख मिले और उनसे हमें शक्ति, ज्ञान, और बुद्धि प्राप्त हो तो समझना चाहिये कि हमारा मन शुद्ध है। जब हममें आह्लाद हो, प्रसन्नता हो, विश्वास हो, साहस हो, प्रेम हो, उदारता हो, त्याग हो, और श्रद्धा हो तब समझना चाहिये कि हमारे विचार शुद्ध हैं। शुद्ध मन और शुद्ध विचारों से मनुष्य का चरित्र दृढ़ होता है, उसका जीवन ऊँचा और उपयोगी होता है और संसार में गौरव प्राप्त करने के लिये उसे व्यक्तिगत सफलताएँ भी मिल जाती हैं। शुद्ध विचार हो जाने पर मनुष्य किसी उत्तम उद्देश्य के लिये परिश्रम और दिलचस्पी के साथ काम करता है और जब यह सच्चा, सुखी और दृढ़ता से काम करनेवाला व्यक्ति पहाड़ की चोटी पर धीरे-धीरे काम करता हुआ पहुँच जाता है तो उसके उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है।

दिसम्बर २३

दूसरों को कष्ट देने से हम ईश्वर से दूर होते हैं किन्तु सहन करने से हम ईश्वर के समीप आते हैं। सहने से मनुष्य दयालु होता है। वह दूसरों के कष्ट का भी अनुभव करता है और उनके साथ दयापूर्ण बर्ताव करता है। एक क्रूर काम करके मनुष्य सोचता है कि उसका दुष्परिणाम वहीं समाप्त हो गया किन्तु उसको मालूम नहीं कि उसका दुष्परिणाम वहीं से उसके लिये आरम्भ हुआ। इस एक क्रूर काम के लिए उसको न मालूम कितनी वेदनाएँ सहनी पड़ती हैं जिनसे उसको महान् कष्ट होता है। प्रत्येक अनुचित विचार और प्रत्येक अनुचित काम के लिये हमें मानसिक या शारीरिक किसी न किसी प्रकार का कष्ट भोगना ही पड़ता है जिसकी तीव्रता या न्यूनता प्रारम्भिक विचार या काम के अनुसार होती है।

दिसम्बर २४

प्रतिदिन छोटे-छोटे काम करते रहने से ही हमें उत्तरोत्तर बल मिलता है किन्तु उन्हीं को सप्ताह में एक बार करते रहने से दुर्बलता आने लगती है। छोटे-छोटे कामों से मनुष्य का सम्पूर्ण चरित्र बनता है। चरित्र की दुर्बलता पाप की तरह दुखद होती है और जब तक चरित्र में कुछ बल नहीं मिल आता तब तक हमें सुख नहीं मिल सकता। छोटे-छोटे कामों की ओर ध्यान देने और उनको सचाई के साथ करने से दुर्बल मनुष्य भी सबल हो सकता है और उनकी ओर उदासीन रहने से सबल भी निर्बल हो सकता है। उदासीन रहने से उसकी बुद्धि और शक्ति का ह्रास हो जाता है।

दिसम्बर २५

वर्ष समाप्त हो गया और अब वह वापस नहीं आने का। उसको बिल्कुल भूल जाओ किन्तु उसमें तुमको जो दिव्य उपदेश मिले हैं उनका खूब मनन करो और उनको स्मरण रक्खो। उनसे शक्ति प्राप्त करो और उन्हीं को बुनियादी पत्थर बनाकर अपने जीवन को आगामी वर्षों में और भी अधिक उत्तम, पवित्र और पूर्ण बनाओ। इस गुजरते हुये वर्ष के साथ घृणा, क्रोध, द्वेष और कसक को नष्ट कर दो और अपने हृदय से बदला लेने की भावनाओं और ईर्ष्या को बिल्कुल निकाल दो। तुम्हारी आवाज यह हो कि हम संसार में शान्ति स्थापित करेंगे और लोगों के साथ हमेशा सद्भावना रक्खेंगे। ऐसी ही आवाज आज के दिन संसार के करोड़ों स्त्री और पुरुषों के मुख से निकले और तुम तो उसे प्रायः निकालते रहो। इस आवाज को अपने हृदय में स्थान दो और उसका अभ्यास करो। दूसरों से शत्रुता करके उनसे मिलने वाली शान्ति को नष्ट न करो।

दिसम्बर २६

ऐसा मत सोचो कि आपदाओं और चिन्ताओं से तुम्हारी हानि होगी। ऐसी धारणा रख कर तुम स्वयं उनको हानिकारक बना लोगे। ऐसा सोचो कि वे हमारे लिये अत्यन्त लाभदायक होंगी। तुम उनका आना किसी प्रकार भी रोक नहीं सकते। जब वे आ जायँ तो भागो मत, डटकर उनका मुकाबिला करो। मुकाबिला करते समय चिन्ता की एक रेखा भी अपने चेहरे पर न लाओ। उनकी ताकत को जांचो, उनके विस्तार को देखो, उनको अच्छी तरह समझो और फिर उन पर हमला करके उनको अपनी मुट्ठी में कर लो। इस प्रकार तुम्हारी ताकत और सूझ बूझ बढ़ेगी। इसी प्रकार तुम सुख के उन दरवाजों में प्रवेश करोगे जो दूर से दिखलाई नहीं पड़ते।

दिसम्बर २७

मनुष्य अपनी चिन्ताओं को'अपने कमजोर विचार तथा स्वार्थपूर्ण इच्छाओं से और भी अधिक बढ़ा लेता है। यदि तुम्हारी परिस्थितियाँ तुम्हारे लिये भयानक हो गई हैं तो भी तुम्हें प्रसन्न होना चाहिये, क्योंकि उनसे तुम्हें शक्ति मिलेगी। तुम्हारी किसी कमजोरी के कारण वे भयानक हैं किन्तु यदि तुम अपनी वह कमजोरी दूर कर दो तो वे तुम्हारे अनुकूल हो जायँगी। भयानक परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाने से तुम्हें प्रसन्न होना चाहिये, क्योंकि तुमको मजबूत और बुद्धिमान बनाने का एक सुअवसर प्राप्त हुआ है। बुद्धि के सामने कोई भी परिस्थिति भयानक नहीं हो सकती और प्रेम के सामने कोई दुख नहीं आ सकता। अपनी भयानक परिस्थितियों पर दुखी होना छोड़ दो और अपने उन पड़ोसियों पर एक दृष्टि डालो जो विकट से विकट परिस्थिति आने पर भी प्रसन्न बने रहते हैं।

दिसम्बर २८

कुछ ऐसे छोटे-छोटे विषय होते हैं जो देखने में निर्दोष जान पड़ते हैं और इसीलिये मनुष्य उनमें फँसे रहते हैं, किन्तु वास्तव में कोई भी विषय निर्दोष नहीं होता। स्त्री-पुरुषों को नहीं मालूम कि इन तुच्छ विषयों के लगातार सेवन करने से उनकी कितनी बड़ी हानि हो रही है। मनुष्य के भीतर जो दिव्य भाव हैं यदि उन्हें बढ़ा कर दृढ़ करना है तो उसे अपनी पशुता को नष्ट करना होगा। विषय चाहे जितने निर्दोष और मधुर जान पड़ें, किन्तु उनमें फँसने से मनुष्य अपने 'सत्य' और सुख को खो बैठता है। जैसे-जैसे तुम विषयों के फंदे में पड़ कर उनको बढ़ाओगे वैसे-वैसे और भी अधिक मजबूत होकर वे तुम्हें तंग करेंगे और तुम्हारे मन पर अधिकार जमा लेंगे। वास्तव में तुम्हारे मन को विषयों से विरक्त होकर ईश्वर की ओर लगना चाहिए।

दिसम्बर २९

लोग तुम्हारी बुराई करें या तुम्हारे साथ कोई दुर्व्यवहार करें तो बुरा मत मानो। घृणा का उत्तर घृणा से न दो। यदि कोई तुमसे घृणा करता है तो तुम्हें यह समझना चाहिये कि उसके साथ हमारे व्यवहार में जाने या बेजाने कोई त्रुटि हो गई है या उसने हमारे मतलब को समझने में भूल की है जो प्रेम से मिलकर और स्थिति समझकर दूर की जा सकती है। किन्तु हर हालत में उससे संबंध तोड़ लेने की अपेक्षा उसके कल्याण के लिये ईश्वर से प्रार्थना करना ही उत्तम होगा। घृणा बहुत ही तुच्छ, संकीर्ण और दुखद होती है। प्रेम बहुत ही उच्च, विशाल सुखद होता है।

दिसम्बर ३०

'स्वार्थ से दुःख होता है और निःस्वार्थ से सुख'—इस सिद्धान्त से हम भलीभांति परिचित हैं। इस से हमारा ही नहीं, प्रत्युत संसार का भी भला होता है। यदि हम अपने ही भले के लिये इसे चरितार्थ करें तो यह हमारे लिये बड़ी लज्जा की बात होगी। हमारा कर्तव्य है कि हम निःस्वार्थ भाव से काम करें ताकि हमारे सम्पर्क में आने वाले लोग सुखी हों और उनके जीवन में सचाई आवे। सब मनुष्यों में ईश्वर का अंश है। इसलिये वे सब समान हैं और एक का सुख दूसरे का सुख है। इस को जान कर सभी के मार्ग में हम फूल बिखेरें, कांटे नहीं। शत्रुओं का हम विशेष ध्यान रक्खें और उनके मार्ग में निःस्वार्थ प्रेम के फूल विशेष रूप से बरसावें ताकि जब फूलों पर वे चलें तो उनके पैरों के दबाव से पवित्रता की सुगन्ध निकल कर जगत को आनन्द से भर दें।

दिसम्बर ३१

उसका जीवन धन्य है जिसने अपने अहंभाव को नष्ट कर दिया है। ऐसा करके उसने आसमान की बादशाहत में स्थान प्राप्त कर लिया है और वह ईश्वर की गोद में सुख से सो रहा है।

वह अत्यन्त शान्त और सुखी है जिसने घृणा, इन्द्रिय भोग और पतन की ओर ले जाने वाली वासनाओं से हृदय को मुक्त कर लिया है। जिसमें किंचित्मात्र कटुता या निजी स्वार्थ नहीं है, जो संसार को सहानुभूति और प्रेम की दृष्टि से देखता है, जिसकी निरन्तर यही आकांक्षा रहती है कि संसार के सब प्राणियों को शान्ति मिले, और जिसमें अपने और पराये का भेद-भाव नहीं है वह सुख, शान्ति और पूर्ण समृद्धि की उस सीमा तक पहुँच चुका है जहां से उसे कोई अलग नहीं कर सकता।

एलेन सीरीज की कुछ उत्कृष्ट पुस्तकें

१. **विचारों का प्रभाव**—यह पुस्तक जेम्स एलेन लिखित As You Thinketh का अनुवाद है। उसमें बताया है कि मनुष्य के विचारों में कितनी महान् शक्ति है; उसका कितना प्रभाव हमारे कार्यों पर पड़ता है, एवं उसमें कितना चमत्कार है। मूल्य ॥)

२. **मनुष्य ही अपने भाग्य का निर्माता है**—यह पुस्तक जेम्स एलेन के Man is the Mastetr of His Mind, Body and Circumstances का अनुवाद है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार हम अपने विचारों और अध्यवसाय से अपने भाग्य को बना सकते हैं। मूल्य ॥=)

३. **गौरवशाली जीवन**—यह जेम्स एलेन लिखित Life Triumphant का अनुवाद है। इसमें बताया गया है कि मनुष्य के विचारों में कितनी महान् शक्ति है; उसका कितना प्रभाव हमारे कार्यों पर पड़ता है, एवं उसमें कितना चमत्कार है। मूल्य ।॥)

४. **नर से नारायण**—यदि हम संसार से प्रेम करें, हमेशा सच्चाई के मार्ग पर चलें और मन तथा हृदय को अपने वश में रखें तो यह मानवी दुख दूर किया जा सकता है। इस पुस्तक में ऐसे साधन बतलाये गये हैं जिनके अनुसार चलकर मनुष्य जीवन को सुखी और शान्त बना सकता है। ले० जेम्स एलेन। मूल्य १) मात्र।

५. **मन की अपार शक्ति**—यह पुस्तक श्रीमती लिली एलेन लिखित Might of the mind का अनुवाद है। इस सुन्दर

पुस्तक में बताया गया है कि मनुष्य के भीतर वह अपार शक्ति है जिसको जान लेने पर वह जैसा चाहे वैसा बन सकता है। मू० ।॥=)

६. भाग्य पर विजय—इस पुस्तक में पुरुषार्थ का महत्व दिखलाया गया है। पुरुषार्थी पुरुष चाहे तो भाग्य को भी बदल सकता है। मूल लेखक जेम्स एलेन। मूल्य १)

७. हमारे मानसिक शिशु—इस पुस्तक में भय, अहंकार, काम, क्रोध आदि विकारों से छूटने के सुलभ मार्ग बताये गये हैं जिनके अनुसार चल कर मनुष्य अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं। मूल लेखिका लिली एलेन। मूल्य ।।=)

८. विजय के आठ स्तम्भ—संसार में अनेक पुरुषों को सफलता नहीं मिलती। उनको मालूम नहीं कि सफलता किस प्रकार प्राप्त करनी चाहिये। इस पुस्तक में जेम्स एलेन ने बड़ी सरलता से आठ बातों का वर्णन किया है जिनको प्राप्त कर लेने से मनुष्य को सफलता ही सफलता मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति के पास इस पुस्तक की एक प्रति होनी चाहिये। अनुवादक प्रिन्सिपल केदारनाथ गुप्त, एम० ए०। मूल्य १॥)

मैनेजर—छात्रहितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग

सचित्र, शिक्षाप्रद, जीवन को ऊँचा उठानेवाली पुस्तकें मूल्य ।=)

१ श्रीकृष्ण
२ महात्मा बुद्ध
३ रानाडे
४ अकबर
५ महाराणा प्रताप
६ शिवाजी
७ स्वामी दयानन्द
८ लो० तिलक
९ जे० एन० ताता
१० विद्यासागर
११ स्वामी विवेकानन्द
१२ गुरु गोविन्द सिंह
१३ वीर दुर्गादास
१४ स्वामी रामतीर्थ
१५ सम्राट अशोक
१६ महाराज पृथ्वीराज
१७ रामकृष्ण परमहंस
१८ महात्मा टाल्स्टाय
१९ रणजीत सिंह
- महात्मा गोखले
२१ स्वामी श्रद्धानन्द
२२ नेपोलियन
२३ डा० राजेन्द्र प्रसाद
२४ सी० आर० दास
२५ गुरु नानक
२६ महाराणा साँगा
२७ मोतीलाल नेहरू
२८ जवाहरलाल नेहरू
२९ श्रीमतीकमलानेहरू
३० मीरा बाई
३१ इब्राहिम लिंकन
३२ अहिल्या बाई

३३ मुसोलिनी
३४ हिटलर
३५ सुभाषचन्द्र बोस
३६ राजा राममोहनराय
३७ लाला लाजपतराय
३८ महात्मा गांधी
३९ महामना मालवीयजी
४० जगदीशचन्द्र बोस
४१ महारानी लक्ष्मीबाई
४२ महात्मा मेजिनी
४३ महात्मा लेनिन
४४ महाराज छत्रसाल
४५ अब्दुल गफ्फारखां
४६ मुस्तफा कमालपाशा
४७ अबुल क० आजाद
४८ स्टालिन
४९ वीर सावरकर
५० महात्मा ईसा
५१ वीर हम्मीरदेव
५२ डी० वेलरा
५३ गैरीबाल्डी
५४ स्वामी शङ्कराचार्य
५५ सी. एफ. एन्ड्रूज
५६ गणेशशङ्कर वि०
५७ डा० सनयातसेन
५८ स० गुरु रामदास
५९ महा० संयोगिता
६० दादा भाई नौरोजी
६१ सरोजनी नायडू
६२ वीर बादल
६३ पट्टाभि सीतारमैया
६४ देवी जोन

६५ प्रिन्स बिस्मार्क
६६ कार्ल मार्क्स
६७ कस्तूरबा
६८ रवीन्द्रनाथ ठा०
६९ सरदार पटेल
७० संत ज्ञानेश्वर
७१ जयप्रकाशनारायण
७२ राजगोपालाचार्य
७३ चंद्रशेखर आजाद
७४ सरदार भगतसिंह
७५ बन्दा बैरागी
७६ एस० राधाकृष्णन्
७७ राजर्षि टंडन जी
७८ गोविन्दवल्लभ पंत
७९ महारानीदुर्गावती
८० महर्षि रमण
८१ गोस्वामी तुलसीदास
८२ योगी अरविन्द
८३ आचार्य कृपलानी
८४ विजयलक्ष्मीपंडित
८५ कुँअर सिंह
८६ श्रीमती एनीबेसेन्ट
८७ विनोबा भावे
८८ शेख अब्दुल्ला
८९ महात्मा हंसराज
९० सर सी० वी० रमन
९१ खुदीराम बोस
९२ सन्त तुकाराम
९३ महादेव देसाई
९४ सन्त कबीर
९५ श्यामाप्रसाद मुकर्जी
९६ भारतेन्दु हरिश्चन्द